मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 61 | अंक : 01 | जुलाई, 2020 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

EDUCATION NEWS GROUP
EDU. NEWS GROUP
EGURUKULRAJASTHAN
एजुकेशन न्यूज ग्रुप

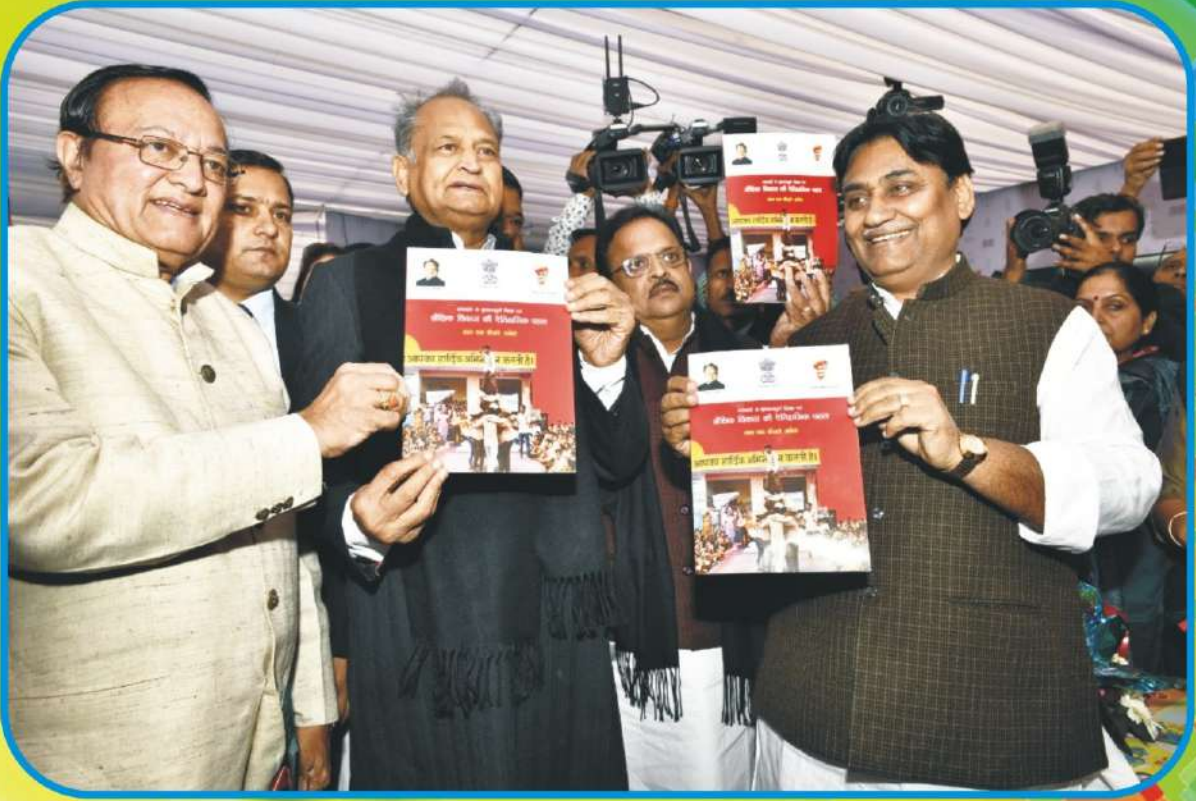

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

आत्मविश्वास से फैले शिक्षा का उजियारा

किसी देश और समाज की शिक्षा पद्धति ही उसके भविष्य की दिशा तय करती है। शिक्षा व्यक्ति को मानवता का पाठ पढ़ाती है। पर यह कोरोना का ऐसा दौर है जब विद्यालयों में लॉकडाउन के कारण शिक्षण कार्य नहीं हो रहा है। हमने प्रयास किया है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के जरिए शिक्षण को बहुत हद तक नियमित रखा जाए। शिक्षा और शिक्षण से शिक्षक और विद्यार्थियों का इस दौर में भी जुड़ाव निरंतर बना रहे। पर यह समय सतर्क रहने का है।

विद्यालय भले ही अभी नहीं खुले हैं परन्तु शैक्षणिक सत्र 2020-21 की औपचारिक शुरूआत हो गयी है। यह सही है, कोविड-19 के चलते शिक्षण व्यवस्था में व्यवधान आया है परन्तु यह ऐसा नहीं है कि हम इससे घबराकर भविष्य के लिए सोचना ही छोड़ दें। उम्मीद करते हैं कि जल्द इस संकट से हमें निजात मिलेगी और पूर्व की भाँति शिक्षण व्यवस्था फिर से प्रारम्भ होगी पर तब तक शैक्षिक गतिविधियों को हम सतत जारी रखें।

मुझे यह कहते हुए गर्व है कि इस दौर में शिक्षकों, शिक्षा विभाग के कर्मचारियों ने कोरोना योद्धा के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संकट के दौर में जिस तरह से आप सबने अपना योगदान दिया है, उसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। सरकार आप सबके सहयोग के लिए कृतज्ञ है। कोरोना से बचाव के लिए राजस्थान ने देशभर में अग्रणी भूमिका निभाई है। उम्मीद करते हैं कि सभी के सहयोग से हम जल्द ही इस वैश्विक संकट से उबर जाएंगे। मेरा प्रदेश के शिक्षकों और कार्मिकों से विशेष अनुरोध है कि वे-

1. विद्यालय संचालन, शिक्षण अधिगम (Teaching Learning) के कार्य कोरोना (कोविड 19) महामारी से बचाव के लिए जारी होने वाली एडवाइजरी का पालन वे स्वयं करें तथा विद्यार्थियों से भी पालना सुनिश्चित करवाएं। याद रखिए, इस निर्मम बीमारी में सावधानी ही बचाव है।
2. गुरुजन के प्रति गाँव में विशेष सम्मान, श्रद्धा एवं विश्वास रहता है। अतः वे नागरिकों को समझाइश करें ताकि हर स्तर पर हर व्यक्ति के द्वारा आवश्यक निर्देशों की पालना की जाती रहे।
3. कक्षागत शिक्षण एवं अन्य गतिविधियों के आयोजन में भी शासन द्वारा जारी एडवाइजरी का पालना किया जाए।
4. कोरोना प्रकोप के बीच माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की परीक्षा निर्विघ्न यशपूर्वक सम्पन्न हुई। इसके लिए परीक्षा से जुड़े सभी कार्मिकों, अभिभावकों एवं परीक्षार्थियों को मेरा हार्दिक धन्यवाद। अब इन्तिज़ार रिज़ल्ट्स का रहेगा। परीक्षकों एवं बोर्ड प्रशासन से मेरा अनुरोध है कि अहर्निश कार्य कर इस कार्य को शीघ्रताशीघ्र पूर्ण कर अपने समर्पण एवं प्रतिबद्धता को एक बार पुनः दोहराएं। मेरा अग्रिम आभार।

इन विकट परिस्थितियों में सतर्क रहकर सत्र प्रारम्भ में ''शिक्षण की योजना'' जारी एडवाइजरी के अनुसार बनाएं और सभी अभिभावकों व विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का संचार करें।

नवीन सत्र की हार्दिक शुभकामनाएँ।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"मुझे यह कहते हुए गर्व है कि इस दौर में शिक्षकों, शिक्षा विभाग के कर्मचारियों ने कोरोना योद्धा के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संकट के दौर में जिस तरह से आप सबने अपना योगदान दिया है, उसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। सरकार आप सबके सहयोग के लिए कृतज्ञ है। कोरोना से बचाव के लिए राजस्थान ने देशभर में अग्रणी भूमिका निभाई है। उम्मीद करते हैं कि सभी के सहयोग से हम जल्द ही इस वैश्विक संकट से उबर जाएंगे।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 61 | अंक : 1 | आषाढ़–श्रावण, २०७७ | जुलाई, 2020

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

❉

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

❉

सम्पादक
मुकेश व्यास

❉

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❉

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- आपदा नहीं अवसर 5

आलेख

- शिक्षामंत्री जी से साक्षात्कार 6
  साक्षात्कारकर्ता : **ओम प्रकाश सारस्वत**
- गुरु पूर्णिमा 10
  राजीव अरोड़ा
- अनुकरणीय पहल 11
  डॉ. रणवीर सिंह
- कबीर 12
  डॉ. कृष्णा आचार्य
- प्रभावी शिक्षण 14
  डॉ. रमेश 'मयंक'
- कोरोना–19 के बाद का शैक्षिक परिदृश्य 16
  जयनारायण द्विवेदी
- आपदा को अवसर में बदलें 18
  लोकेश कुमार पालीवाल
- संकल्प से सफलता 19
  भंवर सिंह
- पर्यावरण एवं जल संरक्षण 20
  स्नेहलता शर्मा
- कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय 32
  पृथ्वीराज लेघा
- प्रतिभाशाली बेटियाँ 33
  नूतन बाला कपिला
- गिजुभाई बधेका का दर्शन 34
  चैनाराम सीरवी
- पारिवारिक उत्सवों का हिस्सा बनें वृक्षारोपण 37
  कुलदीप सिंह

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश–परिपत्र 21–31
- बाल शिविरा 42–43
- शाला प्रांगण 44–48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 38–41

- नर्मदे हर
  लेखक : डॉ. राजेश कुमार व्यास
  समीक्षक : **ज्ञानेश उपाध्याय**
- रेत से हेत
  लेखक : सूर्य प्रकाश जीनगर
  समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**
- सयानी मुनिया
  लेखिका : सुधा रानी तैलंग
  समीक्षक : **अनीता सक्सेना**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

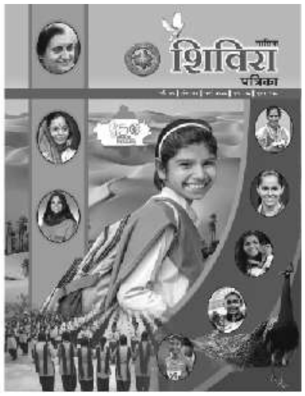

पाठकों की बात

- राजस्थान शिक्षा विभाग का दर्पण, विचारोत्तेजक, अनुभव-भण्डार, माननीय संरक्षक का मार्गदर्शन युक्त शिविरा फरवरी, 2020 अंक आद्योपान्त पढ़ा। फरवरी 20 अंक में विभाग के मुखिया व संरक्षक मान्यवर निदेशक महोदय ने परीक्षा परिणाम उन्नयन की राह दिखाते हुए विज्ञान दिवस पर रूढ़ियाँ, अंधविश्वास परित्याग की अपील की है। जहाँ युग प्रवर्तक स्वामी दयानंद के जीवन पर प्रकाश लखनपाल सिंह ने वहीं सालग राम परिहार ने बालिका शिक्षा की महत्ता पर प्रकाश डाला है। आशा है कि शेखावाटी मिशन-100 राज्य के शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए प्रकाशपुंज बनकर उभरेगा।

मोहन राम विश्नोई, जैसलमेर

- मार्च 2020 का शिविरा अंक भारत की महान महिलाओं के छायाचित्रों से सुसज्जित आकर्षक आवरण पृष्ठ सहित मिला। युवा एवं ऊर्जावान निदेशक महोदय का दिशाकल्प गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता दिखाता, प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय है। इस अंक में गाँधीदर्शन, पर्यावरण संरक्षण एवं परीक्षा तैयारी विषयक पठनीय लेख सम्मिलित करना बेहद अच्छा लगा। डॉ. लढ़ा की डायरी से डायरी लेखन को प्रोत्साहन मिल सकता है। ब्रिग्रेडियर करण सिंह चौहान द्वारा सरल जीवनयापन करना सिखाना अच्छा लगा। बाल शिविरा के अन्तर्गत बालक-बालिकाओं की सृजनात्मक अभिव्यक्तियाँ सराहनीय। शिविरा के इस अंक की समस्त सामग्री पठनीय, महत्त्वपूर्ण एवं संग्रहणीय है। इसके लिए लेखकगण एवं सम्पादक मण्डल को साधुवाद एवं बधाई।

लियाकत अली खाँ, भीमसर, झुंझुनूं

- शिविरा पत्रिका का माह मार्च 2020 का अंक प्राप्त हुआ। शिक्षा विभाग द्वारा बैग फ्री सैटरडे नवाचार अपनाया गया है। भारतीय शिक्षण पद्धति और विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के अनुरूप है। स्वागत योग्य है। प्राचीन समय से हमारे ऋषि-मुनि और वर्तमान में वैज्ञानिक भी इसे स्वीकार कर रहे हैं। वृक्षों में भी पीपल, वट, बेल, अशोक और आंवला (पंचवटी) का स्थान महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक विद्यालय जहाँ पर्याप्त जगह हो, स्थापित करनी चाहिए। अभिभावकों को भी अपने बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाना चाहिए। परीक्षा विद्यार्थियों के ज्ञान की अभिव्यक्ति का प्रदर्शन है। 'निराशा और आशा' लेख स्वावलम्बन और आत्मशक्ति को प्रेरित करता है। व्यक्ति को निराशा में भी आशावान होना चाहिए। अंक के सभी लेख अत्यंत रोचक, पठनीय, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक है।

महेन्द्र कुमार शर्मा, अजमेर

- शिविरा पत्रिका मार्च 2020 का अंक मिला। मेरा शिविरा का यह दूसरा अंक है। शिविरा के अंक समय पर उपलब्ध होने ने मुझे बहुत प्रभावित किया। आवरण पृष्ठ का प्रेरणादायी नारी शक्ति के चित्रों से सुसज्जित होना और पारदर्शी पैकिंग में सुरक्षित शिविरा का यह अंक बहुत अच्छा लगा। दिशाकल्प में माननीय निदेशक महोदय ने शिक्षा जगत की एक विशेषता को उजागर किया है, उन्होंने कहा है कि शिक्षा जगत में बहुत रचनात्मक संभावनाएँ हैं, वास्तव में शिक्षा जगत में पल-पल रचनात्मकता है। गाँधी जी की 150वीं जयंती पर प्रकाशित लेख 'महात्मा गाँधीः एक महान प्रेरक व्यक्तित्व' रुचिपूर्वक पढ़ा। पर्यावरण संरक्षण का लेख 'पर्यावरण में पंचवटी का महत्त्व' बहुत ही ज्ञानवर्धक लगा, पंचवटी में कौन-कौनसे वृक्ष होते हैं और उनकी दिशा व महत्त्व की जानकारी मिली। अनुकरणीय लेख 'आओ गुरुकुल बनाएँ' पढ़ा तो दिल को छू गया। वास्तव में एक शिक्षक का विद्यार्थी से आत्मिक जुड़ाव असंभव को संभव कर देता है। 'हमारे भामाशाह' स्तंभ भामाशाहों को धन्यवाद प्रदान करने और नए भामाशाहों को प्रेरित करने का एक सशक्त साधन लगा। शिक्षा जगत की इस उपयोगी पत्रिका की समस्त टीम को कोटि-कोटि वंदन।

कुलदीप सिंह, भरतपुर

- शिविरा पत्रिका का मार्च 2020 का अंक समय पर उपलब्ध हुआ। इस अंक का मुखावरण पृष्ठ विभिन्न क्षेत्रों में नारी शक्ति का अमूल्य योगदान एवं उपलब्धियों को प्रदर्शित करता हुआ आकर्षक एवं प्रेरणादायक लगा। दिशाकल्प के माध्यम से निदेशक महोदय जी ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अच्छी पहल की है तथा विद्यार्थियों को सफलता के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं। शिविरा में प्रकाशित आलेखों में महात्मा गाँधी : एक महान प्रेरक व्यक्तित्व बेहद प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय लगा। पर्यावरण संरक्षण पर आधारित लेख पंचवटी का महत्त्व वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उचित एवं सार्थक लगा।

महेश आचार्य, नागौर

▼ *चिन्तन*

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्दैवं हि दैयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरूषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः।।

(-सुभा.भा. 86/20)

अर्थात् : उद्योग करने वाले सिंहरूपी पुरुष के पास लक्ष्मी आती है। कायर पुरुष कहते हैं कि भाग्य हम को देगा। हे मनुष्य भाग्य को छोड़, अपनी शक्ति के अनुसार उद्यम कर। प्रयत्न करने पर यदि सिद्धि न मिले तो उसमें तुम्हारा दोष नहीं।

सत्यमेव जयते

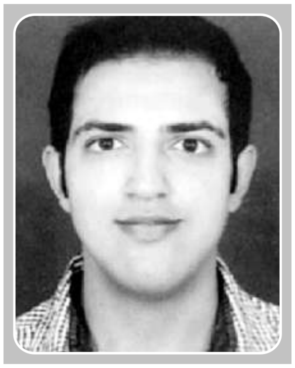

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"आपदा के इस चुनौतीपूर्ण दौर में जीवन-रक्षा के साथ-साथ हमने शिक्षा की निरन्तरता और गुणवत्ता के लिए विशिष्ट प्रयास किए हैं। सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क और सेनिटाइजेशन (एस.एम.एस.) के मंत्र के साथ कल को पीछे छोड़ हम भविष्य को संवारने में लगे हैं।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

आपदा नहीं अवसर

शिविरा के सम्मानित पाठकों, शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और विभाग के समस्त साथियों का नवीन शिक्षा-सत्र 2020-21 के लिए अभिनन्दन! हार्दिक शुभकामनाएँ!!

जैसा कि आप सभी जानते हैं वैश्विक महामारी कोरोना (कोविड-19) ने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से हमारे जीवन को प्रभावित किया है। लॉकडाउन के ही कारण शिविरा के अप्रैल, 2020 और मई, 2020 (मई अंक ही मई-जून संयुक्तांक होता है) के अंक प्रकाशित नहीं हो पाए। नवीन परिस्थितियों में जुलाई, 2020 अंक का प्रकाशन सुखद अनुभूति है। मुझे आशा है शिक्षा विभाग की अपनी इस मासिक पत्रिका के सम्पादकीय **'दिशाकल्प-मेरा पृष्ठ'** के माध्यम से आपके और मेरे मध्य शैक्षिक चिंतन को नया आयाम मिलेगा। हमारे राज्य को सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षा का सिरमौर बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को दृढ़ता के साथ क्रियान्विति में यह पृष्ठ सेतु के रूप में सहायक सिद्ध होगा।

शिक्षा विभाग जो कि अपने विद्यार्थियों के ज्ञान का मूल्यांकन, परीक्षा के आधार पर करता है, वहीं वैश्विक महामारी 'कोविड-19' ने भी हमारी प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की प्रतिबद्धता को कसौटी पर परखने के लिए लगता है सतत मूल्यांकन अभियान चला रखा है। आपदा के इस चुनौतीपूर्ण दौर में जीवन-रक्षा के साथ-साथ हमने शिक्षा की निरन्तरता और गुणवत्ता के लिए विशिष्ट प्रयास किए हैं। सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क और सेनिटाइजेशन (एस.एम.एस.) के मंत्र के साथ कल को पीछे छोड़ हम भविष्य को संवारने में लगे हैं। हमारे शिक्षकों ने विशेष तैयारी कर विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन क्लासेज के साथ न केवल शिक्षा की निरन्तरता का प्रयास किया साथ ही विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और प्रतिभा को व्यापक मंच उपलब्ध करवाया। विभिन्न निबन्ध, चित्र, स्लोगन प्रतियोगिताओं के ऑनलाइन आयोजनों में विद्यार्थियों की उत्साहजनक भागीदारी ने भी इन आयोजनों की सार्थकता सिद्ध की।

कोरोना आपदा की चुनौती को अवसर में बदलने की दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर विभाग का प्रत्येक साथी जीवन-रक्षा के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मंत्र को धरातल पर क्रियान्वित करने हेतु दृढ़ संकल्पित है। विभाग के सभी साथियों से मेरी अपेक्षा है कि वे पूर्ण मनोयोग से अपने कर्तव्य का निर्वहन करें, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विभाग को अपनी क्षमता का शतप्रतिशत योगदान प्रदान करें।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ...

जय हिन्द! जय भारत!!

(सौरभ स्वामी)

घर-घर अलख जगाएंगे, बदलेंगे जमाना

शिक्षामंत्री जी से साक्षात्कार

राजस्थान के माननीय शिक्षामंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा के शैक्षिक प्रबन्धन, चिन्तन, नवाचारी दृष्टि, उदात्त चेतना, शिक्षा के प्रसार हेतु चिन्ता और इस हेतु किए जा रहे प्रयासों की चर्चा प्रदेश में ही नहीं, अपितु संपूर्ण राष्ट्र में हो रही है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा निर्धारित पेरामीटर्स के आधार पर होने वाले राष्ट्रीय मूल्यांकन में देश भर में राजस्थान का द्वितीय स्थान पर होना शिक्षामंत्री महोदय की चिन्ता, चिन्तन एवं संकल्प का परिणाम है। ग्रीष्मावकाश के पश्चात जुलाई में विद्यालय खुलते हैं। वर्तमान वर्ष 2020 शुरू से ही कोरोना (कोविड-19) महामारी से त्रस्त रहा। शिक्षा व्यवस्था भी इसका शिकार हुई जो स्वाभाविक है। कब सब सामान्य होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। त्रासदी के इस दौर में शिक्षा को जो सम्बलन व संरक्षण शिक्षा विभाग के परिवार प्रमुख माननीय शिक्षामंत्री के स्तर से दिया गया, वह बेमिसाल है। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए शिक्षामंत्री जी का विस्तृत साक्षात्कार शिविरा के वरिष्ठ सम्पादक रहे शिक्षाविद् एवं साहित्यकार **श्री ओम प्रकाश सारस्वत** ने लिया। साक्षात्कार में पूर्व शिक्षा संयुक्त निदेशक डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी एवं राज्य सरकार में विशेषाधिकारी शिक्षा डॉ. रणवीरसिंह भी श्री सारस्वत के साथ रहे। शिविरा के 61वें वर्ष के श्रीगणेश अंक में प्रकाशन हेतु लिए गए इस साक्षात्कार को यहाँ अविकल प्रकाशित किया जा रहा है।**-वरिष्ठ सम्पादक)**

शिविरा 1: भौगोलिक दृष्टि से देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान के शिक्षामंत्री के रूप में आप कैसा महसूस करते है?

शिक्षामंत्री : (मुस्कुराते हुए) माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की सरकार में स्कूल शिक्षा विभाग के मंत्री का उत्तरदायित्व पाकर मुझे प्रसन्नता के साथ गर्व की अनुभूति होती है। शिक्षा का कार्य समाज के उत्थान का कार्य है। शिक्षा रूपी दर्पण में समाज का अक्स दिखाई देता है। मेरा मानना है कि जैसा शिक्षा का

स्तर होगा, वैसा ही समाज का स्तर होगा। 21वीं शताब्दी ज्ञान और विज्ञान की अद्भुत शताब्दी है। सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी का विस्मयकारी विकास हुआ है। इस विकास का उपयोग दुनिया की खुशहाली के लिए होने पर ही इसकी सार्थकता है। उत्तम संस्कारों के साथ दी गई शिक्षा से ही यह सम्भव है। प्रान्त के शिक्षामंत्री की हैसियत को भूलकर मैं स्वयं को एक शिक्षक-पुत्र के रूप में देखता हूँ। मेरा शिक्षकों की योग्यता, क्षमता, समर्पण भाव एवं प्रतिबद्धता में गहरा विश्वास है। संसार में अब तक जो भी सकारात्मक कार्य हुए हैं, परिवर्तन आए हैं, उनके दूत शिक्षक ही रहे हैं। मैं शिक्षक की महानता का पक्षधर हूँ। शिक्षकों के साथ काम करते हुए मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा है। मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ।

शिविरा 2: आपने शिक्षक को महान बताकर उनका मान बढ़ाया लेकिन वर्तमान दौर में तो शिक्षक और एक अन्य सरकारी मुलाजिम में लगभग कोई भेद नहीं किया जा रहा। कोरोना महामारी के त्रासदी काल में प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा शिक्षकों को अपनी मर्जी अनुसार कार्यों में झोंका जा रहा है। इस स्थिति के सम्बन्ध में आप क्या कहेंगे?

शिक्षामंत्री : शिक्षक संवेदनशील एवं उदार दृष्टि होता है। सरकार द्वारा उसे जो भी उत्तरदायित्व दिया जाता है, वह उसे पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण से पूरा करता है। विभिन्न प्रकार के चुनाव, दशकीय जनगणना जैसे काम शिक्षक के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकते। जैसा कि आपने कहा, प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा शिक्षकों को यहाँ-वहाँ अपनी मर्जी से लगाए जाने के समाचार मुझे मिले। शिक्षक की गरिमा को ध्यान में रखे बिना प्रशासन द्वारा लगाई गई ऐसी ड्यूटीज़ को मैंने तुरन्त सम्बन्धित जिला कलक्टर से बात करके निरस्त करवाया तथा मुख्य सचिव स्तर से इसमें हस्तक्षेप करवाकर ऐसी ड्यूटी भविष्य में नहीं लगाने के लिए जिला कलक्टरों को पाबन्द करवाया है।

शिविरा 3: मान्यवर आपकी इस पहल की शिक्षा जगत में सर्वत्र प्रशंसा हुई है। पहले भी विभिन्न स्तरों से ऐसे आदेश निकलते रहे हैं लेकिन थोड़े समय पश्चात फिर प्रशासन द्वारा इस प्रकार शिक्षकों को एंगेज किया जाता रहा है। इस बार आपने क्या विशेष किया है?

शिक्षामंत्री : आपकी बात से मैं सहमत हूँ। ऐसा होता रहा है और आगे भी ऐसा होने की सम्भावना से इंकार नहीं कर सकते। मेरी जानकारी में यह आया है कि स्वयं शिक्षक प्रशासनिक अधिकारियों से सम्पर्क कर चुनाव शाखा, आपदा प्रबंधन शाखा, जनगणना प्रकोष्ठ आदि में अपनी ड्यूटी लगवाते हैं। ऐसी तथाकथित प्रतिनियुक्ति के लिए वे सिफारिश करवाते हैं। यदि शिक्षक पूर्ण मनोबल से यह ठान लें कि उसे स्कूल में ही रहना है, बच्चों के बीच में रहना है तो उसे कोई कहीं नहीं लगा सकता। हाँ, चुनाव, जनगणना, आपदा प्रबंधन जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यों को तो उन्हें करना ही है जिनके लिए शिथिलन दिया हुआ है। शिक्षक को अपनी मान प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए ऐसी प्रवृत्ति से बचना चाहिए।

शिविरा 4: एन.सी.ई.आर.टी. का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें लागू करने का आपका निर्णय बहुत दूर तक प्रभाव डालने वाला है। निसंदेह प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले हमारे होनहारों को इनसे

शुरू से ही मदद मिलेगी लेकिन पुस्तकों, वर्क बुक्स, अभ्यास पुस्तिकाओं एवं भिन्न-भिन्न प्रकार की स्टेशनरी के बोझ से दबे हमारे बच्चे को इस भार से राहत दिलाने के लिए आप क्या कर रहे है?

शिक्षामंत्री : मुझे प्रसन्नता है कि हमारे द्वारा एनसीईआरटी. पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें लागू करने के हमारे निर्णय की व्यापक सराहना हुई है। मैं जब शिक्षामंत्री नहीं था, तब भी रोज़-रोज़ पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें बदलने की बातें सुनकर हैरान हो जाता था। हम जब पढ़ते थे, तब एक-एक किताब से चार-पाँच वर्ष विद्यार्थी पढ़ लेते थे। किताब ज्ञान की प्रतीक है और ज्ञान कभी पुराना नहीं पड़ता। यह भी सत्य है कि हम भले ही कोई सी किताब पढ़ लें, आखिर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए तो एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों की ही जरूरत पड़ती थी। ऐसे में हमारा यह दूरगामी निर्णय प्रदेश के शिक्षा जगत में मील का पत्थर साबित होगा। रही बात बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने की, इसके लिए हम शुरू दिन से चिन्तित हैं।

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा कि राजस्थान देश का पहला प्रदेश है जहाँ बस्ते के बोझ को कम करने की पहल की गई है। नर्सरी से लेकर सैकण्डरी लेवल तक शिक्षा में सुधार तथा उत्कृष्टता के लिए हमने पीरामल फाउण्डेशन के साथ एमओयू. किया है। झुंझुनूं जिले को देश में पीआइएसए. (प्रोग्राम फॉर इंटरनेशनल स्टुडेंट असेसमेंट) के लिए मॉडल बनाया गया है। झुंझुनूं जिले को इनोवेशन हब फार एक्सीलेंस इन स्कूल एज्यूकेशन के रूप में विकसित करने के लिए हमने मानक निर्धारित कर दिए हैं जिसके तहत बस्ते का वजन होगा।

शिविरा 5 : शिक्षा को आनन्ददायी बनाने के लिए क्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं?

शिक्षामंत्री : शिक्षा को आनन्ददायी बनाने के लिए हमें बस्ते के आकार को कम करना होगा। इसे सामान्यतः बस्ते का बोझ कहा जाता है। बस्ते के बोझ से आशय केवल किताबों के बोझ से ही नहीं है, अपितु स्कूल जाने की तैयारी से लेकर स्कूल जाना, स्कूल में पढ़ाई-लिखाई एवं अन्य विभिन्न कार्यक्रमों का भी बालक के दिमाग में कहीं न कहीं तनाव रहता है। व्यापक रूप में यह सब मिलाकर बस्ते का बोझ है। बस्ता यहाँ शिक्षा का प्रतीक है। इस हेतु सर्वप्रथम तो हमारा ध्यान प्राइमरी लेवल तक वास्तव में बच्चे के कंधे पर लटके बस्ते का भार कम करने की तरफ है। शिक्षा एवं समाज शास्त्रियों तथा बाल चिकित्सकों से विमर्श करके कक्षा एक व दो विद्यार्थियों के बस्ते का भार 900 ग्राम से घटाकर 300-400 ग्राम, कक्षा तीन में 1350 ग्राम से कम कर 500 ग्राम तथा कक्षा पाँच में भी पहले के वजन 1250 ग्राम को घटाकर 500 ग्राम निर्धारित किया गया है। इस प्रकार अधिकतम वजन 500 ग्राम ही रह जाएगा।

बस्ते का बोझ कम करने के साथ ही मानसिक बोझ कम करने के लिए हमने अभिनव पहल की है। दुनिया भर के शिक्षाशास्त्री एक मत से यह मानते हैं कि शिक्षा आनंददायी हो। कक्षाकक्षों में एक ढर्रे से शिक्षण-अधिगम, बस्ता, पुस्तकें, उत्तर पुस्तिकाएँ, गृहकार्य, कक्षा कार्य ये सब मशीनवत होने वाले कार्य है। बालक एक साँचे में ढले जैसा हो गया है। आनन्द एवं मौज मस्ती का कहीं नामोनिशान नहीं है। अभिनव पहल के अन्तर्गत सत्र 2020-21 से सप्ताह में एक दिन शनिवार का दिन नो बैग डे है। दिन भर आनन्ददायी गतिविधियों का आयोजन होगा जिससे उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास होगा। बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होने पर ही उत्तम गुणवत्तापूर्ण आनन्ददायी शिक्षा सुनिश्चित होगी। हमारे मुख्यमंत्री जी को भी सदैव यही चिन्ता रहती है। प्रदेश की गैर सरकारी प्राइवेट स्कूलों ने भी बस्ते के बोझ को कम करने के सरकार के निर्णय से सहमति जताई है। माहेश्वरी ग्रुप ऑफ स्कूल्स ने बस्ते के बोझ को कम करने के लिए सरकार के निर्णय के मुताबिक पुस्तकें शुरू की हैं। मेरी अन्य प्राइवेट स्कूलों से भी ऐसी अपेक्षा है।

शिविरा 6 : शिक्षा का प्रसाद विद्यालय रूपी मन्दिरों में मिलता है। बालक इस मन्दिर के भगवान तथा शिक्षक पुजारी माने गए हैं। इस प्रकार विद्यालयों की केन्द्रीय भूमिका शिक्षा के प्रसार हेतु मानी गई है। विद्यालय खोलने एवं विद्यमान विद्यालयों को क्रमोन्नत करने के सम्बन्ध में आपकी क्या नीति है?

शिक्षामंत्री : हमारा यह संकल्प है कि प्रदेश के हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। इसके लिए विद्यालय आवश्यक है। हमने पिछले सत्र (2019-20) में 380 माध्यमिक एवं 287 उच्च माध्यमिक विद्यालय क्रमोन्नत किए हैं। विद्यालयों में भी प्राइमरी एवं अपर प्राइमरी स्कूल नींव की तरह होते हैं। दुर्भाग्य से विगत वर्षों में स्कूलों के एकीकरण के नाम पर बहुत सारे ऐसे विद्यालयों को बंद कर दिया गया। ऐसे विद्यालयों के भवन, मैदान, सामग्री आदि सब बिना उपयोग में आए निरर्थक पड़ी थी। छोटे-छोटे बच्चे स्कूल के अभाव में शिक्षा के प्रकाश से वंचित रह रहे थे। हमने उनकी पीड़ा को पहचाना। एक कल्याणकारी सरकार को ऐसा करना ही चाहिए। आँकड़ों में बात करें तो अब तक हम प्रारंभिक शिक्षा के 980 बंद कर दिए गए विद्यालयों को पुनः खोल चुके हैं। विद्यालय प्रसार हेतु हमारे कदम कभी नहीं रुकेंगे, यह विश्वास मैं दिलाता हूँ।

शिविरा 7 : अंग्रेजी माध्यम वाले राजकीय महात्मा गाँधी विद्यालयों की बड़ी चर्चा इन दिनों आमजन में है। इन विद्यालयों पर कृपया प्रकाश डालें।

शिक्षामंत्री : इसे स्वीकार करने में किसी को भी आपत्ति नहीं होगी कि अंग्रेजी भाषा विषय में सर्वाधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है। हमारे बच्चे अक्सर अंग्रेजी भाषा में कमजोर होने के कारण उचित स्थान प्राप्त नहीं कर सकते। धनी एवं सामर्थ्यवान माता-पिताओं के बच्चे तो प्राइवेट इंग्लिश मीडियम वाले विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं लेकिन गरीब का बच्चा कहाँ जाए। प्रतिभा महलों की मोहताज नहीं, वह झोंपड़ी में भी जन्म ले सकती है। रिक्शा चालकों के बच्चे भी आइ.ए.एस. बनते हैं। इसी सोच ने हमें सरकारी क्षेत्र में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोलने के लिए प्रेरित किया। प्रदेश में 301 शैक्षिक ब्लॉक हैं और 33 जिला मुख्यालयों यानी कुल 334 के मुकाबले राज्य में 336 अंग्रेजी माध्यम विद्यालय स्वीकृत किए गए हैं।

शिविरा 8 : प्रदेश में प्रत्येक जिला मुख्यालय एवं शैक्षिक ब्लॉक में एक-एक अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के अनुसार टारगेट 33+301=334 बनता है। आपके

अनुसार 336 ऐसे विद्यालय स्थापित किए गए है। यह कैसे हुआ?

शिक्षामंत्री : गणित की जोड़ बाकी के हिसाब से आपका यह कहना ठीक है। कुल 334 विद्यालय ही होने चाहिए। आपको यह जानकार हर्ष होगा कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोलने के लिए जगह-जगह से माँग एवं प्रस्ताव मिल रहे हैं। प्रजातंत्र में जनता ही सर्वोपरि होती है। जयपुर जिले के कोटपुतली तथा सांभरलेक ब्लॉक में महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय खोल दिए जाने के उपरांत भी जनता की माँग बनी रही। जनादेश को शिरोधार्य कर इन दो ब्लॉक में एक-एक अतिरिक्त स्कूल और स्वीकृत की गई। इस कारण 334 के मुकाबले 336 विद्यालय स्थापित किए गए। जरा और स्पष्ट करूँ, प्रदेश के 134 शैक्षिक ब्लॉक में स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल हैं। अंग्रेजी माध्यम के ये विद्यालय सी.बी.एस.ई. से सम्बद्धता एवं मान्यता प्राप्त हैं। वर्ष 2019-20 प्रथम चरण के 33 जिला मुख्यालयों पर महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय खोले गए। कुल शैक्षिक ब्लॉक 301 में से 134 में तो स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल थे। शेष बचे 167 ब्लॉक में वर्तमान सत्र 2020-21 से इन विद्यालयों को शुरू किया जा रहा है। इनके अलावा फतेहपुर, सीकर के राजकीय सुभाष बालिका माध्यमिक विद्यालयों को भी महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय की तर्ज पर संचालित किया जाएगा।

शिविरा 9 : सरकार द्वारा छात्र-छात्राओं को पढ़ाई हेतु प्रेरित करने के लिए विभिन्न प्रकार के लिए प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। इन प्रोत्साहन योजनाओं का कितना व कैसा असर रहा है?

शिक्षामंत्री : जिस प्रकार एक संरक्षक अथवा माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई हेतु चिन्तित रहते हुए उनके लिए हर सम्भव साधन सुविधाएँ मुहैया करवाते हैं, उन्हें प्रेरित करते हैं, उसी प्रकार राज्य सरकार सम्पूर्ण प्रदेश में पढ़ रहे बच्चों की सुविधा एवं सहायता हेतु योजनाएँ संचालित करती रहती है। विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों के अलावा निःशुल्क साइकिल वितरण, मेधावी छात्र-छात्राओं के अलावा निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, इंस्पायर अवार्ड आदि योजनाएँ बहुत फलदायी सिद्ध हुई हैं। हमने वर्ष 2019-20 में साढ़े तीन लाख बालिकाओं को साइकिल प्रदान की है। लगभग 28,000 लेपटॉप वितरण हेतु कार्यवाही चल रही है। करोड़ों पुस्तकें निःशुल्क वितरित की गई हैं। पिछले सत्र में निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों के पेटे सरकार ने 1,31,19,38,156 रुपये व्यय किए (माध्यमिक 59,73,51,080 + प्रारंभिक 71,45,87,076) इंस्पायर अवार्ड योजना से हमारे विद्यार्थी शुरू से ही लाभान्वित होते रहे हैं। यह भारत सरकार की योजना है जिसमें विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच का विकास करने के लिए राशि प्रदान की जाती है। वर्ष 2019-20 में 25,544 विद्यार्थियों का इस योजना के अन्तर्गत नामांकन हुआ। इंस्पायर पुरस्कार प्राप्ति में झुंझुनूं जिले ने 665 विद्यार्थियों के चयन के साथ देश में दूसरा तथा राज्य में पहला स्थान प्राप्त किया। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि सम्पूर्ण देश में इंस्पायर नामांकन में राजस्थान ने 7वाँ स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि के लिए मैं मेरी 'टीम एज्यूकेशन' को बधाई व धन्यवाद देता हूँ। हम इन छात्र हितैषी योजनाओं के बारे में समय-समय पर समाचार पत्रों के माध्यम से जानकारी प्रकाशित करते रहते हैं ताकि आम अभिभावक को इनका पता रहे। हम अमावस्या के दिन पीटीएम (अभिभावक अध्यापक बैठक) करते हैं। इनमें भी ऐसी योजनाओं के बारे में अभिभावकों को बताया जाता है। छात्रों के हित में राज्य सरकार कभी धन की कमी नहीं आने देगी, मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ। वे खूब पढ़ें, आगे बढ़ें और राजस्थान का नाम रोशन करें।

शिविरा 10 : स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल एवं महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की शिक्षण प्रणाली किस प्रकार निर्धारित की गई है?

शिक्षामंत्री : जैसा कि मैंने पहले बताया स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल सीबीएसई से मान्यता प्राप्त है। ये विद्यालय कक्षा 6 से 12 तक के हैं। इनमें प्राइमरी क्लासेज शुरू की जा रही है जिससे ये कक्षा एक से बारहवीं तक के विद्यालय बन जाएँगे। महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्याल शुरूआत में कक्षा 01 से 8 तक इंग्लिश मीडियम से संचालित किए जाते हैं जहाँ आगामी वर्षों में क्रमशः 9वीं, 10वीं, 11वीं, 12वीं कक्षा में आगामी वर्षों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाया जाने लगेगा। कक्षा एक से आठ तक दो-दो सैक्शन रखे गए हैं। कक्षा 01 से 5 तक प्रति सैक्शन 30 एवं कक्षा 6 से 8 तक प्रति सैक्शन 35 बच्चे भर्ती किए जा सकते हैं। इस प्रकार कम बच्चे होने के कारण एक-एक बच्चे पर ध्यान दिया जा सकता है। इस सत्र के लिए स्वीकृत 167 विद्यालयों के वाक-इन-इंटरव्यू विधि से स्टाफ का चयन 15 से 19 जून के मध्य किया जा चुका है। कुल मिलाकर सत्रारम्भ के साथ ही इनमें विधिवत शिक्षण अधिगम शुरू हो जाएगा।

शिविरा 11 : शिक्षा विभाग प्रदेश का सबसे बड़ा विभाग है। माध्यमिक एवं प्रारम्भिक दोनों में मिलाकर साढ़े पाँच लाख (वास्तविक संख्या 545637 आधार तिथि 01 जून 2020) कार्मिक काम कर रहे हैं। इसमें पद भरते, खाली होते रहते हैं। नियुक्ति एवं पदस्थापन की क्या व्यवस्था हुई है?

शिक्षामंत्री : 'हरि अनन्त कथा अनन्ता' वाली बात हमारे विभाग पर लागू होती है। पद सृजन, नियुक्ति, पदस्थापन, प्रमोशन, रिटायरमेंट का सिलसिला चलता रहता है। हमारा हर स्तर पर यह प्रयास रहता है कि सभी पद भरे रहें। सीधी भर्ती एवं पदोन्नति 2018 से मई 2020 तक की बात करें तो 7455 पद सीधी भर्ती से तथा 11323 पद पदोन्नति से भरे गए हैं। तृतीण श्रेणी के लगभग 33,000 पद भरने के लिए रीट परीक्षा का माह सितम्बर 2020 में आयोजन करवाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। इसी प्रकार शीघ्र ही व्याख्याता पदों पर सीधी भर्ती की कार्यवाही प्रारम्भ की जाएगी।

शिविरा 12 : खेलकूद एवं व्यायाम को स्वस्थ शरीर की कुँजी कहते हैं। वर्षों पहले विद्यालयों के प्ले ग्राउण्ड्स में रहने वाली रौनक अब कम दिखाई देती है। खेलकूद के क्षेत्र में आपके द्वारा क्या किया जा रहा है?

शिक्षामंत्री : निःसन्देह खेलकूद, योगा एवं व्यायाम उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। आपकी बात से मैं सहमत हूँ। हमारे जमाने में फुटबॉल, कबड्डी, खो-खो जैसे खेलों का बोलबाला था। अब नए-नए खेल आ गए हैं। टीवी एवं मोबाइल के कारण बच्चे उनमें ज्यादा

रुचि लेने लगे हैं। परम्परागत खेलों की धूम निराली होती थी। ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी सायं को विद्यालय के खेल मैदान चहकते हैं। परम्परागत खेलों को बचाए रखकर उनका विकास करने के लिए हम कोई कार्ययोजना बनाकर उसे लागू करेंगे। एस.जी.एफ.आई. (स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया) द्वारा आयोजित 64वीं राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में हमारे विद्यार्थी खिलाड़ियों ने 37 स्वर्ण, 59 रजत, 60 कांस्य पद जीते हैं। मैं इन विजेता खिलाड़ियों को आपके माध्यम से पुनः बधाई देते हुए निरंतर अभ्यास करने और खेलों में अपना सर्वश्रेष्ठ देने की अपील करता हूँ। बीकानेर स्थित सादुल स्पोर्ट्स स्कूल का उच्च स्तरीय निरीक्षण करवाकर इसे रिजल्ट ओरिएंटेड बनाया जाएगा। अगली बार मैं जब भी बीकानेर जाऊँगा। शारीरिक शिक्षकों से मैं चाहूँगा कि वे अपने भीतर में झाँककर अपनी ताकत को पहचाने तथा खेलकूद का विकास करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रमाणित करें। माध्यमिक शिक्षा सैटअप में लगभग 2 करोड़ 60 लाख रुपये का बजट आवंटित किया गया। प्रारम्भिक शिक्षा सैटअप द्वारा प्रदत्त बजट अलग है।

शिविरा 13 : 'शिक्षा विभाग की शीर्ष कड़ी शिक्षामंत्री, बुनियादी प्रथम कड़ी विद्यार्थी और बीच में बीसियों कड़ियाँ' यह कहा जाता है। शिक्षामंत्री एक और विद्यार्थी करोड़ों, बावजूद इसके आपका विद्यार्थियों के साथ सीधा जीवन्त सम्बन्ध। सहज में कोई मान नहीं सकता लेकिन है सत्य। सर, आपमें ऐसी कौनसी भावना विद्यमान है जो ऐसा कराने के लिए आपको विवश करती है?

शिक्षामंत्री : इस प्रश्न का जवाब शब्दों में नहीं अनुभूति से सम्बन्धित है। बच्चों की चर्चा सुनकर ही मेरा मन प्रसन्न हो जाता है। देखने व मिलने पर होने वाले आनन्द की तो बात ही छोड़ो। स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी राजाजी का कथन मुझे बहुत अपील करता है। उन्होंने कहा कि बालक वे चमकते हुए सितारे हैं जो भगवान के हाथ से छूटकर धरती पर गिर पड़े हैं। बच्चे मुझे सितारे, आँखों के तारे, हमारे दुःख-तकलीफ की दवा एवं देश के भविष्य निर्माता लगते हैं। जब किसी स्कूल में जाता हूँ तो संस्थाप्रधान के कक्ष की ओर न जाकर बच्चों के क्लासरूम की तरफ पैर खिंचते चले जाते हैं। मैं बच्चों के बीच स्वयं को पाकर आनन्द की अनुभूति करता हूँ। शायद यही कारण है कि मैं सदैव प्रसन्न रहता हूँ। बीमारी मेरे पास नहीं फटकती। बालक को शुद्ध और ब्रह्मरूप कहा गया है। राजस्थान के विख्यात शिक्षाशास्त्री हरिभाऊ उपाध्याय जी ने कहा है कि बालक भगवान के जीते जागते खिलौने हैं। बालकों में भगवान के दर्शन जितने जल्दी हो सकते हैं, उतना शायद ही किसी अन्य में हो। बस, ये ही भावनाएँ मेरे में हैं जिससे मैं बच्चों से बात करता हूँ, उन्हें फोन करता हूँ, उनके साथ खेलता हूँ और आनन्द मनाता हूँ। हम सबको बच्चोंसे भरपूर प्यार व दुलार करना चाहिए। हमारे विभाग में मोस्ट वीआइपी कोई है तो वह स्कूल में पढ़ने वाला बच्चा है। हमें उसी की बेहतरी के लिए सब काम करने हैं।

शिविरा 14 : शिक्षा के माध्यम से आप राजस्थान का कैसा भविष्य देखते हैं? आपके संकल्प और शिक्षकों से आपकी अपेक्षा पर कृपया प्रकाश डालिए।

शिक्षामंत्री : 'सा विद्या या विमुक्तये' का घोष हम अपने विद्यार्थी जीवन से सुनते आए हैं। यह मुक्ति निरक्षरता, निर्धनता, शोषण और अन्याय से मुक्ति प्रदान करना है। निसंदेह यह शिक्षा से सम्भव है। जैसा कि मैंने पहले कहा, वर्तमान वर्ष शुरू से ही कोरोना महामारी का शिकार रहा है। इससे मुकाबला करने में शिक्षा विभाग के अधिकारियों, शिक्षकों, मंत्रालयिक कर्मचारियों, स्काउट-गाइड के अधिकारियों, स्काउट-गाइड बालक-बालिकाओं सबका अद्भुत सहयोग रहा। करोड़ों रुपये शिक्षा विभाग के सौजन्य से इस विपदा में सहयोग हेतु प्राप्त हुए हैं। सहयोग की यह सरिता निरन्तर बह रही है। विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारियों ने पूरे महीने की पेंशन राशि मुख्यमंत्री सहायता कोष में अर्पित की जिसकी माननीय मुख्यमंत्री जी से लेकर हर स्तर पर सराहना हुई। इस साक्षात्कार में इसका जिक्र कर मैं प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ। शिक्षा के माध्यम से मैं सुनहरे राजस्थान का उज्ज्वल भविष्य देखता हूँ। मेरा दृढ़ संकल्प है कि मैं प्राण-प्रण से शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु लगा रहूँगा। शिक्षकों से मेरा अनुरोध है कि वे उत्तम सुझाव मुझे भिजवाएँ। मेरे ऑफिस में उनका सदैव स्वागत है। एक-एक सुझाव पर शिक्षाधिकारियों की टीम विचार करेगी और उन्हें लागू करने के लिए विकल्प तलाशेगी। राजस्थान के शिक्षक बहुत सामर्थ्यवान हैं। उनकी योग्यता, क्षमता एवं कर्त्तव्यपरायणता अनुकरणीय है। मैं चाहूँगा कि उत्तम, संस्कारित, स्वस्थ व स्वच्छ समाज की रचना में वे हरावल भूमिका निभाएँ। एक-एक बच्चे की तरफ हमारा ध्यान है। एक-एक घर तक हम अपनी पहुँच सुनिश्चित करेंगे। तभी समाज में परिवर्तन आएगा। एक गीत मुझे अपने विद्यार्थी काल से बहुत अपील करता रहा है। हमारी प्रार्थना सभा, बाल सभा में इसे गाया जाता था, 'घर-घर अलख जगाएँगे, बदलेंगे जमाना।' यह हमारा मोटो है। हम प्रदेश के प्रत्येक घर, प्रत्येक अभिभावक व प्रत्येक भामाशाह तक अलख जगाते जाएँगे और परिवर्तन लाकर ही चैन लेंगे। तब तक न तो थकेंगे, न रुकेंगे और न बैठेंगे। यही मेरा संकल्प है और यही आप गुरुजनों से मेरी अपेक्षा है।

(अगले अंक में जारी....)

साक्षात्कारकर्ता : **ओम प्रकाश सारस्वत**
पूर्व संयुक्त निदेशक, ए-विनायक लोक,
बाबा रामदेव मंदिर रोड, गंगाशहर (बीकानेर)
मो. 09414060038

अभियान गीत

घर-घर अलख जगाएँगे,
बदलेंगे ज़माना।
निश्चय हमारा ध्रुव सा अटल है,
काया की रग-रग में निष्ठा का बल है,
जागृति शंख बजाएँगे,
बदलेंगे ज़माना।
बदली है हमने अपनी दिशाएँ,
मंज़िल नई तय करके दिखाएँ,
धरती को स्वर्ग बनाएँगे,
बदलेंगे ज़माना।।
श्रम से बनाएँगे, माटी को सोना,
जीवन बनेगा, उपवन सलोना,
मंगल सुमन खिलाएँगे,
बदलेंगे ज़माना।
कोरी कल्पना की तोड़ेंगे कारा,
ममता की निर्मल बहाएँगे धारा,
समता के दीप जलाएँगे,
बदलेंगे ज़माना।
घर-घर अलख जगाएँगे,
बदलेंगे ज़माना।।

आस्था, श्रद्धा और समर्पण का पर्व

गुरु पूर्णिमा

❒ राजीव अरोड़ा

गुरु पूर्णिमा का पर्व अपने गुरुजनों, श्रेष्ठजनों एवं अपने से बड़ों के प्रति अगाध श्रद्धा प्रकट करने का भारतीय सनातन संस्कृति का विशिष्ट पर्व है। गुरु पूर्णिमा आस्था का पर्व है, श्रद्धा का पर्व है और समर्पण का पर्व है।

गुरु पूर्णिमा का पर्व प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को मनाया जाता है। गुरु पूर्णिमा का पर्व महर्षि वेदव्यास की स्मृति में मनाया जाता है इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। महर्षि वेदव्यास ने वेदों की समस्त ऋचाओं का सम्पादन और वर्गीकरण करके उन्होंने चार वेद 'ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद' प्रतिष्ठित किए, उन्होंने अठ्ठारह पुराणों की रचना की और महाभारत व श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का प्रणयन भी उन्होंने ही किया।

महर्षि वेदव्यास सम्पूर्ण जगत् के गुरु माने जाते हैं। गुरु के रूप में उन्होंने संसार को जो ज्ञान दिया, वह दिव्य है। गुरु पूर्णिमा के दिन लोग अपने गुरु में ही महर्षि वेदव्यासजी का रूप देखते हैं और उनकी वन्दना, स्तुति इस रूप में करते हैंः-

अज्ञान्तिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरून्मीलिंतं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अर्थात् जो गुरु अज्ञान के अंधकार में दृष्टिहीन बने अबोध शिष्य की अंधी आँखों को ज्ञान का अंजन लगाकर ज्योतित कर देता है, उस गुरुजी को प्रणाम है।

अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अर्थात् जो अखण्ड, अनादि ब्रह्म चराचर में व्याप्त है, उसका ज्ञान देने वाला गुरु ही तो है, उस गुरुजी को प्रणाम है।

गुरु गीता में गुरु की गरिमा का वर्णन इस प्रकार किया गया हैः-

गुकारं च गुणातीत रुकारं रूपवर्जितम्।
गुणातीत स्वरूपं च यो दद्यात स गुरुः स्मृतः।।

अर्थात् 'गुरु' शब्द का प्रथम अक्षर 'गु'

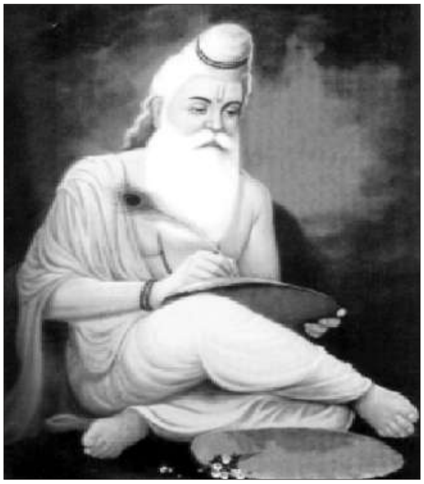

इस सत्य का बोध कराता है कि त्रिगुणमय कलेवर को धारण करने वाले गुरुदेव सर्वथा गुणातीत हैं। द्वितीय अक्षर 'रु' में यह सत्य निहित है कि शिष्यों के लिए रूप वाले होते हुए भी गुरुदेव भगवान रूपातीत हैं।

संत कबीर ने भी गुरु की महिमा का वर्णन अपने दोहे में इस प्रकार किया हैः-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

गुरु और गोविन्द (भगवान) दोनों खड़े हुए हैं। मैं सर्वप्रथम किसका चरण-स्पर्श करूं? गुरुजी की बलिहारी है जिन्होंने मुझे गोविन्द (भगवान) को प्राप्त करने का मार्ग बताया अर्थात् भाव यह है कि गुरु का स्थान गोविन्द (भगवान) से भी बड़ा है क्योंकि गुरु ने ही गोविन्द (भगवान) प्राप्ति का मार्ग बताया है।

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित रामचरितमानस के बालकाण्ड में गुरु वन्दना वर्णित है जिसमें गुरु के चरणकमलों की वन्दना की गई है।

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकरि।।

अर्थात् मैं उन गुरु महाराज के चरणकमल की वन्दना करता हूँ, जो कृपा के समुद्र और नररूप में श्रीहरि ही हैं और जिनके वचन महामोहरूपी घने अन्धकार के नाश करने के लिये सूर्य-किरणों के समूह हैं।

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

अर्थात् मैं गुरु महाराज के चरणकमलों की रज की वन्दना करता हूँ, जो सुरुचि (सुन्दर स्वाद), सुगन्ध तथा अनुरागरूपी रस से पूर्ण है।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने गुरु महाराज की वन्दना में आगे लिखा है कि-

श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती।
सुमिरत दिब्य दृष्टि हियें होती।।
दलन मोह तम सो प्रकासू।
बड़े भाग उर आवइ जासू।।

अर्थात् श्रीगुरु महाराज के चरण-नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करने वाला है; वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का संदेशवाहक गुरु तम (अज्ञान) से ज्योति (ज्ञान) की ओर ले जाने वाला माध्यम है। गुरु राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली के समान है जो शिष्य के जीवनरूपी बगिया में संस्कारों और सद्‌गुणों की बहार ला देता है, उस कुम्हार के समान है जो मिट्‌टी के ढेलों को सुन्दर घड़े की आकृति देकर जनोपयोगी बना देता है और उस शिल्पकार के समान है जो अनुशासनरूपी कसौटी पर कस कर पत्थर को भी बहुमूल्य हीरे में परिवर्तित कर देता है।

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में राजा दशरथ गुरु वशिष्ठजी से कहते हैं कि-

जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं।
ते जनु सकल बिभव बस करहीं।।

जो लोग गुरु के चरणों की रज को मस्तक पर धारण करते हैं, वे मानों समस्त ऐश्वर्य को अपने वश में कर लेते हैं अर्थात् संत लोग ऐसी

नीति कहते हैं और वेद, पुराण तथा मुनिजन भी यही बतलाते हैं कि गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले मनुष्य को संसार के समस्त सुखों की प्राप्ति संभव है और जिसको गुरु के वचनों में विश्वास नहीं है, उसको सुख और सिद्धि स्वप्न में भी सुगम नहीं होती।

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में भी गुरु की महिमा का वर्णन इस प्रकार किया गया हैः-

गुरु बिनु भव निधि तरइ न कोई।
जौं बिरंचि संकर सम होई।।

अर्थात् श्री गुरुदेव के बिना कोई भी संसार को नहीं पार कर सकता, फिर भले ही ब्रह्माजी अथवा शिवजी की भाँति ही समर्थ क्यों न हों।

गुरु पूर्णिमा का पर्व महर्षि वेदव्यास और गुरुजनों के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। गुरु पूर्णिमा के दिन गुरुदेव के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया जाता हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित रामचरितमानस के बालकाण्ड में वर्णित है कि भगवान श्रीराम भी गुरुद्वार पर जाते थेः-

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।

अर्थात् श्रीरघुनाथजी प्रातःकाल उठकर माता-पिता और गुरुदेव के चरणों में विनयपूर्वक मस्तक नवाते हैं।

गुरु पूर्णिमा के दिन गुरुदेव की पूजा की जाती है। गुरुदेव की पूजा, गुरुदेव का आदर है, किसी व्यक्ति की पूजा नहीं है, अपितु गुरुदेव के देह के अंदर जो विदेही आत्मा है-परब्रह्म परमात्मा है उसका आदर है, ज्ञान का आदर है, ज्ञान का पूजन है, ब्रह्मज्ञान का पूजन है। गुरुदेव की महिमा का वर्णन करते हुए विनोबा भावे ने भी कहा है-''गुरु को अगर हमने देह रूप में माना, तो हमने गुरु से ज्ञान नहीं, अज्ञान पाया।''

गुरु गीता में गुरु की गरिमा का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

प्र स मित्र भर्त्तो अस्तु प्रयस्वान्।
यस्त आदित्य शिक्षति व्रतेन।।

अर्थात् जो स्नेही गुरु विद्यारूपी प्रकार से सूर्य के समान चमक रहा है और तुम्हें शुभ कर्मों की शिक्षा दे रहा है, वह सर्वथा सम्माननीय है।

विद्यालयों में गुरु पूर्णिमा का पर्व उत्सव के रूप में मनाया जाता है। विद्यालय में विद्यार्थी वर्ग के द्वारा अपने गुरुजनों का सम्मान कर आशीर्वाद लिया जाता है। इस दिन विद्यालयों में गुरुजनों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों के द्वारा यह गुरु वन्दना की जाती हैः-

ध्यान मूलं गुरोमूर्तिः, पूजा मूलं गुरोर्पदम्।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोर्कृपा।।

अर्थात् गुरु की मूर्ति ध्यान मूला है अर्थात् गुरु की मूर्ति का ध्यान करना चाहिए। गुरु के चरण पूजनीय होते हैं अर्थात् उनकी वंदना करनी चाहिए। गुरु के वाक्य मंत्र मूल होते हैं अतः मंत्र के समान गुरु के वाक्यों का मनन करना चाहिए। गुरु की कृपा मोक्ष मूला है अर्थात् गुरु कृपा के बिना मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती है। इस नश्वर नाना प्रकार के कष्टमय संसार में सदा सर्वदा के लिए मुक्ति गुरु कृपा से ही संभव हैं

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मैं श्री गुरवे नमः।।

अर्थात् गुरु में ब्रह्म, विष्णु और महेश का दर्शन होता है। गुरु ही साक्षात् ब्रह्मस्वरूप है। अतः श्री गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

गुरु पूर्णिमा का पर्व वर्ष भर की पूर्णिमा मनाने के पुण्य का फल प्रदान करने के साथ-साथ हमारे भीतर कृतज्ञता का सद्गुण भी उत्पन्न करता है। जिन गुरुजनों ने कठोर परिश्रम करके हमारे लिए सब कुछ किया, उन गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का दिवस है-गुरु पूर्णिमा।

31, शिव वाटिका, मॉडल टाउन-सी के पास,
मालवीय नगर, जयपुर-302017
मो. 7742131000

एक माह की संपूर्ण पेंशन का दान

अनुकरणीय पहल

कोरोना (कोविड-19) महामारी से संतप्त मानवता एवं इस महा कोप से लड़खड़ाई अर्थव्यवस्था को सम्बलन प्रदान करने के लिए दानवीरों के सहयोग की वेगवत धारा अविरल बह रही है। शिक्षा विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस दिशा में बहुत अनुकरणीय सहयोग प्रदान कर उदारता, संवेदनशीलता एवं दानवृत्ति को उजागर किया है। अपने वेतन का एक भाग दान करने की बात उदारता है तो पूरा वेतन ही दान में दे देना महा उदारता, महादान है। ऐसा ही एक अद्भुत उदाहरण शिक्षा विभाग के सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी महानुभावों ने किया है। ये माननीय अधिकारी हैं :

1.	श्री ओम प्रकाश सारस्वत से.नि. संयुक्त निदेशक, बीकानेर।	45177.00
2.	डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी से.नि. संयुक्त निदेशक, श्रीगंगानगर।	41951.00
3.	श्री महावीर सिंह पूनिया से.नि. संयुक्त निदेशक, चूरू।	43123.00
4.	श्री रेखाराम खीचड़ से.नि. जिला शिक्षा अधिकारी, चूरू।	48106.00
5.	श्री मांगेलाल बुडानिया से.नि. जिला शिक्षा अधिकारी, जयपुर।	33959.00
6.	श्री राजवीर सिंह गिल से.नि. जिला शिक्षा अधिकारी, श्रीगंगानगर।	38902.00
		2,51,218.00

उपर्युक्त सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी महानुभवों ने अप्रैल, 2020 माह में प्राप्त संपूर्ण पेंशन राशि मुख्यमंत्री राहत कोष में अर्पित करने का अप्रतिम कार्य किया है। इस प्रकार दो लाख इक्यावन हजार से भी अधिक राशि का चैक माननीय शिक्षामंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा को प्रस्तुत किया। माननीय शिक्षामंत्री महोदय ने सहयोग के लिए प्रसन्नता प्रकट करते हुए अपने ट्वीटर पर लिखा जाने माने वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं पूर्व संयुक्त निदेशक ओम प्रकाश सारस्वत, डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी व महावीर सिंह पूनिया, पूर्व जिशिअ मांगे लाल बुडानिया, रेखाराम खींचड़ एवं राजवीर सिंह गिल जी द्वारा एक माह की पेंशन करीब 2.5 लाख रुपये मुख्यमंत्री सहायता कोष में दिए हैं। हम सबको आप पर गर्व है।

-डॉ. रणवीर सिंह
विशेषाधिकारी (शिक्षा)
शासन सचिवालय, राजस्थान, जयपुर-01

अनूठा महाकवि

कबीर

❒ डॉ. कृष्णा आचार्य

संवत पंद्रह सै पछत्तरा, कियो मगहर को गौन।
माघ सुदी एकादशी रो, पौन में पौन।।

विक्रम संवत 1455 (1397 ईस्वी) की ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा का दिन था। (बाबू श्यामसुंदर दास के अनुसार, संवत 1456, स्रोत : कबीर ग्रंथावली)

अंतस्साक्ष्य और 'कबीर चरित्र बोध' के प्रमाण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कबीर का आविर्भाव 1398 में हुआ था। आविर्भाव काल के समान ही उनका अवसान काल भी अनिश्चित और रहस्यमय बना हुआ है। 'भक्तमाल' के टीकाकार प्रियादास के अनुसार उनका देहावसान मगहर में 1492 ई. में हुआ, जो एक जनश्रुति के रूप में प्रचलित है।

तात्पर्य यह है कि कबीर का निधन 1518 ई. (1575 वि.) में हुआ। इस मंतव्य का समर्थन 'कबीर परिचई' के इस उल्लेख से भी हो जाता है कि कबीर को 120 वर्ष का पवित्र जीवन प्राप्त हुआ था अर्थात् वे 1398-1518 ई. तक विद्यमान थे। प्रसिद्ध है कि कबीर स्वामी रामानंद के शिष्य थे। 'भक्तमाल' में रामानंद के प्रमुख शिष्यों का उल्लेख करते हुए कबीर को विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया है। 'जाति जुलाहा नाम कबीरा' जैसे उल्लेखों से स्पष्ट है कि वे जाति-पांति के कटु आलोचक थे। उन्होंने अपने को जुलाहा जाति का होना स्वीकार किया है। यह अंतस्साक्ष्य सर्वथा विश्वसनीय और प्रामाणिक है किन्तु कबीरपंथ में कबीरदास के माता-पिता के विषय में किसी प्रकार का मत उपलब्ध नहीं होता कारण कि कबीर पंथियों की दृष्टि में कबीरदास महापुरुष है, किंवदंती है कि नीरू जुलाहा और उसकी पत्नी नीमा ने बालक के रूप में विद्यमान सत्यपुरुष को अपने घर लाकर पालन-पोषण किया। इस प्रकार जुलाहा परिवार में परिपालित सत्पुरुष ने युग के शोषण और बंधनों को शिथिल कर सामाजिक जीवन का एक नया परिच्छेद उद्घाटित किया। जनश्रुतियों में प्रसिद्ध है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई व संतान के रूप में पुत्र कमाल और

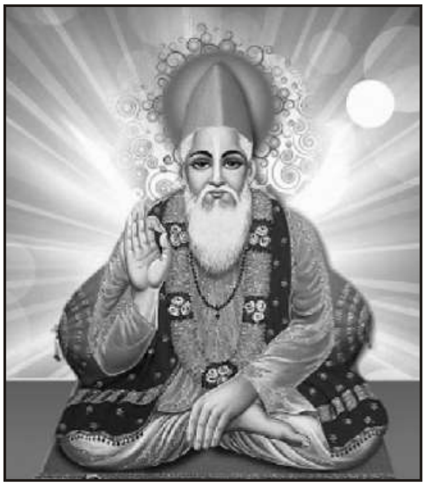

पुत्री कमाली थी।

अक्षर ब्रह्म के परम साधक कबीरदास सामान्य अक्षर ज्ञान से रहित थे। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा 'मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गहौ नहिं हाथ' अतः यह बात निर्विवाद है कि उन्होंने स्वतः किसी ग्रंथ को लिपिबद्ध नहीं किया।

संतमत के समस्त कवियों में कवि कबीर सबसे अधिक प्रतिभाशाली और मौलिक थे। उन्होंने कविता लिखने की प्रतिज्ञा करके कहीं पर कुछ भी नहीं लिखा है, न उन्हें पिंगल और अलंकारों का ज्ञान था तथापि उनमें काव्यानुभूति इतनी प्रबल और उत्कृष्ट थी कि वे सरलता के साथ महाकवि कहलाए। यह भी सच है कि उनकी कविता में छंद, अलंकार, शब्दशक्ति आदि गौण हैं और संदेश देने की प्रवृत्ति प्रधान है। अलंकारों से सुसज्जित न होते हुए भी उनके संदेश काव्यमय हैं। कबीर भावना की अनुभूति से युक्त, उत्कृष्ट रहस्यवादी, जीवन का संवेदनशील संस्पर्श करने वाले और मर्यादा के रक्षक कवि थे। उन्होंने स्वतः कहा है- 'तुम जिन जानो गीत है, यह निज ब्रह्म विचार' पथभ्रष्ट समाज को उचित मार्ग पर लाना ही उनका प्रधान लक्ष्य है। कवि के रूप में कबीर जीवन के अत्यंत निकट है। सहजता उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी शोभा और कला की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके काव्य का आधार स्वानुभूति या यथार्थ है। उन्होंने स्पष्ट कहा हैः मैं कहता हूँ आंखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी' वे जन्म से विद्रोही, प्रकृति से समाज सुधारक, कारणों से प्रेरित होकर धर्म-सुधारक, प्रगतिशील दार्शनिक थे और मौलिक कवि थे।

संत संप्रदाय विश्व संप्रदाय है जिसका धर्म विश्वधर्म है, उसका मूलाधार है- हृदय की पवित्रता। पवित्रता-सम्मत स्वाभाविक और सात्विक आचरण से ही धर्म का विराट स्वरूप बना। वासनाओं, इच्छाओं एवं द्वेषों से रहित हृदय की निःसीम सीमाओं में विशाल धर्म का समावेश संभव है और यह सब सद्गुरु की कृपा से ही संभव है, वही भक्ति और मुक्ति का दाता तथा ज्ञानचक्षुओं का उद्घाटक है। संत संप्रदाय ने गुरु को ब्रह्मा से ही महान माना है। स्वयं कबीर ने कहा है-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।

सिर से पैर तक मस्त मौला, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के सामने प्रचंड, दिल के साफ, दिमाग से दुरुस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अस्पृश्य, कर्म से वंदनीय हैं कबीर। ये सुवाक्य हैं हजारी प्रसाद द्विवेदी (हिन्दी के शीर्षस्थ बुद्धिजीवी) के। हिन्दी के पटल पर भक्ति और कविताई, दोनों स्थानों पर कबीर अद्वितीय हैं, बेजोड़ हैं, अनूठे महाकवि है। मशहूर शायर अली सरदार जाफरी बताते है कि कबीर से पहले हिन्दी भाषा ने कोई बड़ा कवि पैदा नहीं किया। मलिक मुहम्मद जायसी की जन्म तिथि 1494 ईसवीं है और पद्मावत का रचनाकाल 1540 ईसवीं में शेरशाह सूरी के युग में हुआ, जबकि कबीर की मृत्यु 1518 ईसवीं में हो चुकी थी। सूफी संतों के जरिए कबीर के पास कई सौ बरस की फारसी परंपरा आई, जिनमें रूमी, सादी अत्तार और हाफिज की रचनाएँ आमतौर पर पढ़ी जाती थी और कबीर की कविता में उनके प्रभाव के प्रमाण मिलते हैं।

कबीर एक कवि के रूप में : यह ठीक है कि कबीर निरक्षर थे, वे शास्त्रज्ञ विद्वान भी नहीं थे, तथापि काव्य रचना के लिए बड़ी-बड़ी उपाधियों की आवश्यकता न पहले होती थी और न अब होती है। कविता करने की शक्ति तो ईश्वर प्रदत होती है। काव्य निर्माण के लिए जिस प्रतिभा की आवश्यकता होती है कबीर में वह प्रभूत मात्रा में विद्यमान थी। भाषा पर उनका जबरदस्त अधिकार था इसीलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है। कबीर की रचनाओं में अभिव्यंजना कौशल एवं अनुभूति की तीव्रता अपने उच्चतम शिखर पर है। कबीर की काव्य रचना का मूल उद्देश्य था- 'लोकहित' समाज सुधारक के रूप में उन्होंने जिस उपदेश मूलक काव्य की रचना की, लोक कल्याण की भावना प्रमुख थी। वे कहते हैं कि मैंने अपनी साखियों की रचना जीव को भव सागर से पार उतारने के लिए की है-

हरिजी यहै विचारिया साखी कहौ कबीर।
भौ सागर मैं जीव है, जो कोई पकड़े तीर।।

स्पष्ट है कि केवल कविता के लिए कविता करना कबीर का लक्ष्य नहीं था। कोरे चमत्कार प्रदर्शन का उद्देश्य लेकर वे काव्य रचना करने नहीं चले थे। हाँ, इतना अवश्य था कि उनमें विलक्षण काव्य प्रतिभा थी। वे व्यंजना, लक्षणा, वक्रोक्ति, अलंकार, रीति आदि पद्धतियों से अपनी अनुभूति को अभिव्यक्ति देते थे, उनकी क्षमता इतनी प्रबल थी कि उनके काव्य में अभिव्यंजना के अनेक कलात्मक तत्व अनायास ही उतर आए हैं। उन्होंने तो ज्ञान के चक्षु रूप में साखियाँ कही हैं-

सखी आंखी ज्ञान की, समुझ देखि मन मांहि।
बिनु साखी संसार का, झगरा छूटत नाहिं।।

कबीर ने कविता के रूप में 'सांचा शब्द' कहा है, वह ताजमहल जैसा प्रयत्न साध्य सौंदर्य न होकर हिमालय की रम्य पर्वत श्रेणियों का सहज सौंदर्य है जो अपनी गरिमा से, भव्यता से एवं मनोहरता से देखने वाले को मुग्ध कर देता है। उनकी वे साखियाँ जो 'विरह को अंग' शीर्षक से संकलित की गई है, वियोग शृंगार की अभिव्यक्ति करती है-

यह तन जालौ मसि करौ ज्यूं धुवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै बरसि बुझावै अग्गि।।

यदि प्रिय उसे एक बार मिल जाए तो वह उन्हें नेत्रों की कोठरी में कैद कर लेगी-

नैननि की करि कोठरी, पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारी कैं प्रिय कौं लिया रिझाय।।

कबीर के काव्य में रस व्यंजना उच्च कोटि की है। शांत रस की व्यंजना की प्रमुखता है। निर्वेद या वैराग्य भाव से युक्त होकर नश्वर संसार के प्रति विरक्ति भाव व्यक्त किया है-

यह ऐसा संसार है जैसे सेवल फूल।
दिन दस के त्यौहार कौं झूठे रंगिन भूल।।

कबीर की उलटबासियों से जो आश्चर्य भाव अभिव्यक्त होता है उससे अद्भुत रस की सृष्टि हुई है-

समन्दर लागी आग, नदियाँ जलि कोयला भई।
देखि कबीरा जाग, मंछी रूखा चढ़ि गई।।

रस योजना का यह भाव देख कोई यह नहीं कह सकता कि वे कवि न होकर मात्र उपदेशक थे। अनुभूति को अभिव्यक्त करने में अलंकारों ने प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया है, अलंकार कबीर के लिए साधन मात्र थे, साध्य नहीं।

उपना-

पारी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात

अन्योक्ति-

काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी
तेरी ही नाल सरोवर पानी

सांगरूपक-

कबीर घोड़ा प्रेम का चेतन चढ़ि असवार
ग्यान खड्ग गहि काल सिरि भली मचाई मार।

प्रतीक-

आकासे मुख औंधा कुआं पाताले पनिहारी
ताका पाणि को हंसा पीवै विरखा आदि बिचारि।

यहाँ आकाश सहस्रवार चक्र का प्रतीक है, औंधा कुंआ ब्रह्मरंध्र का, पाताल-मूलाधार चक्र का, ब्रह्मरंध्र से झरने वाला पानी अमृत का प्रतीक है और हंस जीवमुक्त आत्मा का प्रतीक है। कबीर ने साखी, सबद और रमैनी की रचना की है। साखियाँ दोहा छंद में है, रमैनी में कुछ चौपाइयों के बाद एक दोहा है, जबकि सबद पद शैली में लिखे गए हैं। कबीर के पद विभिन्न राग-रागिनियों में गाए जा सकते हैं। वे कविता को गेय बनाना चाहते थे। जिससे वह लोगों की जुबान पर चढ़ सके और सरलता से कंठस्थ हो जाए। इसमें उन्हें पूरी सफलता भी प्राप्त हुई।

भाषा सौंदर्यः- कबीर की भाषा मुख्यतः ब्रज, अवधी एवं खड़ी बोली का मिश्रण है। जिसमें कहीं-कहीं भोजपुरी, पंजाबी एवं राजस्थानी भाषा के तत्व भी उपलब्ध होते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को पंचमेल खिचड़ी या सधुक्कड़ी भाषा कहा है जिसमें विभिन्न बोलियों के शब्द उपलब्ध होते हैं। डॉ. बिन्दुमाधव मिश्र के अनुसार 'कबीर के पदों की भाषा प्रमुखतः ब्रज, साखियों की राजस्थानी तथा खड़ी बोली और 'रमैनी' की भाषा प्रधान रूप से अवधी है।

आचार्य श्यामसुन्दर दास का मत है कि 'कबीर की भाषा का निर्णय करना टेढ़ी खीर है क्योंकि वह खिचड़ी है- खड़ी बोली, पंजाबी, राजस्थानी, अरबी, फारसी आदि अनेक भाषाओं का पुट भी उनकी उक्तियों पर चढ़ा हुआ है। कबीर की वाणी बहुरंगी है। यहाँ यह भी सत्य है कि कबीर के नाम से बहुतेरी रचनाएँ भी पाठकों के सामने पहुँची है, जिन्हें कबीर ने नहीं रचा था, दरअसल ये रचनाएँ कबीर के समकालीन शासकों, लेखकों, संत-महात्माओं की है पर उनमें कबीर की विचारधारा का समुचित संवहन जरूर किया गया है। यही कारण है कि अलग-अलग क्षेत्रों से आने वाले, विभिन्न पंथों के अनुयायियों और तरह-तरह की बोलियाँ बोलने-भाषाएँ जानने वाले रचनाकारों की विविध सामग्री भी कबीर की रचनाओं के रूप में भी मशहूर हो गई है। भाषिक विभिन्नता व विविधता का ये महत्त्वपूर्ण कारण रहा है कि कबीर ने रचनाएँ स्वयं लिखी नहीं है। नित्य प्रति प्रवचन, सत्संग या फिर बातचीत के दौरान जो कुछ बोलते थे, उसे उनके अनुयायी लिपिबद्ध कर देते थे। विभिन्न खोजों व शोध में कबीर की कुल छह दर्जन के आसपास पुस्तकें मिलती हैं, निस्संदेह ये सब पुस्तकें तो उनकी नहीं है। कबीर ने अपनी भाषा के विषय में स्वयं कहा है-

बोली हमरी पूरब की हमकौ लखै न कोय।
हमको तो सोई लखै जो धुर पूरब का होय।।

वास्तव में कबीर की भाषा को उस काल की एक ऐसी काव्य भाषा मानना उचित है जो नाथपंथियों की परम्परा से साधुसंतों के बीच चली आ रही थी और जिसमें संतों के व्यापक पर्यटन के फलस्वरूप अनेक क्षेत्रीय बोलियों का सम्मिश्रण हो गया था। कबीर की भाषा

अकृत्रिम, सीधी-खड़ी एवं सहज भाषा है। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा दिया है, बन गया तो सीधे-साधे नहीं तो दरेरा देकर। भाषा कुछ कबीर के सामने लाचार सी नजर आती है। बाबू श्यामसुंदर दास, डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थवाल, पंडित परशुराम चतुर्वेदी के रूप में कबीर को समर्थ आलोचक प्राप्त हुए, जिन्होंने उनकी कविता के मर्म को उद्घाटित कर उन्हें एक समर्थ कवि सिद्ध किया।

अस्तु! कबीर हिन्दी के महान कवियों में से एक हैं। उत्तर भारत की हिन्दी भाषी जनता में तुलसी के उपरान्त यदि किसी अन्य कवि का काव्य लोगों की जुबान पर चढ़ा हुआ है, तो वह कबीर ही है। भले ही कबीर का जन्म आज से लगभग 600 वर्ष पूर्व हुआ हो किन्तु उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। विज्ञान एवं बौद्धिकता के अतिवाद से पीड़ित एवं अतृप्त मानवता को क्या कबीर का भक्ति संदेश शांति एवं तृप्ति प्रदान नहीं कर सकता? कबीर हिन्दी के भक्ति युग में इस दृष्टि से सर्वाधिक ग्राह्य व्यक्तित्व हैं। संभवतः साहित्य और अखबार में मोटा अंतर यही है कि समय बीतने के बाद अखबार की खबरें व्यर्थ हो जाती है, पढ़ने के बाद वे अरुचिकर हो जाती हैं। जबकि साहित्यिक रचनाएँ कभी अप्रासंगिक नहीं होती। हम जिन्हें जितनी बार पढ़ते हैं, उतना ही नवीन अर्थ बोध होता है तथा वे उतनी ही रुचिकर लगती है, इसीलिए साहित्य सदैव प्रासंगिक रहता है। वह सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं सार्वजनीन है। साहित्यकार देश-काल की सीमा में बंधा नहीं होता इसलिए वह प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रचना के माध्यम से आनन्दित करता है। कबीर भी एक ऐसे ही सार्वकालिक कवि हैं जिनकी रचनाएँ सदैव प्रासंगिक रहेगी।

उस्ता बारी, बीकानेर (राज.)
मो: 9461036201

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

शिक्षण अधिगम

प्रभावी शिक्षण

❐ डॉ. रमेश 'मयंक'

शिक्षण कार्य- समस्त कार्यों में पवित्रतम और परमावश्यक माना जाता है। ज्ञान-दान के समान दूसरा कोई दूसरा परहिताय कार्य नहीं है। शिक्षण की प्रक्रिया अध्यापक शिक्षा पर निर्भर है, जिसके माध्यम से भावी पीढ़ी निहित कौशल तथा तकनीकों से परिचित हो सकती है। दक्षतार्जन कर सकती है। अपेक्षित शिक्षण व्यवहारों को आत्मसात कर सकती है। आज के युग में शिक्षा का आंकलन राष्ट्रीय तथा सामाजिक मर्यादा, मान्यता एवं जीवन मूल्यों के संदर्भों में किया जा सकता है।

शिक्षा शब्द-कोश में गुड के अनुसार शिक्षण किसी शैक्षिक संस्थान में छात्रों को अनुदेशित करने की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है।

बर्टन ने शिक्षण को व्यापक रूप प्रदान करते हुए उत्प्रेरण, मार्गदर्शन, निर्देशन और प्रोत्साहन को अनिवार्यतः समाहित करने की बातें कही थी। भले ही स्मिथ, शिक्षण और अधिगम को अलग-अलग कह दें पर मेरा मन दोनों को अलग करके स्वीकारने को तैयार नहीं होता। शिक्षण में यदि अधिगम नहीं हो तथा अधिगम से शिक्षण नहीं हो तो सीखने के लिए सिखाने के उद्देश्यों का क्या होगा? अधिगम तो एक अपेक्षाकृत स्थायी व्यावहारिक परिवर्तन की प्रक्रिया है। क्लार्क तो शिक्षण को अधिगम प्रणोदित प्रक्रिया मानते हैं।

विचारधाराओं में लगातार परिवर्तन होता रहा है और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापन को अधिगम की एक प्रक्रिया माना जाने लगा है। गेज नामक शिक्षाविद् ने दोनों अवयवों को परस्पर विनियमित किए जाने की अवस्था को प्रभावशाली करार दिया है।

मॉरिसन ने एक कदम आगे बढ़कर दक्षता स्तर पर तथ्यों का स्मरीकरण, अवबोध का सामान्यीकरण तथा व्यावहारिक कौशलार्थ उपयोग तक भाव विस्तार कर दिया।

शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया- अध्यापक, छात्र व पाठ्यक्रम केन्द्रित है? कक्षा कक्ष में पारस्परिक अन्तःक्रियाएँ निर्देशन, मार्गदर्शन अध्यापक द्वारा सुनिश्चित की जाती है।

मैंने शिक्षक जी से शिक्षण को गत्यात्मक प्रक्रिया बनाने बाबत विचार विमर्श किया और छात्र के सहयोग (सहभागिता) को आवश्यक माना।

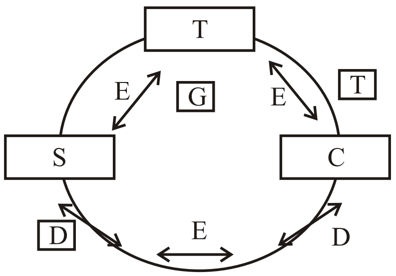

T	**अध्यापक या सिखाने वाला**
S	**छात्र या सीखने वाला**
C	**विषयवस्तु या पाठ्यक्रम**
G	**उद्देश्य (लक्ष्य)**
E	**सामाजिक, शैक्षिक वातावरण अन्तःक्रिया पारस्परिक**
D	**विकासात्मक चक्र**

शिक्षक अपने शिक्षण के माध्यम से छात्रों को किस प्रकार ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक योग्यताओं का विकास करता है? किस प्रकार नवीन तथ्यों का समावेश करता है? किस प्रकार बालकों के ज्ञान का विस्तार करता है? यह उनकी समुचित भावनाओं, विचारों तथा अभिवृत्तियों के ग्रहण करने पर निर्भर करता है।

सामान्यतः शिक्षण एक शाब्दिक प्रक्रिया है जिसमें व्यवहार तथा क्रिया आधारित आध्यात्मिक पक्ष प्रबल होता है। विकासात्मक दृष्टिकोण इसे औपचारिक, अनौपचारिक दोनों ही रूपों में स्वीकार करता है। हमें नए सिरे से सोचना होगा क्या कक्षा में जाकर किताब पढ़ाने, प्रश्नोत्तर कराने व परीक्षा लेकर पास करने तक ही हमारा शिक्षण दायित्व सिमट कर रह गया है।

शिक्षण कार्य को व्यापक तथा जटिल से सरल बनाने के लिए हमें ध्यान देना होगा। शिक्षण की विभिन्न अवस्थाओं, उद्देश्यों व क्रियाओं पर। इनके माध्यम से ही सही अर्थों में प्रभावी शिक्षण सम्भव हो सकता है। जेक्सन ने शिक्षण की तीन प्रमुख अवस्थाएँ निम्नानुसार बताई है-

1. शिक्षण पूर्व प्रस्तुति की अवस्था।
2. शिक्षण कालीन अन्तःक्रियात्मक अवस्था।
3. शिक्षणोपरान्त अवस्था।

प्रथम अवस्था में पूर्व तैयारी पर बल दिया जाता है। इसमें शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण, विषयवस्तु का विश्लेषण, शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारण, शिक्षण युक्ति, प्रविधि, तकनीक, साधन चयन का निर्धारण, पाठ्य सामग्री का अवलोकन करते हुए प्रकरण व इकाई विस्तार के प्रयास सुनिश्चित किए जाते हैं। इसे दो भागों में-विश्लेषणात्मक तथा निर्णय ग्रहण कार्य के रूप में विभाजित करते हैं-

विश्लेषणात्मक कार्यों में-

1. पाठ्यवस्तु तथा सामग्री का विश्लेषण करना।
2. अधिगम सम्बन्धी परिस्थितियों का विश्लेषण करना।
3. प्रविष्टि व्यवहार का आकलन और विश्लेषण करना।
4. वैयक्तिक विभिन्नता के आधार पर कार्य विश्लेषण करना।
5. अनुकूल शिक्षण युक्ति, विधि, तकनीक, प्रतिमान आदि का चयन तथा विश्लेषण करना होता है।

निर्णय सम्बन्धी कार्यों में-

1. शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण करना।
2. पाठ्यवस्तु के विन्यास का क्रम सुनिश्चित करना।
3. अनुकूल शिक्षण विधि, तकनीक, युक्ति, सामग्री का चयन तथा निर्धारण करना।
4. प्रयोग हेतु आवश्यक कौशल का निर्धारण करना।
5. अधिगम प्रतिफल के निर्धारण हेतु मूल्यांकन तकनीक का निर्धारण करना समाहित होता है।

द्वितीय अवस्था वास्तविक अध्यापन की अवस्था है जिसमें छात्र शिक्षक अन्तःक्रिया के माध्यम से अधिगम विकास करते हैं। इसमें- 1. निर्धारित अधिगम तथ्य, व्यवहार तथा अनुभवों को सम्प्रेषित करने के लिए तार्किक क्रम में प्रस्तुतीकरण। 2. छात्र क्रिया-प्रतिक्रिया के माध्यम से विचार विनिमय कर बिन्दुओं का स्पष्टीकरण करना होता है। यहाँ पर अन्तक्रियात्मक तथा निदानात्मक कार्यों पर ध्यान देना यथोचित है-

1. उद्दीपन को प्रस्तुत करना।
2. प्रतिक्रिया-अनुक्रिया हेतु प्रेरणा तथा पुनर्बलन प्रयोग करना।
3. अधिगम अनुभवों तथा व्यवहारों की संरचना तथा प्रस्तुतीकरण के परिप्रेक्ष्य में प्रतिपुष्टि प्रदान करना।
4. सफल अधिगम परिणाम का प्रतिफलन करना।

निदानात्मक कार्यों हेतु-

1. अधिगम काल में होने वाली कठिनाइयों तथा त्रुटियों का निरन्तर प्रतिस्थापन करना।
2. अधिगमकर्त्ताओं की रुचियों, आग्रहों, अभिवृत्ति का आकलन करना।
3. अधिगम प्रतिफल में वृद्धि हेतु निदानात्मक प्रणाली का निर्धारण करना।
4. अधिगम कठिनाई के बिन्दु तथा कारणों की पहचान करना।

तृतीय अवस्था में अध्यापक के द्वारा अधिगम उपलब्धि या प्रतिफल के स्तर या गुणवत्ता का आकलन करने के लिए प्रयास करना होता है। निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हुई या नहीं इसके लिए मूल्यांकन व सुधारात्मक कार्य अपेक्षित है।

विपरीत परिस्थितियों में भी जो ईमान, साहस और धैर्य को कायम रख सके वस्तुतः वही सच्चा शूरवीर है।

मूल्यांकन कार्यों में-

1. मूल्यांकन के लिए उपकरण, साधनों का चयन व निर्धारण करना। (शाब्दिक, व्यावहारिक, क्रियात्मक, अशाब्दिक)
2. वैध, विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ माध्यम का प्रयोग सुनिश्चित करना।
3. अधिगमकर्त्ताओं के उत्साहवर्धन हेतु पुनर्बलन का प्रयोग करना।
4. प्रतिफल की प्रतिपुष्टि प्रदान करना।

उपचारात्मक कार्यों हेतु- अधिगम सम्बधित कमियों को दूर करते हुए परिणाम में सुधार करना अभीष्ट होता है। यहाँ पर-

1. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का आकलन करना।
2. शिक्षण व्यूह रचनाओं का आकलन/परिवर्तन करना।
3. सुधारात्मक योजना का निरूपण करना।
4. कठिनाइयों/त्रुटियों को दूर करने का प्रयास करना।
5. पुनर्मूल्यांकन करना तथा अनुकूल प्रतिपुष्टि प्रदान करना।

इनके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार दिशा-निर्देश प्रदान कर प्रोत्साहित करना, स्वतंत्र अधिगम परिवेशगत परिस्थितियों का सृजन करना, तार्किक चिन्तन कौशल व्यवहारगत दक्षता प्राप्ति हेतु अवसर उपलब्ध कराना, यथा आवश्यकता व्यवहारगत परिवर्तन करना जिससे शिक्षण कार्य मैत्रीपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो सके तथा व्यक्तित्व निर्माण में पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ सहायक बन सके।

इस प्रकार शिक्षण की इस त्रिविध प्रक्रिया में-अध्यापक को अपने दायित्वों तथा कार्यों का निर्धारण करते हुए नियोजनात्मक, कक्षागत व्यवहारात्मक तथा कक्षोत्तर आकलनात्मक दृष्टिकोण अपनाना ही मानक लगता है।

शिक्षकगण द्वारा अधिगम को समेकित रूप से शिक्षण से जोड़कर इस प्रकार निष्पादित करने का प्रयास करना चाहिए जिससे छात्रों को उत्प्रेरण, मार्गदर्शन, निर्देशन तथा प्रोत्साहन प्राप्त हो सके।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)-312001
मो: 7023664777

वैश्विक महामारी

कोरोना-19 के बाद का शैक्षिक परिदृश्य

❒ जयनारायण द्विवेदी

कोरोना संक्रमण ने जीवन जीने के तरीके बदले हैं, चाहे व्यापार, कृषि, उद्योग, आवागमन, रहन-सहन, भोजन, चिकि त्सा, शिक्षा ही क्यों न हो।

गत सत्र 2019-20 के अंतिम चरण अर्थात मूल्यांकन, परीक्षा आयोजन, व्यवस्थापन, परीक्षा परिणाम एवं कक्षोन्नति आदि प्रक्रियाओं को प्रभावित किया है। शिक्षा सत्र के। अंतिम चरण को स्थानीय कक्षाओं के विद्यार्थियों की बिना परीक्षा कक्षोन्नति करते हुए पूर्ण करने का प्रयास किया गया है। अभी यह तय नहीं है कि यह महामारी कब तक, किस हद तक विकराल रूप धारण करेगी। विशेषज्ञों की माने तो कोविड-19 अभी 2-3 महीने और अधिक अपना रंग दिखा सकती है या उससे अधिक भी।

कारोना-19 के चलते बच्चे प्रतिवर्ष की भाँति ग्रीष्मावकाश का आनंद नहीं उठा पाए। बिना खेलकूद, बिना हॉबी क्लासेस, नाना-नानी एवं रिश्तेदारों से मिलना, प्रकृति का आनंद, पर्यटन स्थलों का अपने अभिभावकों के साथ भ्रमण के स्थान पर घर मे कैद होकर मात्र T.V./मोबाइल की दुनिया के होकर रह गए है। जब तक कोरोना का वेक्सिन (टीका) विकसित नहीं होता है, सभी लोगों को इसका टीकाकरण नहीं हो जाता तब तक सभी मे असुरक्षा का भाव बना रहेगा। अभिभावक/सरकार भविष्य की पीढ़ी की सुरक्षा को खतरे मे नहीं डाल सकते है। अतः इस संक्रमण अवधि मे हमने कोविड-19 से बचाव हेतु जो कुछ भी अनुशासन, आदतें सीखी है, उसी के साथ जीना सीखना होगा। उसे हमारी जीवन शैली, व्यवस्था मे नवाचारों को अपनाकर बच्चों के भविष्य को संवारना है। हमें मुख्यतः दो गज की दूरी, मास्क का उपयोग, हाथ धुलाई, स्वच्छता एवं शरीर की प्रतिरोधक क्षमता का विकास आदि तथ्यों को ध्यान में रखकर नवीन शिक्षा सत्र की ओर अग्रसर होना है।

राजस्थान का शिक्षा विभाग नवाचारों के लिए अग्रणी रहा है, निश्चित तौर पर अधिकारियों

/शिक्षकों ने आगे बढ़कर समाज, राष्ट्र, अभिभावक एवं छात्र हितार्थ अपनी भूमिका का श्रेष्ठ निर्वहन किया है।

प्रवेश एवं नामांकन-प्रवासी श्रमिकों/मजदूरों के परिवार सहित हजारों, लाखों की संख्या मे अपने घरों/गाँवों में लौट आने से आगामी सत्र मे बाहरी राज्यों से आए विद्यार्थियों का प्रवेश हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। सीमावर्ती जिलों विशेषकर बाड़मेर, जोधपुर, जालोर, पाली, सिरोही, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा आदि जिलों में नामांकन बढ़ने की पूरी संभावना है। ऐसे प्रवासी विद्यार्थियों की निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था चुनौती है जिसे विभाग एवं समाज, ग्राम शिक्षा समितियों के सहयोग से हल कर सकते हैं। अधिक नामांकन की स्थिति मे बंद पड़े विद्यालयों को फिर से प्रारम्भ करने पर विचार किया जा सकता है।

विद्यालय एवं शिक्षण व्यवस्था - विद्यालयों में परम्परागत शिक्षण, कक्षाओं के आकार एवं विद्यालय की अन्य गतिविधियों के स्थान पर कुछ भिन्न सुरक्षात्मक व्यवस्थाओं के साथ आगे बढ़ने पर विचार किया जा सकता है। विद्यालय की समस्त गतिविधियों के संचालन में दो गज की दूरी की पालना पर ध्यान देना आवश्यक है।

संक्रमण के खतरे से निपटने के साथ भविष्य की कल्पना का विद्यालय एवं उसकी गतिविधियों के संचालन हेतु निम्न नवाचार अपना सकते हैं -

प्रतिदिन विद्यालय मे विद्यार्थी /अध्यापक सभी के लिए मास्क का उपयोग अनिवार्य हो। यदि हो सके तो छात्राओं के लिए गत सत्रों में की गयी नेपकिन व्यवस्था की तर्ज पर मास्क की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु मास्क बैंक स्थापित किए जा सकते हैं।

पिछले वर्षो में हाथ धुलाई दिवस की व्यवस्था को रोज़ की व्यवस्था में प्रभावी तरीके से तब्दील करना होगा। वाश-बेसिन, हेंड-वाश/साबुन की व्यवस्था छात्र अनुपात में बढ़ानी होगी। छात्र/अध्यापक प्रत्येक विद्यालय की गतिविधि के पूर्व हेंडवाश की प्रक्रिया का पालन करें। चूँकि अधिकांश विद्यालय इस अवधि में क्वारेंटाइन सेंटर के रूप में कार्य कर रहे थे, अतः शैक्षणिक सत्र प्राम्भ करने से पूर्व भवन एवं परिसर को भलीभाँति सेनेटराइज करवाना आवश्यक है।

सबसे महत्त्वपूर्ण कक्षाओं के आकार को लेकर वैकल्पिक व्यवस्था पर गंभीरता से विचार करना होगा। विद्यार्थियों को कक्षा में दो गज की दूरी पर बैठाने की व्यवस्था नहीं होने पर रोटेशन से कक्षाओं/विद्यार्थियों को कक्षा में बुलाने पर विचार किया जा सकता है। कक्षा रजिस्टर क्रमांक के अनुसार ऑड-ईवन फॉर्मूले के आधार पर आधे विद्यार्थियों को एक दिन एवं शेष आधे विद्यार्थियों को दूसरे दिन कक्षाओं हेतु एकांतर दिवस मे बुलाया जाए ताकि विद्यार्थियों की कक्षा मे आधी संख्या ही उपस्थित रहे एवं कक्षा में विद्यार्थियों के बीच निश्चित दूरी व्यवस्था को बनाए रखा जा सके। एक दिन की स्कूली पढ़ाई के साथ दूसरे दिन घर पर पढ़ाई का मार्ग दर्शन दिया जाए इस प्रक्रिया से कक्षाओं में भीड़ से बचा जा सकता है वहीं छात्र घर पर स्वाध्याय के लिए प्रेरित हो सकते हैं ।

शिक्षण में परंपरागत शिक्षण के साथ ऑनलाइन शिक्षण/तकनीक के अधिकाधिक

उपयोग पर बल दिया जाए। रेडियो/टीवी, कम्प्युटर, लेपटोप, टेबलेट के माध्यम से शिक्षण की ओर अग्रसर होकर एवं एकांतर दिवस में विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का शिक्षक द्वारा समाधान किया जाकर सीखने की गतिविधियों को वैकल्पिक प्रक्रियाओं से आगे बढ़ाया जाना समीचीन होगा। ऑनलाइन शिक्षण के नाम पर मात्र स्टडी मटेरियल परोसने की स्थितियों से बचना होगा।

शौचालय/मूत्रालय-पिछले वर्षों में विद्यालय में शौचालय/मूत्रालय की पर्याप्त उपलब्धता एवं सफाई पर ध्यान दिया गया है, लेकिन व्यावहारिक तौर पर अब भी छात्र संख्या के अनुपात में इनकी संख्या अपर्याप्त है, विशेषकर उनकी सफाई व्यवस्था स्तरीय नहीं होने से संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। अतः पर्याप्त संख्या में मूत्रालय की उपलब्धता एवं उनकी सफाई व्यवस्था हेतु और अधिक ध्यान दिया जाना अपेक्षित है।

गृहकार्य के स्वरूप को भी बदलने की आवश्यकता है। पुस्तकें/कापियाँ/पैन एवं गृहकार्य जाँच भी संक्रमण का कारण बन सकता है, गृहकार्य का अभ्यास भी ऑनलाइन टेस्ट सीरिज के रूप में हो सकता है। जहाँ आवश्यक न हो वहाँ छोटी कक्षाओं में विद्यालय समय में ही ओरल(मौखिक)शिक्षण /मूल्यांकन तक ही गृहकार्य को सीमित रखा जाए।

खेलकूद एवं अन्य विद्यालयी गतिविधियों के संचालन में समूह एवं भीड़ वाले आउटडोर खेल के स्थान पर एकल इंडोर खेलों को बढ़ावा दिया जाए। जहाँ संक्रमण का खतरा कम हो। यदि हो सके तो आगामी सत्र में जिला, राज्य स्तरीय खेलकूद गतिविधियाँ आयोजित नहीं की जावें एवं हो भी तो एकल खेलकूद /सांस्कृतिक/साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन पर्याप्त सुरक्षा के साथ किया जाए। विद्यालयों में भौतिक दूरी का ध्यान रखते हुए योगाभ्यास/व्यायाम का भी आयोजन किया जा सकता है ।

स्वच्छ भारत योजनान्तर्गत स्वच्छ विद्यालय, विद्यालय परिसर, रंगरोगन पर गतवर्षों में अच्छा कार्य हुआ है। सभी कक्षा-कक्ष, सम्पूर्ण विद्यालय परिसर स्वच्छ, सुंदर, विद्यालय पर्यावरणीय सुरक्षा, वृक्षारोपण पर विशेष सुरक्षात्मक उपाय के साथ सभी संभव उपाय किया जाना अपेक्षित है।

मध्याह्न भोजन व्यवस्था में वर्तमान में संचालित भोजन/अन्नपूर्णा दुग्ध योजना की समीक्षा की जानी आवश्यक है, क्योंकि सब्जियों /फल एवं कुक के साथ संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है। इसके स्थान पर छात्रों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले पेक्ड खाद्य सामग्री दिया जाना अधिक उचित होगा।

शाला स्वास्थ्य कार्यक्रम को कोविड-19 के इस संक्रमण काल में अधिक प्रभावी भूमिका का निर्वहन करना अपेक्षित है। प्रत्येक 15 दिन मे विद्यार्थियों का अन्य बीमारियों के साथ कोविड-19 के संदर्भ में स्वास्थ्य जाँच की जानी चाहिए। स्थानीय चिकित्सालय से संपर्क कर प्रत्येक 10/15 दिन मे छात्रों को थर्मल स्केनिंग से जाँच करना बचाव का विकल्प हो सकता है।

अभिभावकों से अपेक्षा रखी जा सकती है कि विद्यालय जाने वाले बच्चों को इस अवधि मे अधिक समय देवें। उनके ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्था में सहयोग करें, संभव हो तो अध्ययन में उनका मार्गदर्शन कर उनका मनोबल बढ़ावें। घर पर गृहकार्य करने में आवश्यक सहयोग करें। नई परिस्थितियों के अनुरूप घर पर एवं विद्यालय में रखी जाने वाली सावधानियों की ओर समय-समय पर वार्तालाप करें। घर पर उनके मनोरंजन, इंडोर खेलकूद, व्यायाम, योगाभ्यास में सहयोगी बनें। उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। उनके खान-पान पोषण पर ध्यान देकर उनकी रोग-प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने पर विशेष बल दिया जाना अपेक्षित है। विद्यार्थी में किसी भी बीमारी के साधारण लक्षण होने पर विद्यालय नहीं भेजे एवं तुरंत चिकित्सक से संपर्क कर इलाज की व्यवस्था करें। सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी बच्चे को विद्यालय तक पहुँचाना एवं विद्यालय से घर तक सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करें, हो सके तो स्वयं या परिवार का कोई सदस्य उन्हें अपने वाहन से पहुँचाने एवं लाने की व्यवस्था करें। छात्र बड़ी कक्षा का है एवं संभव हो तो साइकिल से पूर्ण सुरक्षा के साथ आवागमन सुनिश्चित करें। उनके वॉटर बॉटल एवं टिफिन बॉक्स मे पोषणयुक्त खाद्य सामग्री दी जावे। वर्तमान में इस संक्रमण की स्थिति मे स्कूल बस, ऑटो की व्यवस्था में भी एडवाइजरी के अनुसार डिस्टेंसिंग एवं अन्य प्रतिमानों का ध्यान रखा जाए।

सबसे अधिक समस्या प्राथमिक कक्षाओं के संचालन की है। जब तक कोरोना से संक्रमण का खतरा समाप्त नहीं हो जाता है, तब तक प्राथमिक/पूर्व प्राथमिक विद्यालय संचालन को स्थगित रखना श्रेयस्कर होगा। प्राथमिक कक्षाओं के अभिभावकों की पाक्षिक/मासिक बैठक आयोजित कर उन्हें छात्रों के शिक्षण हेतु आवश्यक मार्गदर्शन के माध्यम से शिक्षण गतिविधियों का घर पर ही अभिभावक द्वारा संचालन किया जाना उपयुक्त होगा।

राजस्थान शिक्षा विभाग ने अपनी प्रतिष्ठा एवं परम्परा के अनुरूप कोरोना संकट काल /ग्रीष्मावकाश मे छात्र हितार्थ ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था के रूप मे Smile Project, आकाशवाणी के माध्यम से शिक्षावाणी कार्यक्रम की व्यवस्था की है। शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा DD Rajasthan पर भी ऑनलाइन शिक्षण हेतु प्रसारण की व्यवस्था की गई। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के द्वारा प्रत्येक कक्षा के लिए पृथक से दूरदर्शन चेनल प्रारम्भ करने की योजना है। लेकिन इन सभी व्यवस्थाओं से कितने छात्र वास्तविक रूप मे लाभान्वित हो पा रहे है, यह विचारणीय है ।

विद्यालय रूपी संस्थान छात्र का भविष्य निर्माण संस्थान है। विद्यार्थी विद्यालय के शैक्षिक वातावरण, व्यवस्थाओं, अपने गुरुजनों एवं सहपाठी छात्रों के साथ अन्तःक्रिया के माध्यम से सीखकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। विद्यालय रूपी संस्थान का ऑनलाइन शिक्षण या अन्य व्यवस्थाएं तात्कालिक विकल्प हैं, स्थायी विकल्प नहीं। अतः स्थितियाँ अनुरूप होने पर देर सवेर विद्यालय को नयी व्यवस्थाओं, नए अनुशासन के साथ अपनी भूमिका का निर्वहन करना है। समय कठिन है, लेकिन सही समय पर सही, व्यावहारिक निर्णय एवं नवीन व्यवस्थाएँ विद्यालय संचालन के संकल्प को पूर्ण तैयारी एवं सुरक्षित उपायों के साथ नवीन सत्र में भी श्रेष्ठता का मार्ग प्रशस्त कर पाएगी।

सेवानिवृत्त शिक्षा उपनिदेशक
निवास-7, अशोक नगर,
डूँगरपुर (राज.)
मो. 9413626402

वैश्विक महामारी

आपदा को अवसर में बदलें

❐ लोकेश कुमार पालीवाल

विद्यालय के गुरुजी और प्रवासी आगंतुक के बीच हुई बातचीत का कुछ अंश इस प्रकार हैः

शिक्षक (फोन पर) : 'आपको मेरी आवाज आ रही है?'

प्रवासी आगंतुक : 'रुकिए, अभी गाड़ी चल रही है, बस रुकते ही आपसे बात करता हूँ।' बस रुकने पर आगंतुक प्रवासी, शिक्षक को फोन लगाते हैं।

शिक्षक : 'आप मोहन लाल जी फरमा रहे हैं?'

प्रवासी आगंतुक : 'हाँ, बोलिए, मैं मोहन लाल ही बोल रहा हूँ।

शिक्षकः 'आप कहाँ तक पहुँच चुके हैं?'

प्रवासी आगंतुकः 'मैं रतनपुर बॉर्डर क्रॉस कर चुका हूँ, मेरे घर जा रहा हूँ।'

शिक्षक : 'आदरणीय, आपसे अनुरोध है कि आप कृपया घर न पधारें।'

प्रवासी आगंतुकः 'क्यों? क्यों नहीं जा सकता मेरे घर, हाँ! पहले ये बताइए आप कौन बोल रहे हैं?

शिक्षकः 'अरे! मोहनजी, मैं तो आपके गाँव की बड़ी स्कूल से बोल रहा हूँ।

प्रवासी आगंतुकः 'अच्छा! तो गुरुजी बोल रहे हैं। ये क्या बात हुई गुरुजी, हमें क्यों परेशान किया जा रहा है? मेरा घर एक तरफ है, फिर मुझे घर क्यों नहीं जाने दिया जा रहा है?

शिक्षकः 'बन्धु! वैश्विक महामारी कोरोना के चलते आपसे अनुरोध है कि कृपया आप सीधे घर नहीं पधारें। मजबूरन आपको घर से क्वारेंटाइन सेंटर भेजना पड़ेगा और उससे आपको कष्ट होगा। फिर, गाँव और आपके परिवार की सुरक्षा के लिए भी यह जरूरी है कि आप सरकार द्वारा बनाए गए क्वारेंटाइन सेंटर पर पधारें। फिर आप कोरोना महामारी के हॉटस्पॉट से पधार रहे हैं, ऐसे में यह जरूरी है कि आप घर न जावें।''

प्रवासी आगंतुकः ''ठीक बात है गुरुजी

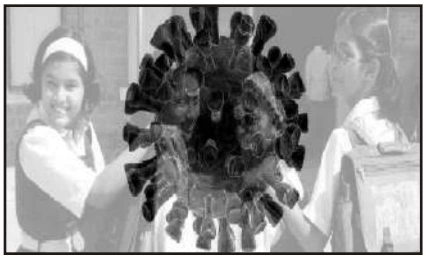

मुसीबत की इस घड़ी में आज हमारे लिए गाँव और मातृभूमि भी पराई हो गई है। आप तो ये बताइए कि रात को आपका ये फोन चालू तो रहेगा न, क्योंकि आपके बताए हुए सेंटर तक पहुँचने में मुझे ज्यादा रात हो सकती है और वहाँ मदद नहीं मिलने पर मैं आपसे कैसे सम्पर्क कर सकूंगा।''

शिक्षकः ''हाँ जी, मेरा फोन सदैव चालू रहेगा, मुसीबत की घड़ी में हम पूरी तरह से आपके साथ हैं। वैसे मैं आपको यह बता दूँ कि आप जहाँ पधार रहे हैं वह सेंटर पूरे 24 घण्टे संचालित है।''

प्रवासी आगंतुकः 'ठीक बात है गुरुजी, आप कहते हैं तो आ जाता हूँ।'

कक्षाकक्षीय गतिविधियों तक सीमित दायरे से परे कई गैर शैक्षिक गतिविधियों को संचालित करने वाले शिक्षक के कंधों पर इस वैश्विक महामारी के चलते आई राष्ट्रीय आपदा में इन दिनों एक नई जिम्मेदारी आ खड़ी हुई है और यह जिम्मेदारी है प्रबंधक और काउंसलर की। इसके चलते आजकल वह असहज होकर तनाव झेल रहा है। सीमित संसाधनों के चलते लगने वाले भय ने इस तनाव में बढ़ोतरी की है, फिर भी शिक्षक सुरसा के मुँह की भाँति बढ़ रही इस महामारी से दो चार हो रहा है। सेवा के प्रतिदिन हरावल दस्ते का नेतृत्व कर रहे हमारे डॉक्टर, पुलिसकर्मी तथा सफाईकर्मी इन सभी को देखकर कई बार उसे अपना गम कम लगता है।

इन तमाम परेशानियों के साथ-साथ कई सुकून देने वाले पल भी नजर आ रहे हैं। हाथों में ब्रश व बाल्टी थामे प्रवासियों को जब रंगाई-पुताई करते और गेंती-फावड़ा पकड़े बागवानी करते देखते हैं तो मन का मयूर जैसे नाचने लगता है। मन में आशा की किरण जागती है कि कहीं न कहीं ये वैश्विक महामारी निश्चित रूप से विद्यालय और समुदाय के बीच सम्बन्धों को मधुर बना रही है।

श्रीमान जी आपकी तबीयत अच्छी है न! हाँ, हाँ मैं देख रहा हूँ, आप मुझे कल से आज ज्यादा बेहतर लग रहे हैं। स्नान के बाद तो चेहरा चमक गया है। यात्रा की थकान कुछ कम हुई न!

भाई साब हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं? आदरणीय आज भोजन कैसा बना? नमक बराबर है न!

साथियों! ये सामान्य शिष्टाचार, न केवल प्रवासियों के भय और चिंता को कम कर रहे हैं वरन शिक्षक और समुदाय के बीच मजबूत नींव रख रहे हैं। लोगों की सरकारी तंत्र में आस्था बढ़ रही है।

आज वैश्विक महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को एक मंच पर ला खड़ा किया है। विश्व के प्रत्येक प्रबुद्ध नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह संकट की इस घड़ी में मानवता की सेवा के लिए आगे आए। यदि वह प्रबुद्ध नागरिक समाज को दिशा देने वाला शिक्षक है तो उसकी तो भूमिका इस दौर में निसंदेह बड़ी हो जाती है। आज वैश्विक महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को भयग्रस्त कर दिया है। हजारों की तादाद में प्रवासी अपनी सम्पत्ति का मोह त्याग, अपनों की चाह में सैकड़ों मील पैदल चल कर आ रहे हैं। शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कष्ट झेल रहे ये लोग समाज से तन, मन और धन से सहयोग की अपेक्षा कर रहे हैं और संकट की इस घड़ी में वे इसके अधिकारी भी हैं। ऐसे में हमें इनके साथ संजीदगी से व्यवहार करना होगा। अभी यह दौर न जाने कितना लम्बा चलेगा। महामारी के आकार और प्रकार के अनुपात में हमारी सेवा का आकार और प्रकार भी बढ़ाना पड़ सकता है। एकजुट होकर प्रेम और करुणा का अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित होकर इस महामारी का खात्मा करना

होगा। कहा भी गया है-मधुवन खुशबू देता है, सागर सावन देता है। जीना उसका जीना है, जो औरों को जीवन देता है। जहाँ एक ओर हमें स्वयं को बचाने की चुनौती है वहीं दूसरी ओर काल कलवित होती ज़िन्दगियों और मानवता को भी बचाना होगा। ज्यादातर देशवासी गरीब और अनपढ़ हैं। ऐसी स्थिति में हमारी भूमिका बढ़ जाती है।

वास्तव में प्रवासी लोग स्वयं आत्म ग्लानि और भय से ग्रस्त हैं। कोई आपको छुए नहीं, छह फीट दूर से बात करें तो इसमें बड़ी पीड़ा क्या हो सकती है यदि मेरे कारण कोई अदृश्य दुश्मन मेरे गाँव और परिवार को काल का ग्रास बनाए तो इससे बड़ा भय क्या हो सकता है? ऐसी स्थिति में हमारी मनोबल बढ़ाने वाली सकारात्मक काउंसलिंग ही मददगार हो सकती है। डाँट-फटकार कोढ़ में खाज का काम करेंगे, इनसे बचना होगा। प्रेम से वह शीघ्र समझ जाएगा। मीठी वाणी और अच्छा भोजन इसमें मददगार होगा।

मशहूर कार्डियक सर्जन एवं नारायणा हेल्ड के चेयरमैन डॉ. देवि शेट्टी ने कहा कि अच्छा भोजन और मुफ्त वाई फाई ही लोगों को क्वारेंटाइन सेंटर पर रोक पाएगी।

आइए! हम शिक्षक ग्राम पंचायत से मिलकर तन, मन, धन से लोगों की तकलीफें दूर करें। कोविड-19 की इस चुनौती को हमें अवसर के रूप में लेना होगा। ये अवसर है विद्यालय और समुदाय के गठजोड़ को मजबूत करने का, ये अवसर है सेवा करके मेवा पाने का। निश्चित ही आज की सेवा कल मेवे में प्रतिफलित होगी। ये ही प्रवासी कल कंधे से कन्धा मिलाकर विद्यालय की काया पलटने में मददगार होंगे। आने वाले समय में इन्हीं के बच्चों के प्रवेश से हमारे विद्यालय की बगिया अधिक गुलजार होकर महकेगी। सेवा के इस अवसर को लाभ में बदलें। सुंदर कहा गया है-

किसी के काम जो आए उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द जो अपनाएँ उसे इंसान कहते हैं।।

सभी के सहयोग से इस कोरोना को भगाने में हम अवश्य कामयाब होंगे।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोशीवाड़ा,
खमनोर (राजसमन्द)

संकल्प-सफलता

संकल्प से सफलता

❐ **भंवर सिंह**

संकल्प का अर्थ है कि अब मैं इस कार्य को पूरी ईमानदारी व लगन के साथ पूरा करूँगा। इस प्रकार की दृढ़ता ही संकल्प है। कभी भी विद्यार्थी को अपने आप को कमजोर नहीं समझना चाहिए कि मैं साधनों के अभाव में आगे नहीं बढ़ सकता हूँ। ऐसे कमजोर विचारों का परित्याग कर दीजिए क्योंकि शक्ति का स्रोत साधनों में नहीं है बल्कि संकल्प में है। यदि सफलता प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ने की प्रबल इच्छा शक्ति तेज होगी तो आपको जिन साधनों का आज अभाव दिखाई पड़ता है भविष्य में वे निश्चय ही दूर हुए दिखाई देंगे। दृढ़ संकल्प से कम साधनों में भी मनुष्य अधिकतम विकास कर सकता है।

विद्यार्थी में भी असाधारण शक्तियों का भण्डार छिपा हुआ है। आप अपने आप को साधारण मनुष्य मानते हैं। वास्तविक कमजोरी यह है कि अभी हमें स्वयं को अपने ऊपर विश्वास नहीं है। जबकि प्रत्येक विद्यार्थी में शारीरिक, मानसिक शक्ति विद्यमान रहती है। वास्तव में सफल वही होता है जो लगातार ईमानदारी से मेहनत व परिश्रम करता है तथा एक लक्ष्य बनाकर उस पर परिश्रम करता है जिससे ही वह अपना भाग्य बदल सकता है। कार्य करने की इच्छा ही एक प्रबल शक्ति है जो अपना मार्ग खोज ही निकालती है। कभी भी विकट परिस्थिति से हार नहीं माननी चाहिए बल्कि जितनी कठिन परिस्थिति हो उतना ही अधिक धैर्य और साहस से आदमी सफल होता है। सफलता का मूल कारण इच्छा शक्ति ही है।

मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसकी इच्छा शक्ति ही है। क्योंकि यही जीवन का लक्ष्य और कर्म होता है जहाँ इच्छा नहीं वहाँ कर्म नहीं और जहाँ इच्छा है वहाँ कर्मों का होना अनिवार्य है। सब इच्छाएँ संकल्प की सीमा को स्पर्श नहीं कर पाती उनमें पूर्ति का बल नहीं होता है अतः वे नगण्य मानी जाती है। किन्तु वे इच्छाएँ बुद्धि, विचार और दृढ़ भावना द्वारा जब परिष्कृत हो जाती है तो संकल्प बन जाती है। ध्येय सिद्धि के लिए इच्छा की अपेक्षा संकल्प में अधिक शक्ति होती है। संकल्प उस दुर्ग के समान है जो भयंकर व्यवधान, दुर्बल एवं डांवाडोल परिस्थितियों से भी रक्षा करता है और सफलता के द्वार तक पहुँचने में मदद करता है। प्रत्येक विचार का एक निश्चित स्वरूप होता है जो दूसरे के साथ मिलकर और भी शक्तिशाली बनता है। इस तरह के अनेक संकल्प-विकल्प इस जगत में विद्यमान है पर उनका लाभ मनुष्य को तब मिल पाता है जब वह पूर्ण मनोयोगपूर्वक किसी इच्छा की पूर्ति की ओर प्रवृत्त होता है।

विद्यार्थी संकल्प के साथ परीक्षा की तैयारी में पूरी निष्ठा से लगा रहता है और लगातार परिश्रम और मेहनत से अध्ययन करता है तो उसमें उसको अवश्य ही सफलता मिलती है। सच्चाई यह है कि केवल वे ही इच्छाएँ पूरी होती हैं जिनके साथ सशक्त प्रयास भी जुड़े हों यहाँ शक्ति का अर्थ उद्देश्य के प्रति निष्ठा और उसे पूरा करने के लिए आवश्यक बाधाओं से संघर्ष का मनोबल और साहस है। इनके बिना संकल्प कभी भी शक्ति नहीं बन पाते हैं। समय परिवर्तनशील है जीवन में उतार चढ़ाव चलता रहता है लेकिन संकल्पशील विद्यार्थी किसी भी परिस्थिति में बिना विचलित हुए संकल्प शक्ति के साथ अपना मकाम आसानी से प्राप्त करता है जो परिस्थितियों का दास है वह कभी भी अच्छा परिणाम प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए कभी भी जीवन में निराशा का भाव नहीं लाना चाहिए। प्रत्येक कार्य को उत्साह एवं पूर्ण ऊर्जा के साथ करना चाहिए जिससे सफलता आपके द्वार पर होगी।

विद्यार्थी के जीवन में आत्मविश्वास, संकल्प शक्ति, दृढ़ इच्छा, कठोर परिश्रम तथा लगातार अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ना ही सफलता का आगाज होता है। अपने समय का ज्यादा से ज्यादा सदुपयोग करके अपना लक्ष्य प्राप्त करना ही सफलता है। वो सिर्फ संकल्प से ही प्राप्त की जा सकती है।

शारीरिक शिक्षक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा,
लाडखानी, सीकर **मो: 9414901203**

प्रकृति विशेष

पर्यावरण एवं जल संरक्षण

❒ स्नेहलता शर्मा

प्यारे बच्चो! गर्मियों की छुट्टियों के बाद अब स्कूल खुलने जा रहे हैं। गर्मी की छुट्टियों में पढ़ाई के साथ, नाना-नानी, मामा-मामी, दादा-दादी एवं अन्य रिश्तेदारों से मिलने गए होंगे। काफी मौज मस्ती करने के बाद हमें पुनः पढ़ाई में ध्यान देना हैं।

प्यारे बच्चों जैसा कि हम जानते हैं कि अब बारिश का मौसम प्रारम्भ हो चुका है और स्कूल भी खुलने जा रहे हैं। अब हमें पढ़ाई के साथ बारिश के मौसम में घर के आसपास, पार्क में, स्कूल में या अन्य उपयुक्त स्थान पर एक-एक पौधा लगाकर पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करना है। पौधा लगाकर उसकी सुरक्षा करना अति आवश्यक है। इसी वर्ष अगर एक विद्यार्थी एक पौधा लगाने का संकल्प लेता है तो यह पर्यावरण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

वृक्ष लगाने के लाभः- हम यहाँ वृक्ष लगाने के लाभ के बारे में भी चर्चा करेंगे जिनसे निम्न लाभ प्राप्त होंगे।

- वृक्ष लगाने से वायुमण्डल में प्राणवायु (ऑक्सीजन) की वृद्धि होती है।
- वृक्ष पर्यावरण को संतुलित बनाए रखते हैं। इससे समय पर वर्षा होती है और सर्दी, गर्मी, वर्षा और वसन्त का मौसम निर्धारित समय पर आते हैं। तेज आँधी, तूफान, सुनामी जैसी विनाशकारी गतिविधियाँ नहीं होती हैं।
- वृक्ष से धरती का पानी का स्तर ऊपर बढ़ता हैं। बड़े-बड़े पेड़ों की जड़ें गहरी होती है वो स्वतः ही धरती से सीधे पानी पीती हैं और जड़ें पानी को ऊपर खींचती हैं। जिससे धरती के पानी का स्तर ऊपर उठता है।
- वृक्ष से आसपास के क्षेत्र में नमी बनी रहती है और मिट्टी का कटाव भी नहीं होता है।
- वृक्षों से हमें फल-सब्जियाँ, जड़ी-बुटियाँ, औषधियाँ और ईंधन प्राप्त होता है। जिससे मानव जीवन जीवित रहता है।
- हरियाली देखने से आँखों की ज्योति बढ़ती है और मानसिक संतोष की अनुभूति होती है।

जल के बारे में श्लोगन हैं-

1. जल है तो जीवन है।
2. जल है तो कल है।
3. कल के लिए जल को आज बचाएँ।

जल पृथ्वी पर सीमित है। उसे बचाने की जिम्मेदारी हम सभी की हैं। जल को दुनिया की किसी भी लैब में नहीं बनाया जा सकता है। पानी की एक-एक बूँद को बचाकर हम सीमित जल से आने वाले कल एवं आगे आने वाली पीढ़ी को बचा सकते हैं।

निम्न तरीकों द्वारा जल को बचाया जा सकता हैं-

- सबसे ज्यादा पानी का दुरुपयोग घरों में एवं कार्यालयों में लगे आर.ओ. से होता है। इसमें साफ पानी की अपेक्षा खराब पानी ज्यादा व्यर्थ बाहर निकलता हैं। इस व्यर्थ बहते पानी को एकत्र करके उसे विभिन्न कार्यो में जैसे- कपड़े धोने, पेड़ में पानी देने, बर्तन साफ करने अथवा फर्श पर पौछा लगाने अथवा शौचालय में प्रयोग किया जा सकता है और बड़ी मात्रा में पानी की बचत की जा सकती है।
- वर्षा के जल को एकत्रित कर विभिन्न कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है। यह पीने के लिए शुद्ध जल होता है।
- शौचालय में शौच के पश्चात पर्याप्त मात्रा में पानी डालें, फालतू पानी नहीं डालें।
- नहाने के लिए एक बाल्टी पानी पर्याप्त होता है। बाथ टप का प्रयोग करने से बहुत ज्यादा पानी व्यर्थ होता है। बाथ टप का प्रयोग नहीं करे।
- पेस्ट करते समय एवं शैविंग करते समय प्रायः नल को खुला ही छोड़ देते हैं इससे बहुत सा पानी व्यर्थ होता हैं इसलिए पेस्ट एवं शैविंग करते समय नल को बन्द रखे।
- घर को रोज-रोज धोने के बजाय पौंछे से साफ करे इससे काफी पानी को बचाया जा सकता है।
- कार, मोटर साइकिल को सीधे नल से पाइप लगाकर नहीं धोना चाहिए। एक बाल्टी में पानी लेकर पौंछे से साफ कर पानी की मात्रा को बचाया जा सकता है।
- कार, मोटर साइकिल सर्विस सेन्टर पर सर्विस के दौरान काफी मात्रा में पानी को नालियों में बहा दिया जाता है उन्हें भी पानी का महत्त्व समझाकर पानी बचाने की बात समझाने की महती जरूरत है।
- गली, मौहल्ले, स्कूल, घर कहीं भी पानी का नल खुला है तो तुरन्त प्रभाव से बन्द करें।
- कहीं भी पानी की छोटी-बड़ी लाइन टूटी दिखे तो तुरन्त पी.एच.ई.डी. विभाग अथवा पुलिस को सूचित करने का श्रम करें।
- पानी की बचत को इस दृष्टि से भी देखा जा सकता है। पहले ट्यूबवैल से खेती की जाती थी लेकिन अब अधिकांश स्प्रिंगलर पाइप (फव्वारों द्वारा) खेती की जाती है इससे काफी पानी की बचत की जाती है।
- पानी से ही बिजली बनाई जाती है। अगर पानी नहीं होगा तो बिजली नहीं बन पाएगी और बिजली नहीं होने से हमारा जीवन चक्र बुरी तरह प्रभावित होगा।

अतः उक्त बिन्दुओं के माध्यम से हम वृक्ष लगाकर जल संरक्षण कर आने वाले कल को सुरक्षित रख सकते हैं। यह कार्य सभी का है लेकिन इसमें सबसे अच्छी भूमिका विद्यार्थी निभा सकते हैं। इस वर्षा के मौसम में एक व्यक्ति एक वृक्ष और जल संरक्षण का संकल्प लें। सबसे बड़ा धन और आत्म संतुष्टि के लिए यह कार्य करें। अपनी आँखों के सामने बढ़ते वृक्ष को देखने से मानसिक सन्तोष प्राप्त होगा और मानसिक संतोष सबसे बड़ा संतोष है।

तो फिर देर किस बात की? उठो जागो और इसकी शुरूआत के लिए उपयुक्त सुरक्षित स्थान का चयन करो और वृक्ष की सुरक्षा की व्यवस्था करके शुभारम्भ करो।

विशेष शिक्षिका
चिल्ड्रन एकेडमी, सी.सै. स्कूल, बनीपार्क, जयपुर
मो: 9928388935

आदेश-परिपत्र : जुलाई, 2020

1. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के सम्बन्ध में।
2. समान परीक्षा योजनान्तर्गत गृह परीक्षा एवं कक्षा कक्षोन्नति नियमों के संबंध में निर्देश।
3. पे-मैनेजर पर उपलब्ध कार्मिकों के डाटा में संशोधन के सम्बन्ध में।
4. द्वितीय वेतन शृंखला एवं समकक्ष पदों हेतु जारी वरिष्ठता सूचियों में योग्यता अभिवृद्धि के इन्द्राज हेतु निर्देश देने बाबत।
5. शाला दर्पण पोर्टल पर सूचनाओं के अपलोड/अपडेट करने लिए दायित्व निर्धारण के संबंध में।
6. शिक्षा विभागीय कार्यालयों में संस्थापन अधिकारी एवं प्रशासनिक अधिकारियों का कार्य निर्धारण।
7. राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत समायोजित कार्मिकों को सेवानिवृत्ति पर देय अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के सम्बन्ध में।

1. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के सम्बन्ध में

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/छा.प्रो.प्र./सेल-E/विद्यार्थी दुर्घटना बीमा/2018-19 दिनांकः 11.03.2020 ● परिपत्र ● विषयः विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के सम्बन्ध में।

विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में वर्ष 1996 से लागू की गई तथा सत्र 2011 में योजना का नवीनीकरण किया गया। उक्त योजना राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु लागू है। इसके अन्तर्गत कक्षा 01 से 12 तक राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी सम्मिलित है।

- **योजना का उद्देश्यः** राज्य के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की दुर्घटना में मृत्यु अथवा शारीरिक क्षतियों की दशा में विद्यार्थियों के माता/पिता/संरक्षक को बीमा लाभ उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से प्रारम्भ की गई।
- **योजना हेतु विद्यार्थी की परिभाषाः** विद्यार्थी से तात्पर्य दुर्घटना के दिन राजस्थान राज्य में स्थित किसी भी राजकीय विद्यालय की नामांकन पंजिका में दर्ज विद्यार्थी से है। राज्य सरकार द्वारा संचालित राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी इस योजना में शामिल है।
- **योजना के कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुः-**

1. बीमा का संचालन राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग राजस्थान, जयपुर (साधारण बीमा योजना) द्वारा किया जा रहा है।
2. योजना का नवीनीकरण प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को किया जाता है।
3. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत दुर्घटना में विद्यार्थी की मृत्यु अथवा अन्य शारीरिक क्षतियों की दशा में योजना के प्रावधानों के अनुसार राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग (साधारण बीमा योजना) द्वारा जारी परिपत्र (संलग्न) व प्रतिवर्ष जारी पॉलिसी के अनुसार ही बीमाधन भुगतान किया जाता है।

- **आवश्यक दस्तावेज एवं प्रक्रियाः-** दुर्घटना की स्थिति में राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा जारी दावा प्रपत्र/ छात्र/अभिभावक संरक्षक के द्वारा प्रधानाध्यापक/ प्रधानाचार्य स्वयं हस्ताक्षरित कर सम्बन्धित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी/जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय/जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक मुख्यालय शिक्षा के प्रति हस्ताक्षर एवं अग्रेषण पत्र के साथ सम्बन्धित जिले के राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, कार्यालय को अविलम्ब प्रेषित करें। प्रकरण के साथ निम्नांकित दस्तावेज संलग्न करें:-

1. बीमा के क्लेम करने हेतु राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा जारी दावा प्रपत्र (संलग्न)
2. एफ.आई.आर. की प्रति।
3. पोस्टमार्टम की रिपोर्ट की प्रति।
4. मृत्यु प्रमाण पत्र।
5. संस्थाप्रधान का प्रमाण पत्र।
6. दावेदार के बैंक पासबुक की प्रति।
7. विद्यालय द्वारा विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना की फीस के चालान की प्रति।

● संलग्नः उपर्युक्तानुसार

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

राजस्थान सरकार
कार्यालय निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, राजस्थान, जयपुर

'विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना'
(राजकीय विद्यालय)
कक्षा 1 से 12 तक

1. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु लागू है। इसके अंतर्गत कक्षा 1 से 12 तक के समस्त विद्यार्थी सम्मिलित है।
2. **योजना का उद्देश्यः** राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों के

विद्यार्थियों की दुर्घटना में मृत्यु अथवा शारीरिक क्षतियों की दशा में विद्यार्थियों के माता/पिता/संरक्षक को बीमा लाभ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई है।

3. योजना के संबंध में कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुः-

i. योजना का संचालन राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग (साधारण बीमा योजना) द्वारा किया जा रहा है।

ii. इस योजना के अन्तर्गत राजकीय विद्यालयों के कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों हेतु बीमाधन 1 लाख रुपये निश्चित किया गया।

iii. योजना का नवीनीकरण प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त से किया जाता है।

iv. विद्यार्थी की मृत्यु अथवा योजना में उल्लिखित क्षतियों की स्थिति में पॉलिसी के प्रभावी रहने तक भारत में किसी भी स्थान और समय पर दुर्घटना घटित होने पर योजना का लाभ देय होगा।

v. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत दी जाने वाली क्षतिपूर्ति राशि अन्य किसी भी विधि विधान के अन्तर्गत दी जाने वाली क्षतिपूर्ति राशि के अतिरिक्त होगी।

vi. मृत्यु अथवा शारीरिक क्षति दोनों ही परिस्थितियों में दावा राशि विद्यार्थी के माता/पिता/संरक्षक को ही देय होगी।

vii. राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग के संयुक्त/उप/सहायक निदेशक के कार्यालय जिला स्तर पर स्थित है। समस्त दावों का निस्तारण जिला कार्यालयों द्वारा किया जाता है।

viii. विभाग द्वारा प्रति दावेदार के बैंक खाते में भुगतान किया जाता है।

ix. दावा प्रपत्र दुर्घटना की तिथि से छः माह के अन्दर इस विभाग के संबंधित जिला कार्यालय में प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है।

x. पॉलिसी अवधि में एक से अधिक दुर्घटना के होने पर बीमाधन से अधिक कुल राशि का भुगतान नहीं किया जा सकेगा।

4. योजना हेतु विद्यार्थी की परिभाषाः विद्यार्थी से तात्पर्य दुर्घटना के दिन राजस्थान स्थित किसी भी राजकीय विद्यालय की नामांकन पंजिका में दर्ज विद्यार्थी से है। राज्य सरकार द्वारा संचालित राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी इस योजना के अन्तर्गत शामिल है।

5. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत दुर्घटनाओं में विद्यार्थी की मृत्यु अथवा अन्य शारीरिक क्षतियों की दशा में योजना के प्रावधानों के अनुसार बीमाधान भुगतान किया जाता है।

योजना के अन्तर्गत दुर्घटना में हुई क्षति से आशय किसी ऐसी शारीरिक चोट से है, जो बाह्य, हिंसात्मक एवं दृश्य माध्यम (External Violent and Visible Means) द्वारा लगी हो। शारीरिक चोट संदर्भित दुर्घटना से ही उत्पन्न हुई होनी चाहिए एवं दुर्घटना से पूर्व अस्तित्व में नहीं होनी चाहिए। स्पष्ट योजना के अन्तर्गत केवल उन्हीं प्रकरणों पर विचार किया जाएगा। जन्म, मृत्यु अथवा शारीरिक क्षतियाँ दुर्घटना से उत्पन्न होती है। यह स्पष्ट किया जाता है कि मृत्य/क्षति का सीधा संबंध दुर्घटना से होना चाहिए। विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना का लाभ निम्न प्रकार की क्षतियों पर देय होगा-

क्र. सं.	दुर्घटना में हुई क्षति का प्रकार	दुर्घटना पर देय लाभ/ बीमाधन प्रतिशत
1.	दुर्घटना में मृत्यु हो जाने पर	1,00,000 रुपये
2.	दुर्घटना में दोनों हाथों या दोनों पैरों या दोनों आँखों या एक हाथ एवं एक आँख अथवा एक पैर एवं एक आँख अथवा एक पैर एवं एक हाथ की क्षति पर	1,00,000 रुपये
3.	दुर्घटना में एक हाथ अथवा एक पैर अथवा एक आँख की क्षति पर	50,000 रुपये
4.	उपर्युक्त क्षति के अलावा अन्य प्रकार की शारीरिक क्षति से बीमाकृत विद्यार्थी के सम्पूर्ण रूप से अयोग्य होने की दशा में	1,00,000 रुपये
5.	आंशिक क्षति की दशा में	
अ.	श्रवण शक्ति की क्षति की दशा में	
	1. श्रवण शक्ति की पूर्ण क्षति (दोनों कानों की क्षति)	50,000 रुपये
	2. श्रवण शक्ति की क्षति (एक कान की पूर्ण क्षति)	15,000 रुपये
ब.	एक हाथ के अंगूठे एवं अंगुलियों की क्षति	
	1. एक हाथ के अंगूठे एवं चारों अंगुलियों (समस्त अंगुलास्थियों की क्षति)	40,000 रुपये
	2. एक हाथ के अंगूठे के अतिरिक्त चारों अंगुलियों (समस्त अंगुलास्थियों की क्षति)	35,000 रुपये
स.	हाथ के अंगूठे की क्षति-	
	1. दोनों अंगुलास्थियों की क्षति	25,000 रुपये
	2. एक अंगुलास्थि की क्षति	10,000 रुपये
द.	हाथ के अंगूठे के अतिरिक्त अन्य अंगुलियों की क्षति	
	1. किसी भी अंगुली की समस्त अंगुलास्थियों की क्षति	10,000 रुपये
	2. किसी भी अंगुली की दो अंगुलास्थियों की क्षति पर	8,000 रुपये
	3. किसी भी अंगुली की एक अंगुलास्थि की क्षति पर	4,000 रुपये
य.	पाँव के अंगूठे एवं अंगुलियों की क्षति की दशा में	
	1. दोनों पाँवों की समस्त पावांगुलियों की क्षति (समस्त अंगुलास्थियों की क्षति)	20,000 रुपये
	2. पांव के एक अंगूठे की क्षति (दोनों अंगुलास्थियों की क्षति)	5,000 रुपये
	3. पाँव के एक अंगूठे की क्षति (एक अंगुलास्थि की क्षति)	2,000 रुपये
	4. अंगूठे के अतिरिक्त पाँव की एक अथवा अधिक अंगुलियों की क्षति (दोनों अंगुलियों की क्षति)	1,000/- प्रति अंगूली
र.	जलने के कारण क्षति	
	1. सम्पूर्ण शरीर के 50 प्रतिशत या अधिक जलने पर	50,000 रुपये
	2. सम्पूर्ण शरीर के 40 प्रतिशत से अधिक किन्तु 50	40,000

	प्रतिशत से कम जलने पर	रुपये
	3. सम्पूर्ण शरीर के 30 प्रतिशत से अधिक किन्तु 40 प्रतिशत से कम जलने पर	30,000 रुपये
ल.	उपर्युक्त के अतिरिक्त दुर्घटना में आयी चोट के परिणामस्वरूप 24 घण्टे से अधिक चिकित्सालय (सरकारी या प्राइवेट) में भर्ती रहने पर	अधिकतम 5,000 रुपये तक

उक्त योजना में पॉलिसी अवधि के दुर्घटनावश मृत्यु होने अथवा क्षति होने पर 100% बीमाधन से अधिक लाभ देय नहीं होगा।

6. **अपवर्जन (जिन परिस्थितियों में लाभ देय नहीं है।):-** योजना के अन्तर्गत प्राकृतिक रूप से बीमारी के कारण से होने वाली मृत्यु अथवा शारीरिक क्षतियों पर लाभ देय नहीं होगा।

उदाहरणार्थ-

(क) हृदय गति रूक जाने से होने वाली मृत्यु।

(ख) विभिन्न बीमारियों जैसे कैंसर, टीबी इत्यादि से होने वाली मृत्यु अथवा अन्य क्षतियाँ।

(ग) आत्मक्षति, आत्महत्या या आत्महत्या का प्रयास, पागलपन अथवा किसी विद्यार्थी द्वारा नशीले द्रव्य के प्रयोग के प्रभाव से होने वाली क्षति।

(घ) चिकित्सा अथवा शल्य क्रिया के दौरान होने वाली मृत्यु अथवा क्षति।

(ङ) नाभिकीय विकीरण अथवा परमाण्विक अस्त्रों से होने वाली मृत्यु अथवा क्षति।

(च) युद्ध, विदेशी आक्रमण, विदेशी शत्रु के कृत्यों, गृह युद्ध, देश द्रोह अथवा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से होने वाली मृत्यु अथवा क्षति।

(छ) विद्यार्थी द्वारा आपराधिक उद्देश्य से विधि द्वारा निर्धारित कानून का उल्लंघन करते समय हुई मृत्यु अथवा क्षति।

7. **विद्यार्थी सुरक्षा बीमा योजना के अन्तर्गतः-**

1. हाथ की क्षति से आशयः- हाथ की कलाई से अथवा ऊपर से पार्थक्य।
2. पैर की क्षति से आशयः- पैर की एड़ी अथवा ऊपर से पार्थक्य

8. **पॉलिसी संचालन हेतु प्रक्रियाः-**

i. योजना के अन्तर्गत विद्यालयों में चालू शिक्षण सत्र के सभी नामांकित विद्यार्थियों को इस योजना के अन्तर्गत लाभ मिलेगा।

ii. दुर्घटना में हुई क्षति/हानि के लिए दावों के निस्तारण का कार्य राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि (साधारण बीमा निधि) विभाग के जिला कार्यालयों द्वारा किया जाएगा।

iii. दुर्घटना की स्थिति में दावा प्रपत्र छात्र/अभिभावक/संरक्षक के द्वारा दुर्घटना के प्रधानाध्यापक/प्राचार्य से हस्ताक्षरित एवं सम्बन्धित ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी/जिला शिक्षा अधिकारी से प्रति हस्ताक्षरित होकर इस विभाग के जिला कार्यालय में प्राप्त होना आवश्यक है।

iv. दुर्घटना में मृत्यु की स्थिति में मृत्यु दावा प्रपत्र के प्रत्येक कॉलम की पूर्ति की जावे तथा दावेदार (माता, पिता, संरक्षक) द्वारा हस्ताक्षर किए जाए। दावा प्रपत्र के साथ मृत्यु प्रमाण पत्र पुलिस में दर्ज कराई गई रिपोर्ट एवं पोस्टमार्टम रिपोर्ट की प्रमाणित प्रति तथा अन्य वांछित दस्तावेजों की प्रति संलग्न की जावे।

v. दुर्घटना में हुई शारीरिक क्षति एवं चिकित्सा व्यय की स्थिति में दावा प्रपत्र के प्रत्येक कॉलम की पूर्ति की जावे तथा दावेदार द्वारा हस्ताक्षर किए जाए। यदि दावेदार बालिग नहीं है तो माता, पिता, संरक्षक द्वारा हस्ताक्षर किए जाए। दावा प्रपत्र के साथ पुलिस में दर्ज कराई गई रिपोर्ट की प्रति, डॉक्टर का प्रमाण पत्र तथा चिकित्सा परिचर्या एवं डिस्चार्ज टिकिट व बिलों की प्रमाणित प्रति संलग्न की जाए।

vi. विद्यार्थी का विद्यालय के नामांकन रजिस्टर में दुर्घटना के माह में नाम दर्ज होना व प्रधानाध्यापक या प्राचार्य द्वारा यह प्रमाणित किया जाना कि संबंधित विद्यार्थी दुर्घटना के समय विद्यालय का विद्यार्थी रहा है जोखिम वहन हेतु पर्याप्त प्रमाण होगा।

vii. राज्य बीमा विभाग के संयुक्त/उप/सहायक निदेशक द्वारा विद्यालय के प्रधानाध्यापक या प्राचार्य के प्रमाण पत्र प्राप्त कर इसके पैरा (4) अथवा (5) में वांछित दस्तावेजों के आधार पर यह निर्णय किया जाएगा कि विद्यार्थी का दावा इस पॉलिसी के अन्तर्गत क्षतिपूर्ति हेतु योग्य है अथवा नहीं। तदनुसार ही भुगतान हेतु कार्यवाही की जाएगी।

viii. विभाग के जिला कार्यालय के निर्णय से असंतुष्ट होने की स्थिति में दावेदार द्वारा निर्णय की दिनांक से 3 माह की अवधि में निर्णय के रिव्यू/रिविजन हेतु निदेशक राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग के समक्ष प्रार्थना पत्र प्रेषित किया जा सकेगा।

....

राजस्थान सरकार

राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग (साधारण बीमा निधि)

राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना का दावा प्रपत्र

(विद्यार्थी के माता/पिता/संरक्षक/दावेदार द्वारा भरा जावे)

1. अ. विद्यार्थी का नाम, कक्षा एवं जन्म दिनांक....................
   ब. पिता/माता/संरक्षक/दावेदार का नाम......................
   स. नामांकन संख्या/दिनांक..................................
2. अ. दावेदार (पिता/माता/संरक्षक का नाम) ....
   ब. बीमित विद्यार्थी से संबंध..................................
   स. बीमित विद्यार्थी के घर का पता.............................
3. अ. बीमित विद्यार्थी के विद्यालय का नाम व पता.................
   ब. दुर्घटना से पूर्व शारीरिक अपंगता का विवरण................

4. अ. दुर्घटना का समय एवं दिनांक................................
   ब. दुर्घटना का स्थान..
   स. दुर्घटना का पूर्ण विवरण..................................
   (यहाँ दुर्घटना के संबंध में समस्त .... विवरण यथा दुर्घटना किस परिस्थिति में व .... कैसे घटित हुई निर्दिष्ट करें) ....
   द. क्या दुर्घटना से पूर्व बीमित द्वारा किसी नशीले द्रव्य का सेवन किया गया था? ....
   य. चिकित्सालय का नाम, जहाँ उपचार किया गया।............
5. क्या दुर्घटना से सम्बन्धित पुलिस रिपोर्ट करवाई थी, क्या संलग्न कर दी गई?..
6. योजना के अन्तर्गत पूर्व में कोई लाभ प्राप्त किया गया है अथवा नहीं। (यदि हाँ तो कारण, राशि व दिनांक देवें।)....................
7. (केवल मृत्यु की स्थिति में पूर्ति हेतु)
   अ. मृत्यु का समय, दिनांक एवं स्थान..........................
   ब. मृत्यु प्रमाण पत्र संलग्न करें ....
   स. क्या मृत्यु का पोस्टमार्टम किया गया था यदि हाँ तो क्या पोस्टमार्टम रिपोर्ट की प्रति संलग्न कर दी गई है।..............
8. (क्षति की स्थिति में पूर्ति हेतु)
   अ. ईलाज करने वाले चिकित्सक का प्रमाण-पत्र...............
   ब. दवाइयों/जाँच के मूल बिल ....
   स. चिकित्सालय का डिस्चार्ज टिकिट..........................

मैं प्रमाणित करता/करती हूँ कि मैं.................... (विद्यार्थी का नाम) का/की............(संबंध) हूँ एवं श्री/कुमारी............ की मृत्यु/क्षति के संबंध में वर्णित उपर्युक्त तथ्य मेरी जानकारी के अनुसार सही है एवं उपर्युक्त दुर्घटना से सम्बन्धित मुझे ज्ञात कोई तथ्य मैंने छुपाया नहीं है। यदि उपर्युक्त विवरण भविष्य में असत्य पाया जाए तो इसके लिए मैं व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होऊँगा/होऊँगी।

दिनांक　　　　　　　　दावेदार के हस्ताक्षर एवं पूरा नाम

....

विमुक्ति पत्र
(दावेदार द्वारा पूर्ति किया जाए)

मैं श्री/श्रीमती/कुमारी (विद्यार्थी का नाम)............. के जीवन पर जारी की गई विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत भुगतान के संबंध में समस्त अधिकारों को निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग के साधारण बीमा निधि इकाई को हस्तान्तरित करता/करती हूँ।

स्थान :　　　　　　　　हस्ताक्षर दावेदार

दिनांक :　　　　　　　　पूरा नाम.................

हस्ताक्षर प्रमाणित
(राजपत्रित अधिकारी द्वारा)

....

संस्थाप्रधान द्वारा प्रमाणीकरण

मैं यह प्रमाणित करता/करती हूँ कि दुर्घटना के संबंध में वर्णित उपर्युक्त तथ्य मेरी जानकारी के अनुसार सही है। श्री/कुमारी........... (विद्यार्थी का नाम) इस संस्था में कक्षा...................का विद्यार्थी है/था एवं विद्यार्थी का नामांकन संख्या..........दिनांक ....है। दुर्घटना से पूर्व विद्यार्थी किसी हाथ, पाँव, कान, आँख की अपंगता से ग्रस्त था/नहीं था (यदि था तो विवरण अंकित करें)। विद्यार्थी सुरक्षा बीमा योजना के अन्तर्गत बीमित था एवं दावेदार बीमित विद्यार्थी का/की....... (संबंध) है। बीमेदार की मृत्यु दिनांक......को............(कारण) से हो गई है। विद्यार्थी की जन्म तिथि विद्यालय रिकॉर्ड के अनुसार.........है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि उक्त विद्यार्थी का प्रीमियम बैंक डीडी संख्या..........दिनांक....... के द्वारा राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग के..........कार्यालय में दिनांक...........को जमा कराया गया था एवं विभाग द्वारा जारी पॉलिसी संख्या .... दिनांक.............के साथ संलग्न सूची में क्रम संख्या...............पर उक्त विद्यार्थी का नाम अंकित है। (अनुदानित/गैर अनुदानित शिक्षण संस्था से संबंधित होने पर पूर्ति करें।)

हस्ताक्षर
प्राचार्य/प्रधानाध्यापक
मोहर सहित

प्रति हस्ताक्षर
ब्लॉक शिक्षा अधिकारी/जिला शिक्षा अधिकारी
मय मुहर
(केवल राजकीय विद्यालय की स्थिति में)

(दावा प्रपत्र 6 महीने में भरकर जमा करवाना होगा)

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
STATE INSURANCE PROVIDENT FUND DEPARTMENT
(GENERAL INSURANCE FUND)
2nd FLOOR: 'D' BLOCK,VITTA BHAWAN JANPATH, JAIPUR.
PHONE 2740219.2740292

STUDENT SAFETY ACCIDENTAL INSURANCE POLICY
(CLASS 1 TO 8)
Policy No. GIF/81/SSI/2019-20/07

WHEREAS the Insured named in the Schedule hereto (hereinafter called the insured has made and/or caused to be made to the State Insurance & Provident Fund Department (General lusurance Fund), Jaipur (hereinafter called the General Insurance Fund) proposals and/or declaration dated as slated in the Schedule hereto which together with any statements and warranties contained therein shall be the basis of this contract and is/are deemed to be incorporated herein, for the insrance hereinafter set forth in respect of persons detailed in the Schedule of insured Persons (hereinafter called the Insured Persons).

NOW THIS POLICY WITNESS ETH that subject to and in consideration of the payment made or agreed to pay to the General Insurance Fund the premium for the period stated in the Schedule or for any further period for which the General Insurance Fund may accept payment for the renewal of this policy and Subject to the terms, provisions, exceptions and conditions General Insurance Fund shall pay to the INSURED to the extent and in the manner hereinafter provided that if any of the Insured persons shall:-

1. Sustain any bodily injury resulting solely and directly from accident caused by external. violent and visible means, the sum hereinafter forth in respect of any of the Insured Persons specified in the Schedule.

(a) If such injury shall within twelve calendar months of its occurrence be the sole and direct cause of the death of the insured person the Capital Sum insured stated in the Schedule hereto applicable to such Insured Person.

(b) if such injury within twelve calendar months of its occurrence be the sole and direct cause of the total and irrecoverable loss of :

i) Sight of both eyes, or of the actual loss by physical separation of the two entire hands or two entire feet, or of one entire hand and one entire loot, or of such loss of sight of one eye and such loss of one entire hand or one entire foot. the Capital Sum Insured stated in the Schedule hereto applicable to such Insured Person.

ii) Use of two hands or two feet, or of one hand and one foot, or of such loss of sight of one eye and such loss of use of one hand or one foot. the Capital Sum Insured stated in the Schedule hereto.

(c) If such injury shall within twelve calendar months of its occurance be the sole and direct cause of the total and irrecoverable loss of :

i) the sight of one eye, or of the actual loss by physical separation of one entire hand or one entire foot, fifty pereent (50%) of the Capital Sum Insured stated in the Schedule hereto applicable to such Insured person.

NOTE : For the purpose of Clauses (b) and (e) above, 'physical separation' of a hand of foot means separation of hand at or above the wrist and/or of the foot at or above the ankle.

d) If such injury shall, as a direct consequence thereof, immediately permnantely totally and absolutely, disable the Insured Person from engaging in being occupied with or giving attention to now employement or occupation of any description whatsever. then a lump sum equal to hundred percent (100%) of the Capital Sum Insured Slated in the Schdule hereto Applicable to such Insured Person.

e) If such injury shall within twelve calendar months of its occurrence be the sole and direct cause of the total and inccoverble loss of use or of the actual loss by physical separation of the following. then the Capital Sum Insured applicable to such Insured applicable to such Insured Person in the Manner indicated below:

	Benefit/Compeinalion payable Rs. (For Class 1 to 8)
a) Loss of hearing :	
i) Both ears	50000/-
ii) One car	15000/-
b) Loss of thumb and finger of hand :	
i) Loss of four fingers and thumb of one hand (All phalanges)	40000/-
ii) Loss of four fingers except thumb (All phalanges)	35000/-
c) Loss of thumb :	
i) One thumb (both phalanges)	25000
ii) One thumb (One phalanx)	10000/-
d) Loss of Fingers except thumb :	
i) Any finger (All phalanges)	10000/-
ii) Any finger (two phalanges)	8000/-
iii) Any linger (One phalanx)	4000
e) Loss of toes of any leg :	
i) Including great toe (All phalanges)	20000/-
ii) One great toe (Both phalanges)	5000/-
iii) One great toe (One phalanx)	2000/-
iv) Toes except great loe (Both phalanges)	1000/- (Per toe)
f) Loss due to burning :	
BURNS	
i) 50% or more of entire body	50000/.
ii) 40% or morebut less than 50% of entire body	40000/-
iii) 30% or more but less than 40% of entire body	30000/-

Treatment Expenses & Re-embursement in Accident :-

In addition to above a claiment injured by accident must be admitted in hospital more than 24 hours than he entilile to get the medical re-embursement amount maximum Rs. 5,000/-

EXCEPTIONS

PROVIDED ALWAYS THAT:

The General Insurance Fund shall mg be liable under this policy for :

1. Compensation under more than one of the foregoing sub-clauses in respect of the same period of disablement of the Insured Person.
2. Any other payment to the same person after a claim under one of the Sub-clauses(a), (b), (c) or (d) or (e) has been admitted and become payable.
3. Any payment in case of more than one claim in respect of such Insured person under the policy during any one period of insurance by which the maximum liability of the General Insurance Fund specified in the Schedule applicable to such Insured person excced the sum payable under sub-Clausc (a) of this policy to such Insured (Person)
4. Payment of compensation in respact of Death injury Pets or Disablement of the Insured Person (a) from intentional self-injury, suicide or attempted suicide. (b) whilst under the influence of intoxication liquor to by it, (c) whilst engaging in A viation or Ballooning or whilst mounting into, dismounting form or travelling in any balloon or aircraft other than as a passengar (fare paying or otherwise) in any duty licensed standard type of aircraft any where in the world. (d) directly or indirctly caused by any diseases or insanity. (e) NO arising resulting front the Insured Person committing any breach law with Criminal intent.
5. Payment of compensation in respect of death, injury or diablement of Insured Person due in or arising out of or directly or indirectly connected with or traceable to War. Invarsion Act foreing enemy and Hostilities (whether war be declared or not).
6. Payment compensation in respect of death of, or bodily injury or

any disease or illness to the insured Person:

a) Directly or indirectly caused by or contributed to by or arising from and ionising radiations or contamination by radioactivity any nuclear fuel or from any nuclear waste from the combustion of nuclear fuel. For the purpose of this exception. combustion shall include any self-sustaininr, process of nuclear fission.

b) Directly or indirectly caused by or contributed to by or arising (corn nuclear weapons matrials.

Provided also that the due observance and fulfilment of the terms and conditions of this policy (which condition and endorsements hereon are to be read as part of this policy) shall so far as they relate to anything to be done or not to be done by the Insured and/or Insured Person be a condition precedent to any liability of the General Insurance Fund under this policy.

7. **Surgical Exclusion Clause :**

The Insurance under this policy shall not extend to cover death or disablement resulting directly or indirectly caused by, contributed to or aggravated or prolonged by any Surgical Operation.

8. The death caused by an accident in ease the applicant has been travelling by unauthorised means of transponation e.g. over-crowded Jeep. Jug ad. roof or bus or train etc. etc.

CONDITIONS

1. Persons who can be Claimants

(I) Father, Mother or Spouse of the insured can be claimants.

(II) Other person are entitled to be claimants if no relation mentioned in (I) above is alive at the time of death of insured.

Note (i) 'Step' mother, father, brother, sister.

Note (ii) Claim by any person if relation as mention in Rule 1(1) is alive shall be deemed to be null & void.

2. Upon the happening of any event which may give rise to a claim under this poke). a cuter notice with all particular must be given to he GIF immediately. In case of death, written notice also for the death must, unless reasonable cause is shown, be given belbre internment/cremation and in any case, with one calendar month after the death and in the event of loss of sight or amputation of limbs written notice thereof must also he given 'within one calendar mind after such loss ()flight or amputation.

3. Proof satisfactory to the Fund shall be furnished of all matters upon which a claim is based. Any medical or other agent or investigator/officers of the Fund shall be allowed to examine the proximate cause & circumstance evidence for insured person(s) on the occasion of any alleged injury of disablement/death when and so often as the same may reasonable be required on behalf of the Fund and in the event death to make a post. M a o r t e m examination of the body of the insured persin(s). Such evidence as the Fund may from time to time require shall be furnished immediately. No sum payable under this policy, shall carry interest.

4. Provided that the within mentioned policy covers up the happening of any event which may give rise to a claim under this policy written notice with all particulars must be given to the Fund immediately and claim from with all satisfactory proofs i.e. death certificate PMR, treatment report, FIR FR/challan, Panchnama, nakshamoka, witness statement etc. be submitted n within 6 months form the date of incident. In case of justified reasons for delay in submission of claim all such documents /information must be submitted to the fund within 12 months along with mentioning the reasons of delay otherwise claim to he closed as "No claim". No claim form would be entertaind after 12 months.

5. The Fund shall not he liable to nmke any payment under this policy in respect of any claim. if such claim he in any manner fraudulent or supported by any fraudulent statement or device. whether by the insured or by any person on behalf of the insured person(s).

6. If any difference shall arise as to the amount to be paid under this policy. (liability being otherwise admitted) Such differences shall independently of all other questions be referred to the decision or State Government end the decision of the state Govt. will be final and abiding to all concerned.

7. It is hereby expressly stipulated and declared that it shall be a condition precedent to any right of action or suit upon this policy that the claimant shall first file art application for review/revision against the decision of repudiation before the Commissioner/Director of the fund within 3 months from the date of decision.

8. It is also hereby furter expressly agreed and declared that if the Fund shall disclaim liability to the insured/claimant(s) for any claim hereunder and such claim shall not within 6 calendar months from the date of such disclaimer have been made the subject matter of a suit in a court of law. then the claim shall for all the purpose be deemed to have been abandoned and shall not thereafter be recoverable hereunder.

9. I he onus of proving the death by the accident will lie with the applicant" which means that it will he duty of the applicant to lodge an FIR get n post-mortem done etc. to substantiate the claim that the death was by accident.

10. The department will not be liable for interest on the sum assured of the policy for delays caused bonafide or by the process of law

निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग जयपुर

GOVERNMPNT RAJASTHAN
STATE INSURANCE & PROVIDENT FUND DEPARTMENT
(GENERAL INSURANCE FUND)
'D' BLOCK 2nd FLOOR VITTA BHAWAN, JANPATH JAIPUR
Phone:- 0141 2740219, Fax:- 0141 2740292

STUDENT SAFETY ACCIDENT INSURANCE POLICY SCHDULE

POLICY NO.: GIF/81//SS12019-20/07

Name of the Insured & Address	:	Director. Secondary Education Rajasthan. Bikaner
Period of Insurance	:	15.8.2019 to 14.8.2020
Premium	:	Premium =51233559/-
No. of Insured Students	:	All Students of the State Government Schools studing in class.
(Insured student should mean and	:	I to VIII

Include, all those who arc and Continue to be on the rolls of the Institution at inception and during the currency of the poloicy.)

Sum Assured	:	Any one Insured Student Rs. 100000/-

Terms & Conditions of the Policy as mentioned in the

attached policy document : Premium received by BT.vide Budget Head 2202-01-101-01-00 Rs. 40473559/-dated 9.8.2019, vide Bill 2002-01-789-01-00 Rs. 10760000/- dated 9.8.2019

निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग, जयपुर

2. समान परीक्षा योजनान्तर्गत गृह परीक्षा एवं कक्षा कक्षोन्नति नियमों के संबंध में निर्देश।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक शिविरा-माध्य/मा-स/22497/2017-20/96 दिनांकः 18.03.2020 परिपत्र ● विषयः समान परीक्षा योजनान्तर्गत गृह परीक्षा एवं कक्षा कक्षोन्नति नियमों के सम्बन्ध में निर्देश।

इस कार्यालय के समसंख्यक परिपत्र दिनांक : 25.03.2012 द्वारा समान परीक्षा योजनान्तर्गत गृह परीक्षा एवं कक्षा-कक्षोन्नति नियमों के संबंध में निर्देश जारी किए गए हैं। समसंख्यक निर्देश परिपत्र दिनांक : 27.03.14 एवं 16.03.2016 द्वारा उक्त निर्देशों के संबंध में आंशिक संशोधन जारी किए गए हैं। उपर्युक्त संदर्भित परिपत्र 'परीक्षा एवं कक्षोन्नति नियम : 2011-12' के प्रावधानों के अनुप्रयोग में विभिन्न जिज्ञासाओं के समाधान/कठिनाइयों के निवारणार्थ समीक्षोपरान्त एतद् द्वारा स्पष्टीकरण जारी किए जाते हैं :-

1. कृपांक हेतु अधिकतम देय अंक की गणना :-

चूंकि प्रायोगिक परीक्षा में कृपांक देय नहीं होते हैं, अत: कृपांक के लिए देय अधिकतम अंक की गणना हेतु सम्बन्धित विषय के केवल सैद्धांतिक प्रश्न पत्र के कुल पूर्णांकों को आधार माना जाएगा। **(मूल परिपत्र का बिन्दु संख्या – 5)**

2. पूरक परीक्षा हेतु पात्रता :-

i. जिन विषयों में सैद्धांतिक व प्रायोगिक, दोनों परीक्षाएँ होती है, उनमें इसमें से किसी एक अथवा दोनों में परीक्षार्थी को पूरक परीक्षा हेतु उसी स्थिति में पात्र घोषित किया जा सकेगा, यदि सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक परीक्षाओं, दोनों के प्राप्तांकों का कुल योग 25 प्रतिशत अथवा अधिक है। जिस प्रश्न पत्र (सैद्धांतिक अथवा प्रायोगिक) में परीक्षार्थी द्वारा 36 प्रतिशत अथवा अधिक अंक प्राप्त कर लिए जाएंगे, उस प्रश्न पत्र में उत्तीर्ण प्राप्तांक के कारण पूरक परीक्षा में प्रविष्ट होने की आवश्यकता नहीं होगी।

ii. यदि किसी विषय में परीक्षार्थी के प्रथम परख से वार्षिक परीक्षा तक के प्राप्तांकों का कुल योग 25 प्रतिशत अथवा अधिक है, तो उस परीक्षार्थी को पूरक परीक्षा हेतु पात्र घोषित किया जा सकता है। पूरक परीक्षा के लिए पात्र घोषित किए जाने हेतु वार्षिक परीक्षा में न्यूनतम 20 प्रतिशत अंक प्राप्त करना आवश्यक नहीं है। **(मूल परिपत्र का बिन्दु संख्या – 7)**

3. पूरक परीक्षा उत्तीर्ण परीक्षार्थी हेतु नवीन अंक तालिका

समसंख्यक परिपत्र दिनांक : 27.03.14 द्वारा किए गए संशोधन के अनुसार पूरक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी को पूरक परीक्षा में प्राप्तांकों के अनुरूप नवीन अंकतालिका जारी किए जाने का प्रावधान है। पूरक उत्तीर्ण विषय एवं पूर्व से उत्तीर्ण विषयों के पूर्णांकों के अनुपात में प्राप्तांकों की समरूपता रखे जाने हेतु पूरक परीक्षा का प्रश्न-पत्र उस विषय में प्रथम परख से वार्षिक परीक्षा तक कुल पूर्णांकों के समान पूर्णांकों का बनाया जाना चाहिए तथा नवीन प्रगति पत्र में पूरक उत्तीर्ण विषय के प्राप्तांक उस विषय के विषय योग (कुल) के कॉलम में दर्शाए जाकर तदनुसार श्रेणी निर्धारित की जानी चाहिए।

उदाहरणार्थ-जीव विज्ञान विषय में सैद्धांतिक प्रश्न-पत्र में पूरक योग्य परीक्षार्थी हेतु वार्षिक परीक्षा तक सैद्धांतिक प्रश्नपत्र के 150 पूर्णांक के समान प्रश्न-पत्र निर्मित किया जाकर पूरक सैद्धांतिक परीक्षा में प्राप्तांक तथा पूर्व में उत्तीर्ण जीव विज्ञान प्रायोगिक परीक्षा में वार्षिक परीक्षा तक पूर्णांक 50 में से प्राप्तांक का योग किया जाकर जीव विज्ञान के विषय योग (कुल) के कॉलम में प्रायोगिक व सैद्धांतिक प्राप्तांक के रूप में पृथक-पृथक दर्शाया जाकर श्रेणी निर्धारित की जाएगी।

4. प्रश्न-पत्र समाप्ति समय से पूर्व परीक्षा कक्ष छोड़ने की अनुमति

परीक्षार्थी द्वारा संपूर्ण प्रश्न-पत्र समय से पूर्व हल कर लिए जाने की स्थिति में उसे समय पूर्व परीक्षा कक्ष छोड़ने की अनुमति अग्रांकित शर्ताधीन दी जा सकती है :-

i. यदि परीक्षा से सम्बन्धित विषय के प्राप्तांक श्रेणी निर्धारण में नहीं जोड़े जाते हैं, तो ऐसे विषय की परीक्षा में निर्धारित समय से अधिकतम एक घण्टा पूर्व तक।

ii. अन्य सभी विषयों में निर्धारित समय से अधिकतम आधा घण्टा पूर्व तक।

iii. उपर्युक्त दोनों स्थितियों में प्रश्न-पत्र को तत्दिवस परीक्षार्थी से लेकर सम्बन्धित वीक्षक द्वारा रख लिया जाएगा। आगामी कार्य दिवस को इस प्रश्नपत्र को परीक्षार्थी को लौटाया जा सकता है।

समस्त सम्बन्धितों द्वारा उपर्युक्तानुसार कार्यवाही सुनिश्चित की जाए।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. पे-मैनेजर पर उपलब्ध कार्मिकों के डाटा में संशोधन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25577/2019-20 दिनांकः 26.02.20 ● समस्त आहरण वितरण अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा विभाग ● विषयः पै-मैनेजर पर उपलब्ध कार्मिकों के डाटा में संशोधन के सम्बन्ध में। ● प्रसंगः इस विभाग का पूर्व समसंख्यक आदेश दिनांक 13.01.2020

उपर्युक्त विषयान्तर्गत वित्त विभाग के परिपत्र क्रमांक 3666-4165 दिनांक 13.09.2019 एवं 8002 दिनांक 13.12.2019 द्वारा

राजकीय भुगतानों में शुद्धता सुनिश्चित किए जाने के सम्बन्ध में विस्तृत दिशा-निर्देशों की पालना में इस कार्यालय के प्रासंगिक आदेश द्वारा आपके अधीनस्थ समस्त कार्मिकों के डाटा को पै-मैनेजर पर जाँच कर, यदि उनमें कोई संशोधन अपेक्षित है, तो स्वयं के स्तर पर डिजिटल हस्ताक्षरयुक्त लॉगिन से अधिकृत कर इस विभाग को अन्तिम अधिकृति (Final Approval) हेतु अग्रेषित किए जाने के आदेश दिए गए थे।

अतः आपको निर्देशित किया जाता है कि आपके अधीनस्थ कार्मिकों के पे-मैनेजर पर उपलब्ध डाटा को (कार्मिक के लॉगिन से /डीडीओ लॉगिन से) जाँच कर शुद्धता सुनिश्चित करें एवं यदि उनमें कोई संशोधन अपेक्षित है तो पूर्ण जाँच के उपरान्त अपेक्षित संशोधन को स्वयं के स्तर पर डिजिटल हस्ताक्षरयुक्त लॉगिन से अधिकृत कर विभागाध्यक्ष को अंतिम अधिकृति हेतु फॉरवर्ड करावें एवं उक्त वांछित संशोधनों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रारूप में तैयार कर डाक द्वारा निदेशालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

प्रारूप-1 (सेवानिवृत्त कार्मिकों हेतु)

क्र. सं.	सेवानिवृत्त कार्मिक का नाम	एम्पलॉयी आईडी	सेवानिवृत्ति दिनांक	अपेक्षित संशोधन का संक्षिप्त विवरण (यथा Change in Name, Change in Present Address etc.)

प्रारूप-2 (सेवारत कार्मिकों हेतु)

क्र. सं.	कार्मिक का नाम	एम्पलॉयी आईडी	सेवानिवृत्ति दिनांक	अपेक्षित संशोधन का संक्षिप्त विवरण (यथा Change in Name, Change in Present Address etc.)

संशोधन से संबंधित आवश्यक दस्तावेज की पीडीएफ अथवा अन्य स्वीकृत फॉरमेट ऑनलाइन ही पे-मैनेजर पर अपलोड करवाने है। उपर्युक्त प्रपत्र के साथ किसी भी प्रकार का दस्तावेज निदेशालय को नहीं भिजवाना है केवल प्रपत्र ही पूर्णरूप से भरकर डाक से भिजवाने हैं।

● **(बी.डी. शर्मा)** वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. द्वितीय वेतन शृंखला एवं समकक्ष पदों हेतु जारी वरिष्ठता सूचियों में योग्यता अभिवृद्धि के इन्द्राज हेतु निर्देश देने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ●क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/वरि/के-2/11968/मानदण्ड/18-19 दिनांक : 22.05.2020 ●परिपत्र ●विषयः द्वितीय वेतन शृंखला एवं समकक्ष पदों हेतु जारी वरिष्ठता सूचियों में योग्यता अभिवृद्धि के इन्द्राज हेतु निर्देश देने बाबत।

इस कार्यालय के परिपत्र दिनांक 04.11.2019 एवं पत्र दिनांक 02.03.2020 के द्वारा द्वितीय वेतन शृंखला एवं समकक्ष पदों हेतु जारी वरिष्ठता सूचियों में योग्यता अभिवृद्धि के इन्द्राज हेतु निर्देश प्रदत्त है तथा वर्ष 2020-21 हेतु उच्च पदों की विभागीय पदोन्नति समिति की बैठकों के लिए तैयार पात्रता सूची में पात्र आशार्थियों की योग्यता अभिवृद्धि के इन्द्राज हेतु अन्तिम तिथि 20.03.2020 निर्धारित करते हुए संभाग कार्यालयों द्वारा जारी आदेशों के क्रम निदेशालय द्वारा भी यथासमय आदेश प्रसारित किए जा चुके हैं।

प्रायः देखने में आया है कि कार्मिकों द्वारा योग्यता अर्जित करने के उपरान्त भी यथासमय उक्त वर्ष की वरिष्ठता सूची में योग्यता का इन्द्राज नहीं करवाया जाता और डीपीसी की कार्यवाही सम्पन्न हो जाने के बाद योग्यता अभिवृद्धि हेतु आवेदन कर योग्यता का इन्द्राज करवाया जाता है तथा उक्त आधार पर पदोन्नति की माँग की जाती है। ऐसे योग्यता अभिवृद्धि के प्रकरणों के कारण विभाग के समक्ष अनावश्यक रिव्यू डीपीसी के प्रकरण उत्पन्न हो रहे है जिसको शासन सचिव, स्कूल शिक्षा, राजस्थान जयपुर ने पत्रांक प.7(67)शिक्षा-2/2019 दिनांक 14.05.2020 के द्वारा बहुत गम्भीरता से लेते हुए कठोर निर्देश प्रदान किए गए है जिसके क्रम में पुनः निर्देशित किया जाता है किः-

1. स्थाई वरिष्ठता सूची जारी होने के पश्चात यदि कोई कार्मिक शैक्षिक/प्रशैक्षिक योग्यताओं में नियमानुसार (मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से) अभिवृद्धि करता है तो निर्धारित प्रपत्र में प्रकरण सक्षम अधिकारी को उचित माध्यम से प्रार्थना-पत्र योग्यता धारण करने के छः माह के भीतर प्रस्तुत कर देवें। सक्षम अधिकारी ऐसे प्रकरणों की जाँच पश्चात एक माह में आदेश जारी कर द्वितीय श्रेणी अध्यापक/समकक्ष पद की योग्यता अभिवृद्धि संभाग स्तरीय वरिष्ठता सूची में दर्ज कर तदनुसार आदेश निदेशालय को भिजवावें। वरिष्ठ अध्यापक एवं समकक्ष पदों पर सीधी भर्ती के समय कार्मिक द्वारा अपने आवेदन-पत्र में जो योग्यता अंकित की है उसका उल्लेख संभाग स्तर की वरिष्ठता सूची में आवश्यक रूप से किया जाए।
2. निदेशालय द्वारा द्वितीय वेतन शृंखला अध्यापकों की नियुक्ति हेतु संभाग आवंटन के समय जो संबंधित अभ्यर्थियों के मूल आवेदन पत्र संभाग कार्यालय को भिजवाए जाते है, उन आवेदन पत्रों के आधार पर संभाग कार्यालय की संस्थापन शाखा Excel sheet में ऐसा अभिलेख संधारित करें जिसमें आवेदन पत्र में अंकित सम्पूर्ण विवरण यथा-अभ्यर्थी का नाम, पिता/पति का नाम, जन्मतिथि, वर्ग (अजा/अजजा/अन्य पिछड़ा वर्ग/अति पिछड़ा वर्ग आदि, श्रेणी (विधवा/परित्यक्ता/विकलांग/भू.पू. सैनिक आदि), शैक्षिक एवं प्रशैक्षिक योग्यताएँ (शैक्षिक एवं प्रशैक्षिक योग्यता का नाम, उत्तीर्ण वर्ष, ऐच्छिक विषय, सम्बद्ध बोर्ड/विश्वविद्यालय का नाम आदि) आदि अन्य कोई विवरण जो संस्थापन सूचना हेतु आवश्यक हो तथा प्रत्येक कार्मिक की एम्पलोई आई.डी. का भी अंकन करे ताकि जब संबंधित वर्ष की वरिष्ठता सूची तैयार की जानी हो तो संभाग कार्यालय की संस्थापन शाखा उक्त संधारित रजिस्टर (Excel sheet) के आधार पर वरिष्ठता सूचियाँ इस कार्यालय को उपलब्ध करावें ताकि नियुक्ति पर कार्यग्रहण करने वाला कोई अभ्यर्थी वरिष्ठता सूची में सम्मिलित होने से वंचित नहीं रहे साथ ही उसके द्वारा अर्जित योग्यता का सही अंकन वरिष्ठता सूची में हो। उक्त तैयार Excel sheet के आधार पर संभाग स्तर पर 01 अप्रैल को कार्यरत

अधिकारियों की सूची भी तैयार की जा सकेगी। जिसके लिए निदेशालय द्वारा VC के माध्यम से संभाग कार्यालय को उचित दिशा निर्देश प्रदान किए जाएँगे।

3. जिन अभ्यर्थियों द्वारा नियुक्ति के उपरान्त कोई शैक्षिक/प्रशैक्षिक योग्यता अर्जित की जाती है तो उन अभ्यर्थियों और उनके संस्था प्रधानों को यह दायित्व है कि तत्काल अर्जित योग्यता का संबंधित वर्षों की वरिष्ठता सूची में इन्द्राज कराने हेतु प्रकरण पीईईओ./सीबीईओ. के माध्यम से संभाग कार्यालय को निर्धारित प्रपत्र में यथा समय आवेदन प्रस्तुत करें। संभाग कार्यालय तत्काल इन योग्यताओं को वरिष्ठता सूची में दर्ज करने संबंधी कार्यवाही कर आदेश प्रसारित कर निदेशालय को भिजवाएँ। निदेशालय द्वारा परीक्षण उपरान्त आदेश प्रसारित करने के पश्चात ही अर्जित योग्यता का इन्द्राज संबंधित कार्मिक के शाला दर्पण पर प्रपत्र 10 एवं कार्मिक की सेवा पुस्तिका में सक्षम स्तर से किया जाए।

4. विभाग के समक्ष इस प्रकार के प्रकरण भी प्रस्तुत हो रहे हैं जिसमें कार्मिकों द्वारा योग्यता अभिवृद्धि तो कर ली गई परन्तु आज दिनांक तक उसका अंकन वरिष्ठता सूचियों में नहीं करवाया है और डीपीसी की कार्यवाही सम्पन्न होने के बाद अथवा सेवानिवृत्ति से पूर्व अर्जित योग्यता के इन्द्राज का प्रकरण प्रस्तुत कर रिव्यु डीपीसी के माध्यम से गत वर्षों में पदोन्नति की माँग की जाती है जिससे रिव्यू डीपीसी में चयन की कार्यवाही से आगामी वर्षों की पूर्व आयोजित डीपीसी भी प्रभावित हो जाती है। अतः नियंत्रण अधिकारी ऐसे समस्त कार्मिकों के सेवाभिलेखों आदि की जाँच कर यह सुनिश्चित करें कि कार्मिक द्वारा कोई योग्यता अर्जित कर छिपाई नहीं गई है। फिर भी यदि किसी कार्मिक द्वारा गत वर्षों में अर्जित योग्यता का प्रकरण प्रस्तुत किया जाता है तो उक्त कार्मिक से इस आशय का शपथ पत्र प्राप्त किया जावें कि मेरे द्वारा अर्जित योग्यता विलम्ब से वरिष्ठता सूची में दर्ज करवाई जा रही है जिसके लिए मैं स्वयं उत्तरदायी हूँ तथा मैं भविष्य में उक्त अर्जित योग्यता के आधार पर पूर्ववर्ती वर्षों की डीपीसी में पदोन्नति की माँग नहीं करूँगा। पूर्ववर्ती वर्षों में अर्जित योग्यता का इन्द्राज जिन कार्मिकों द्वारा अभी तक भी नहीं करवाया गया है, ऐसे कार्मिकों के लिए वर्ष 2020-21 की नियमित डीपीसी के आयोजन के उपरान्त एक निश्चित समय दिया जाएगा जिसके लिए अलग से निर्देश प्रसारित होंगे।

5. कार्मिक द्वारा पूर्व वर्षों में अर्जित योग्यताओं के संबंध में नियंत्रण अधिकारी अपने अधीनस्थ समस्त द्वितीय वेतन शृंखला एवं समकक्ष पद के अध्यापकों की सेवा पुस्तिका एवं शाला दर्पण के प्रपत्र-10 पर दर्ज योग्यता का मिलान वर्ष 2013-14 तक की वरिष्ठता सूचियों से तथा आगामी वर्ष की निर्माणाधीन वरिष्ठता सूचियों/संस्थापन रजिस्टरों से मिलान करें एवं प्रत्येक कार्मिक की सेवा पुस्तिका में उसका सही सही इन्द्राज है अथवा नहीं की जाँच करते हुए कार्मिक द्वारा अपनी अर्जित योग्यता को छिपाया नहीं गया है का प्रमाण पत्र तिथि एवं मोहर सहित अंकित करें तथा कार्मिक के भी प्रति हस्ताक्षर अंकित करवावें अर्थात कार्मिक के द्वारा अर्जित समस्त योग्यताओं का इन्द्राज वरिष्ठता सूची, सेवा पुस्तिका एवं शाला दर्पण के प्रपत्र-10 में एक समान है। यदि योग्यता अंकन में किसी प्रकार की भिन्नता पाई जाए तो वास्तविक योग्यता का मिलान कर समस्त अभिलेखों को सही किया जाए और यदि वरिष्ठता सूची में योग्यता दर्ज नहीं है तो प्रकरण संभाग कार्यालय को निर्धारित प्रपत्र में प्रेषित किया जावें।

6. डीपीसी वर्ष 2020-21 हेतु द्वितीय शृंखला से उच्च पदों पर पदोन्नति हेतु पात्रता निर्माण का कार्य सम्पन्न हो चुका है। वर्ष 2021-22 एवं आगामी वर्षों की डीपीसी हेतु अर्जित योग्यताओं के वरिष्ठता सूचियों में अंकन हेतु बिन्दु संख्या 01 में दिए गए निर्देशों की कठोरता से पालना सुनिश्चित करने के साथ-साथ संभाग कार्यालय से योग्यता अभिवृद्धि, नवीन नामांकन, विलोपन एवं संशोधन के प्रकरणों का अन्तिम आदेश प्रति वर्ष निदेशालय को भिजवाने की अन्तिम तिथि 28 फरवरी निश्चित की जाती है। उक्त तिथि के उपरान्त प्राप्त किसी भी प्रकरण को आगामी वर्ष की डीपीसी में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। यदि इस प्रकार कोई प्रकरण निदेशालय से नियत तिथि उपरान्त प्राप्त होगा तो संबंधित का दायित्व निर्धारण कर उनके विरुद्ध नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. शाला दर्पण पोर्टल पर सूचनाओं के अपलोड/अपडेट करने के लिए दायित्व निर्धारण के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर क्रमांकः शिविरा-मा/माध्य/शालादर्पण/60304(2)/2016-17/198 दिनांकः 22.06.2020 ● परिपत्र ● विषयःशाला दर्पण पोर्टल पर सूचनाओं के अपलोड/अपडेट करने के लिए दायित्व निर्धारण के संबध में।

'शाला दर्पण पोर्टल' राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऑनलाइन सूचना प्रणाली है, जिसके माध्यम से सीधे संस्था प्रधानों द्वारा सूचनाएँ अपलोड/अपडेट की जाती हैं, जिनका विभिन्न उद्देश्यों हेतु वृहद् स्तर पर उपयोग किया जाता है। इस कार्यालय के समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 19.10.2016 द्वारा सभी विद्यालयों में एक शाला दर्पण प्रभारी नियत किए जाने हेतु निर्देशित किया गया था, जिसकी सूचना शाला दर्पण पोर्टल पर भी दर्ज की जाती है। शाला दर्पण पोर्टल पर वर्तमान में विभिन्न मॉड्यूल्स के माध्यम से अनेक प्रकार की सूचनाएँ अपडेट की जाती हैं, लेकिन प्रायः देखने में आता है कि कार्य की अधिकता के कारण शाला दर्पण प्रभारी से कई सूचनाएँ यथासमय एवं त्रुटि रहित अपडेट नहीं हो पाती हैं। अतः इस क्रम में निर्देशित किया जाता है कि संस्थाप्रधान के साथ ही विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित प्रभारियों का भी यह दायित्व होगा कि अपने प्रभार से संबंधित परिशुद्ध सूचना यथासमय शाला दर्पण पोर्टल पर दर्ज/अपडेट हो। उदाहरण के रूप

में विद्यालय से संबंधित प्रमुख प्रभारों के संबंध में शाला दर्पण प्रभारी के साथ-साथ अग्रांकित विवरणानुसार संबंधित प्रभारी कार्मिक का भी एतद् द्वारा दायित्व निर्धारण किया जाता है-

क्र.सं.	प्रभार का नाम	प्रभारी कार्मिक के उत्तरदायित्व का संक्षिप्त विवरण
1	कार्यालय प्रभारी	समस्त कार्मिकों के सेवा-अभिलेख के अनुसार शाला दर्पण पर पूर्ण शुद्ध विवरण (प्रपत्र-10) दर्ज करना, कार्यमुक्ति/कार्यग्रहण, इन्फ्रास्ट्रक्चर विवरण, विद्यालय प्रोफाइल, कार्मिक उपस्थिति, अवकाश अद्यतन करना आदि।
2	कक्षाध्यापक	अपनी कक्षा से संबंधित समस्त छात्रों का प्रवेश/पुनः प्रवेश, नाम पृथक्कीकरण, प्रपत्र-7/7-अ (तृतीय भाषा व वैकल्पिक विषय संबंधित) की पूर्ति, प्रपत्र-9 की परिशुद्ध पूर्ति, छात्र उपस्थिति सूचना, कक्षा क्रमोन्नति, साइकिल/ट्रांसपोर्ट वाउचर हेतु पात्र विद्यार्थियों की सूचना आदि।
3	निःशुल्क पाठ्य-पुस्तक वितरण प्रभारी	निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकों से संबंधित सम्पूर्ण विवरण यथासमय शाला दर्पण पर दर्ज करना।
4	छात्रवृत्ति प्रभारी	छात्रवृत्ति के पात्र सभी विद्यार्थियों से संबंधित सम्पूर्ण विवरण यथासमय शाला दर्पण पोर्टल पर अपलोड करने संबंधी सम्पूर्ण कार्य।
5	परीक्षा प्रभारी	बोर्ड परीक्षा के ऑनलाइन आवेदन पत्र, यथासमय अंकों/सत्रांकों की फीडिंग, परीक्षा परिणाम तैयार करना, क्रमोन्नति आदि।
6	एसडीएमसी/एसएमसी प्रभारी	एसडीएमसी/एसएमसी से संबंधित वार्षिक/अर्द्धवार्षिक/त्रैमासिक/मासिक प्रविष्टियां, प्रशिक्षण, सदस्यों का विवरण, बैठकों का विवरण, बैंक खातों संबंधी विवरण आदि।
7	उत्सव प्रभारी	समय-समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न प्रकार के उत्सवों से संबंधित वांछित सूचनाओं की शाला दर्पण पर यथासमय प्रविष्टियां दर्ज करना।

उपर्युक्त समस्त प्रभारों के अतिरिक्त विद्यालय के अन्य प्रभारों से संबंधित सूचना का संधारण भी शाला दर्पण पोर्टल पर किया जाना हो तो संबंधित प्रभारी यथासमय सही सूचना अद्यतन/दर्ज करवाने हेतु उत्तरदायी होगा।

समस्त संबंधितों द्वारा उपर्युक्त निर्देशों की तत्काल पालना की/कार्रवाई की जानी सुनिश्चित की जाए।

●**(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर।

6. शिक्षा विभागीय कार्यालयों में संस्थापन अधिकारी एवं प्रशासनिक अधिकारियों का कार्य निर्धारण।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा/माध्य./साप्र/बी-1/12820/कार्य विभाजन/ प्रशा. संस्था/2016 दिनांकः 01.06.2020 ● परिपत्र ● विषयः शिक्षा विभागीय कार्यालयों में संस्थापन अधिकारी एवं प्रशासनिक अधिकारियों का कार्य निर्धारण।

कार्यालय पद्धति के अध्याय 03 के अंतर्गत शिक्षा विभाग के अधीन संस्थापन अधिकारी एवं प्रशासनिक अधिकारियों का कार्य निम्नानुसार निर्धारित किया जाता है-

संस्थापन अधिकारी

1. विभागाध्यक्ष के सहायक एवं अनुभाग अधिकारी के रूप में कार्यालयों में संस्थापन एवं प्रशासनिक कार्यों के दायित्व का निर्वहन करेंगे, ये अपनी पत्रावलियाँ ग्रुप अधिकारी के माध्यम से निदेशक को प्रस्तुत करेंगे।
2. संयुक्त निदेशक संभाग कार्यालय एवं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों में कार्यालयाध्यक्ष के सहायक के रूप में समस्त संस्थापन एवं प्रशासनिक कार्यों के दायित्वों का निर्वहन करेंगे तथा सम्बन्धित अनुभाग की पत्रावलियाँ कार्यालयाध्यक्ष को प्रस्तुत करेंगे।

प्रशासनिक अधिकारी

1. विभागाध्यक्ष के सहायक एवं अनुभाग अधिकारी के रूप में कार्यालयों में संस्थापन एवं प्रशासनिक कार्यों के दायित्व का निर्वहन करेंगे तथा अपनी पत्रावलियाँ ग्रुप अधिकारी के माध्यम से निदेशक को प्रस्तुत करेंगे।
2. संयुक्त निदेशक संभाग कार्यालय, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों एवं विशिष्ट संस्था/कार्यालयों में सहायक कार्यालयाध्यक्ष के रूप में समस्त संस्थापन एवं प्रशासनिक कार्यों के दायित्वों का निर्वहन करेंगे तथा सम्बन्धित अनुभाग की पत्रावलियाँ संस्थापन अधिकारी के माध्यम से कार्यालयाध्यक्ष को प्रस्तुत करेंगे।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

7. राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत समायोजित कार्मिकों को सेवानिवृत्ति पर देय अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/अनुदान/2019-20 दिनांक : 23.06.2020 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा-मुख्यालय, राजस्थान। ● विषयः राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत समायोजित कार्मिकों को सेवानिवृत्ति पर देय अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के सम्बन्ध में। ●संदर्भः इस कार्यालय के समसंख्यक पत्रांक दिनांक 13.11.2019

राज्य सरकार द्वारा राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत दिनांक 01.07.2011 से अनुदानित संस्थाओं में कार्यरत कार्मिकों का समायोजन किया गया था। उक्त नियमों के अन्तर्गत समायोजित कार्मिको को दिनांक 30.06.2011 तक के उपार्जित

अवकाश के शेष (अधिकतम 300 दिन) दिन का भुगतान संस्था द्वारा किया जाना है तथा न्यायालय निर्णयों की पालना में नियमानुसार राज्य सरकार द्वारा अनुदान स्वीकृत किया जा रहा है। ऐसा ध्यान में आया है कि समायोजित कर्मचारियों द्वारा समायोजन से पूर्व व समायोजन के पश्चात की अवधि को मिलाकर 300 दिन की सीमा से अधिक अवकाश का नकद भुगतान (सेवानिवृत्ति+समायोजन पूर्व) लिया जा रहा है, जो नियमानुसार गलत है तथा वसूली योग्य है। इस सम्बन्ध में निदेशालय स्तर से श्रीगंगानगर जिला शिक्षा अधिकारी के अधीनस्थ अनुदानित संस्था भोपालवाला आर्य उच्च माध्यमिक विद्यालय की जाँच करने पर पाया गया कि समायोजित कार्मिकों के 30.06.2011 तक बकाया अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकदीकरण के प्रस्ताव जिला कार्यालय में भिजवाए गए तथा समायोजन पश्चात सेवानिवृत्ति पर अनुपयोजित उपार्जित अवकाश का नकद भुगतान भिजवाए गए तथा समायोजन पश्चात सेवानिवृत्ति पर अनुपयोजित उपार्जित अवकाश का नकद भुगतान प्राप्त कर लिया गया जो कि दोनों को मिलाकर 300 की सीमा से अधिक होने के कारण वसूली योग्य है। इस प्रकार के प्रकरण आपके जिले में भी हो सकते हैं जिनका परीक्षण कराकर अधिक भुगतान की वसूली करना सुनिश्चित करें। अतः राजस्थान ग्रामीण स्वेच्छया शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत समायोजित कार्मिकों को दिनांक 30.06.2011 को तथा समायोजन पश्चात देय अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के सम्बन्ध में सभी जिला शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक मुख्यालय) को निम्नानुसार निर्देश प्रदान किए जाते हैं जिनकी पालना सुनिश्चित करते हुए अपने अधीनस्थ समस्त कार्यालय अध्यक्षों एवं आहरण वितरण अधिकारियों से भी निर्देशों की पालना सुनिश्चित करावें तथा अगर किसी समायोजित कर्मचारी को सेवानिवृत्ति पर अधिक भुगतान हुआ है तो वसूली कर राजकोष में जमा करावें।

1. अनुदानित कार्मिकों जो दिनांक 01.07.2011 से समायोजित हुए है उनके उपार्जित अवकाश का शेष राजस्थान से स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के नियम 5 (VIII) के अनुसार अग्रनीत करने को अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।
2. राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत समायोजन पश्चात अर्जित उपार्जित अवकाश के अनुपयोजित शेष का सेवानिवृत्ति पर नगद भुगतान देय है किन्तु राजस्थान सेवा नियम खण्ड प्रथम के नियम 91 बी के अनुसार 300 दिन की सीमा में ही देय है, अतः समायोजन पूर्व अनुपयोजित अवकाश एवं सेवानिवृत्ति पर अनुपयोजित अवकाश का शेष मिलाकर 300 दिन की सीमा में ही भुगतान किया जाना है। उदाहरणार्थ अगर किसी समायोजित कार्मिक ने दिनांक 30.06.2011 को 300 दिन के अनुपयोजित उपार्जित अवकाश का भुगतान प्राप्त कर लिया है अथवा बकाया है तो उस कार्मिक को समायोजन के पश्चात सेवानिवृत्ति पर अनुपयोजित उपार्जित अवकाश का नकद भुगतान देय नहीं है किन्तु किसी कार्मिक का समायोजन पूर्व 250 दिन शेष है तो समायोजन पश्चात 50 दिन की सीमा में उपार्जित अवकाश के शेष का नकद भुगतान किया जा सकता है।
3. अनुदानित कार्मिकों को न्यायालय निर्णयानुसार किए जाने वाले भुगतान की प्रविष्टि कर्मचारी की मूल सेवा पुस्तिका में आवश्यक रूप से कर उपार्जित अवकाश का शेष शून्य करना सुनिश्चित करें तथा सेवानिवृत्त कर्मचारी के अवकाश लेखे के अतिरिक्त सेवा पुस्तिका में भी लाल स्याही से इस आशय का नोट आवश्यक रूप से लगाया जाना आवश्यक हैं जिससे समायोजन पश्चात सेवानिवृत्ति पर सम्बन्धित कार्यालय अध्यक्ष के ध्यान में आ सके कि कर्मचारी को पूर्व में दिन का भुगतान हो चुका है।
4. समायोजन से पूर्व एवं समायोजन पश्चात सेवानिवृत्ति पर शेष अनुपयोजित उपार्जित अवकाश अगर 300 दिन से ज्यादा है तो 300 दिन से अधिक अवकाश की वसूली समायोजन पश्चात दिए गए वेतन भत्तों के अनुसार होगी।
5. पूर्व में अगर इस तरह का अधिक भुगतान हुआ है तो वसूली करना सुनिश्चित करें यानि समायोजित कार्मिकों को यदि भुगतान हो चुका है तो ऐसे प्रकरणों की जाँच करवाकर वसूली करवाना सुनिश्चित करें।

इस कार्यालय द्वारा दिनांक 13.11.2019 को इस सम्बन्ध में आदेश जारी किए गए थे जो दिसम्बर 2019 की शिविरा के पृष्ठ संख्या 30 पर छपा था किन्तु इसके बावजूद भी ऐसा ध्यान में आया हैं कि संस्थाओं से प्राप्त होने वाले प्रस्तावों में इस आदेश की पालना नहीं की जा रही हैं अतः आपके कार्यालय तथा आपके अधीनस्थ सभी कार्यालयाध्यक्षों से इस आदेश की पालना आवश्यक रूप से कराना सुनिश्चित करें। इस आदेश की पालना के अभाव में अगर किसी संस्था को अधिक भुगतान हो जाता हैं तो आप व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होंगे।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

आवश्यक सूचना **रचनाएँ आमंत्रित**

'शिक्षक दिवस' के उपलक्ष्य में प्रकाशनार्थ विविध विषयों व विधाओं पर शिक्षकवृंद व सुधी पाठकों से रचनाएँ दिनांक 31 जुलाई, 2020 तक आमंत्रित की जाती हैं। अतः अपने शैक्षिक चिंतन-अनुभव, कहानी, संस्मरण, एकांकी, बाल साहित्य, कविता एवं राजस्थानी साहित्य (गद्य-पद्य) आदि मौलिक रचनाएँ 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' के नाम से प्रेषित करें। रचना के अंत में मौलिकता की घोषणा एवं हस्ताक्षर भी आवश्यक है। साथ ही बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की छायाप्रति प्रत्येक रचनानुसार अलग-अलग संलग्न करें। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

-वरिष्ठ संपादक

निःशुल्क आवासीय शिक्षा

कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय

❐ पृथ्वीराज लेघा

पृष्ठभूमि : शैक्षिक उन्नयन की चुनौती एवं बदलते संदर्भों में शिक्षा की महत्ता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक बालक-बालिका जो पढ़ना चाहे उस तक आसानी से शिक्षा उपलब्ध हो सके तथा विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक वर्गों की बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति में सुधार के लिए केन्द्र के सहयोग से राज्य सरकार द्वारा ''कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय'' (के.जी.बी.वी.) योजना शिक्षा से वंचित बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने और उनके ठहराव हेतु 2004 में चालू की गई। उक्त योजनान्तर्गत 10 से 14 आयु वर्ग की बालिकाओं को कक्षा-6 की दक्षताओं की सम्प्रति एवं कक्षा 6 से 8 तक की निःशुल्क आवासीय शिक्षा प्रदान की जाती है।

बालिकाओं को उच्च व तकनीकी शिक्षा के लिए तैयार करने, उच्च स्तरीय ज्ञान, कौशल, जीवन की गुणवत्ता, सामाजिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की ओर अग्रसर कर आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने की अवधारणा पर माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनिकीकरण एवं सम्बलन हेतु सरकार द्वारा 'बालिका छात्रावास' नाम से दूसरी योजना 2009-10 में शुरू की गई जो कि राज्य में 2017-18 तक 'शारदे बालिका छात्रावास' नाम से संचालित थी। इस योजना के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा जारी रखने हेतु कक्षा 9 से 12 की राजकीय विद्यालय में नामांकित बालिकाओं को छात्रावास की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जाती है। बालिका छात्रावास में प्राथमिकता से के.जी.बी.वी. से कक्षा 8 उत्तीर्ण बालिकाओं का नामांकन कराया जाता है। रिक्त स्थानों पर वंचित वर्ग बालिकाओं को भी यह सुविधा उपलब्ध कराए जाने का प्रावधान है।

सर्व शिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के एकीकरण के साथ ही के.जी.बी.वी. योजना व शारदे बालिका छात्रावास योजना को सम्मिलित करते हुए सत्र 2018-19 से दोनों योजनाएँ समन्वयन पश्चात् एकीकृत के.जी.बी.वी. योजना अथवा के.जी.बी.वी. के नाम से जानी जा रही है। जनगणना 2001 के आधार पर राजस्थान में 186 शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक्स चिह्नित किए गए हैं। ये वे ब्लॉक्स हैं जिनमें ग्रामीण महिला साक्षरता दर 46% से कम एवं जेण्डर गेप 20% से अधिक है। इन्ही 186 शैक्षिक पिछड़े ब्लॉक्स (Educationally Backword Block) में ये बालिका छात्रावास व विद्यालय संचालित है। इसके अलावा कुल 14 अल्पसंख्यक KGBV सहित कुल 200 ब्लॉक में संचालन किया जा रहा है। वर्तमान में सभी छात्रावास, विद्यालय, कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय टाइप-I, टाइप-III व IV के नाम से संचालित है।

इन छात्रावासों/विद्यालयों में अनुसूचित जाति, अनूसूचित जन जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, बी.पी.एल. एवं अल्पसंख्यक वर्ग की निर्धारित सीटों में बालिकाएँ रह सकती है। कक्षा 9 से 12 की सभी छात्राएँ निकटतम विद्यालय में अध्ययन करती है। इन छात्रावासों व विद्यालयों में रहने वाली बालिकाओं को निःशुल्क आवास, भोजन, गणवेश, दैनिक आवश्यकता की सामग्री की सुविधा प्रदान की जाती है जिससे उनका ठहराव सुनिश्चित हो सके।

राज्य में वर्तमान में कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों का संचालन एवं मोनिटरिंग राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर द्वारा किया जा रहा है।

उद्देश्य :–

(i) इन के.जी.बी.वी. में समाज के वंचित वर्गों की बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त कर सके इस प्राथमिकता से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति, अल्पसंख्यक, बी.पी.एल., पिछड़े वर्ग की बालिकाओं को प्रवेश दिया जाता है।

(ii) के.जी.बी.वी. में आवासित बालिकाओं को शिक्षण के साथ-साथ आवास, भोजन, चिकित्सा, स्टेशनरी, स्टाईफंड एवं दैनिक उपयोग की वस्तुएँ निःशुल्क उपलब्ध करवायी जाती है।

(iii) बालिकाओं को शिक्षण के साथ-साथ कौशल विकास प्रशिक्षण (skill develop-ment Training) हेतु दो कोर्स (कटिंग, टेलरिंग एवं ब्यूटीकल्चर) का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ताकि वो शिक्षण उपरान्त आत्मनिर्भर बन सके।

(iv) छात्राओं को विषम परिस्थितियों का सामना करने के लिए आत्म-रक्षा प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

(v) बालिकाओं की समाज में स्थिति और बलिकाओं में शिक्षा में विज्ञान एवं सामान्य ज्ञान के विकास एवं उनके बौद्धिक क्षमता के संवर्धन के लिए प्रतिवर्ष के जी.बी.वी. में किशोरी शैक्षणिक मेलों का आयोजन किया जाता है।

(vi) के.जी.बी.वी. शिक्षिकाओं की क्षमता अभिवर्धन के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित कराए जाते हैं, जिससे शिक्षिकाओं में कन्डेस्ड कोर्स शिक्षण दक्षता, व्यवहार जीवन कौशल, विद्यालय प्रबन्धन एवं विषय वस्तु आधारित जानकारी प्रदान करवायी जाती है ताकि बालिकाओं की क्षमता एवं उनके बौद्धिक विकास में वे सहायक हो सके।

(vii) विशेष आवश्यकता वाली बालिकाओं का असेसमेन्ट कैम्प व चिह्नित बालिकाओं को आवश्यक अंग उपकरण दिलवाना।

(viii) सह-शैक्षिक गतिविधियों, अर्न्तजिला शैक्षिक भ्रमण, नियमित खेलकूद, सांस्कृतिक प्रतियोगिता, स्काउट, गाईड, चित्रकला, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि के माध्यम से बालिका के सर्वांगीण विकास के प्रयास किए जाते है।

सत्र 2019-20 में प्रदेश में एकीकृत के.जी.बी.वी. टाइप 1,3 एवं 4 की कुल संख्या का वर्गीकारण

Sr.No.	Schoool cum Hostel (SH) only Hostel (H)	Class	No. of SH/H	Maximum Capacity	Total Capacity
	KGBV TYPE I				
1.	School Cum Hostel	6-8	78	100	7800
	Only Hostel		13	100	1300
	Total		91	-	9100
	KGBV TYPE-III				
2.	School cum Hostel=100 (For Class 6-8 & Only Hostel for 9-12)	6-12	1	250	250
			1	150	150
			38	100	3800
			60	200	1200
	Only Hostel = 09 for Class 6-12	6-12	6	200	1200
			3	100	300
	Total		109		17700
	KGBV TYPE IV				
3.	Only Hostel=119	9-12	119	100	11900
	Grand Total		319		38700

कार्यक्रम अधिकारी, समग्र शिक्षा, बीकानेर **मो: 9929548840**

बालिका शिक्षा

प्रतिभाशाली बेटियाँ

❒ नूतन बाला कपिला

सही है, **'एक बेटी पढ़ाओगे, सात पीढ़ी तर जाएगी।'**

बेटी घर की आन व मान होती है। बेटी के होने से घर में उजाला है। इस घर के उजाले में यदि ज्ञान का उजाला जुड़ जाता है तो चहुँओर उजियारा छा जाता है।

ऐसे शिक्षकों की कमी नहीं है, जिन्होंने बेटियों को पढ़ाने के लिए माता-पिता व अभिभावकों को प्रेरित किया। इसी पक्ष के साथ, ऐसे माता-पिता की भी कमी नहीं है जो स्वयं तो निरक्षर थे या अनपढ़ थे, लेकिन अपनी बेटी को बेटे के बराबर पढ़ने का अवसर दिया। ऐसी ही प्रेरणा से याद आया.. मैं ऑफिस में बैठी थी कि एकाएक एक महिला एक छोटी बेटी को लेकर विद्यालय में प्रवेश दिलवाने के लिए आई। बिटिया छः वर्ष की लगभग होगी। मैंने फॉर्म निकाला व बेटी का नाम पूछा? उन्होंने बताया जनता। मैंने सोचा ऐसे ही बोला होगा, फिर नाम पूछा? उनका फिर वहीं उत्तर था जनता। ऐसे दो तीन बार पूछने पर वह झल्ला गई और कहा बता दिया इसका नाम जनता है। अब समझ में आ गया था। मैंने पूछा? आपने इसका नाम जनता क्यों रखा है? यह तो बड़ी प्यारी बेटी है। अब उन्होंने कहना शुरू किया कि इसकी 07 बड़ी बहिनें हैं। ये आठवे नंबर की है। सब कहने लगे, जनता आ गई। हमने इसका नाम जनता रख दिया। मैंने कहा, बहिन जी ये नाम अच्छा नहीं लग रहा है। आप इसका नाम बदल दो। ये सुन कर, उन्हें ना जाने क्या सूझा कि उन्होंने नाम रखने की जिम्मेदारी मुझे दे दी। मैं सोचने लगी क्या नाम रखूँ? मैंने बहुत सोच-समझ कर उसका नाम प्रतिभा रखा। फार्म में वही नाम लिखा।

उस दिन सोचा कुछ अच्छा काम किया। इसके बाद से प्रवेश के समय बेटियों के नाम यदि उटपटांग कोई बताता तो नाम सुधार करवा ही देती। प्रतिभा से याद आया कि बेटियों की प्रतिभा को नकारा नहीं जा सकता। यदि शिक्षक या माता-पिता थोड़ा सा भी पढ़ाई में मार्गदर्शन देते हैं तो इनकी प्रतिभा में चार चाँद लग जाते हैं। प्रतिभाशाली बेटी से याद आई अनु। अनु छोटी थी। विद्यालय में प्रवेश दिलवाया गया। सभी बच्चों के साथ वह भी जाने लगी। विद्यालय में मन अभी लगा भी नहीं था कि, एक दिन रोते-रोते अनु घर आई। घर आकर माँ से स्कूल चलने की जिद करने लगी कि आपको स्कूल में बुलाया है। बेटी की जिद पर माँ, बेटी के साथ स्कूल पहुँची। स्कूल में पहुँचने पर पाया कि शिक्षिका बहुत गुस्से में थी वह बोली-आपकी बेटी कुछ नहीं पढ़ती, इसके दिमाग में भूसा भरा है। माँ को शिक्षिका की बात पसंद नहीं आई व अनु को लेकर घर आ गई। घर पर अनु की पिटाई हुई। माँ को अनु की प्रतिभा पर विश्वास था। घर पर पढ़ाई शुरू करवाई, लेकिन माँ ने हार नहीं मानी।

ये बातें ध्यान देने योग्य है कि हर बच्चे में प्रतिभा छिपी है। आवश्यकता है निखारने की। अनु की प्रतिभा को माँ ने पहचाना व आगे बढ़ाया। फिर कुछ दिन बाद एक ऐसे शिक्षक मिले जिन्होंने कहा कि आपकी बेटी आपका नाम रोशन करेगी। अनु पढ़-लिख कर शिक्षिका बनी व उसने अपनी जैसी अनेक बेटियों को पढ़ाया व आगे बढ़ाया।

हमारे देश में अनु जैसी अनेक बेटियाँ है जिन्होंने खुद संघर्ष किया व संघर्षशील बेटियों को सहारा दिया। बेटियाँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। गगन में पायलट बन प्लेन उड़ाती हैं। अंतरिक्ष में सुनीता चावला है तो एवरेस्ट की विजेता बछेन्द्री पाल है, वैज्ञानिक है, सेना में है, डॉक्टर इंजीनियर आदि है। हौंसलों से आगे बढ़ती। बेटियों के मुख पर एक ऐसी चमक दिखाई देती है जो दूसरों को प्रेरणा देती है। बढ़ते कदमों की ये गूँज अब कम न होगी। बेटियाँ इस देश की बगिया को अपने ज्ञान से, अपने कौशल से, अपने हौंसलों से, अपनी प्रतिभा से सुरभित करती रहेगी।

क्योंकि
कोमल है, कमज़ोर नहीं...
तू शक्ति का नाम ही नहीं है
जग को जीवन देने वाली है।
......मौत भी तुझसे हारी है।

संयुक्त निदेशक (कार्मिक)
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
मो: 9928083401

शिक्षा विमर्श

गिजुभाई बधेका का दर्शन

❒ चैनाराम सीरवी

"प्रतिपल मैं नन्हें बालकों में बसने वाली महान आत्मा के दर्शन करता हूँ। यह दर्शन मेरे भीतर एक प्रेरणा जगा रहा है कि बालकों के अधिकारों की स्थापना करने के लिए ही मैं जीऊँ और यही काम करते-करते मर मिटू।" गिजुभाई बधेका

मानव स्वभाव से ही चिंतनशील व जिज्ञासु प्राणी है। वह हमेशा किसी न किसी प्रकार का चिंतन अवश्य करता रहा है। सत्य, सत्ता, मूल्य, शिक्षा, मानवीय जीवन की समस्याओं को जितना समझने व सुलझाने का प्रयास करता है, उतना ही प्रखर उसका चिंतन होता है। प्रत्येक व्यक्ति की चिंतन प्रक्रिया एक भिन्न-भिन्न होती है क्योंकि उनका बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव पड़ता है।

दर्शन द्वारा निर्धारित जीवन के लक्ष्यों को शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। शिक्षा दर्शन में शिक्षा संबंधी समस्याओं को दार्शनिक दृष्टिकोण एवं दार्शनिक विधियों से हल करने की प्रक्रिया सम्मिलित हैं। गिजुभाई के शिक्षा दर्शन का तात्पर्य यह है कि उनके अनुसार शिक्षा का अर्थ, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध इत्यादि प्रश्न पर विचार करने से हैं।

गिजुभाई का जन्म 15 नवम्बर 1885 में गुजरात के चितल गाँव में हुआ था। बाल्यकाल से ही विद्यालय वातावरण से वे प्रसन्न नहीं थे। अपने स्कूल शिक्षा में उन्हें बचपन में मारपीट, डाँट-डपट व भय का सामना करना पड़ा। इसी कारण उन्होंने ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया जिसमें बालकों को पूर्ण स्वतंत्रता मिल सकें।

गिजुभाई 1910 में वकालत की शुरूआत की किंतु इस कार्य में उन्हें आनंद व संतोष प्राप्त नहीं हुआ। 1916 में दक्षिणामूर्ति विद्यार्थी भवन से जुड़ गए। यह एक शैक्षिक संस्था थी। इस संस्था से उनको अपने जीवन की सही दिशा मिल गई। यहीं पर बाल शिक्षण के नए प्रयोगों की दिशा में सक्रिय हुए। गिजुभाई के शिक्षा दर्शन की जानकारी हमें उनके द्वारा रचित पुस्तकों से पता चलती है। 1. दिवास्वपन, 2. प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षण व शिक्षण पद्धति, 3. मांटेसरी पद्धति, 4. माता-पिता से, 5. ऐसे हो शिक्षक, 6. बाल शिक्षण जैसा मैंने समझा, 7. कथा कहानी, 8. चलते-फिरते शिक्षा। उनका सारा साहित्य बाल मनोविज्ञान, शिक्षा शास्त्र एवं किशोर साहित्य से संबंधित हैं।

शिक्षा का संप्रत्यय : गिजुभाई का मानना है कि शिक्षा जीवन व्यापी है। कोई व्यक्ति विशेष किसी अन्य को सिखा नहीं सकता। सीखने की प्रक्रिया अनुभव पर आधारित है। गिजुभाई का शिक्षा-दर्शन बालक के इर्द-गिर्द घूमता है। गिजुभाई शिक्षा को चतुर आयामी मानते हैं। विद्यालय, बालक, शिक्षक एवं माता-पिता या अभिभावक। इनमें से यदि एक आयाम भी कमजोर हो जाए तो शेष आयाम स्वतः ही महत्त्वहीन हो जाएँगे। वे बच्चों की आजादी के भरपूर समर्थक थे। उनका मानना है कि बच्चों को पूरी स्वतंत्रता देकर ही उन्हें बेहतर ढंग से शिक्षित किया जा सकता है। बालकों को मारना, पीटना, किसी तरह का दंड देना, उन्हें उचित नहीं लगता था। बालकों के साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार के समर्थक थे।

उनका मानना था कि जो बालक मानसिक रूप से स्वस्थ होता है, तो वह प्रत्येक कार्य करने की क्षमता रखता है। वह जिज्ञासा एवं ज्ञानार्जन की प्रवृत्तियों के द्वारा सफल हो सकता है। परंतु इसके लिए उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है। बालक में हमेशा स्वयं कार्य करने की उत्कंठा होती है। इसलिए वह अपने कार्यों में दूसरों का हस्तक्षेप पसंद नहीं करता है। बच्चे इस प्रकार का वातावरण पसंद करते हैं जिसमें वे स्वतंत्र होकर कल्पना कर सकें तथा प्रत्येक काम को स्वयं करके देख सकें।

शिक्षा का उद्देश्य : गिजुभाई बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। उनके द्वारा शिक्षा बालकों में व्यक्तित्व विकास, सृजनात्मकता व स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास, स्व अनुशासन का विकास, सामाजिकता का विकास करना है। वे शिक्षक की भूमिका मित्र, सहायक तथा मार्गदर्शक के रूप में मानते है। वे बालक को शिक्षा द्वारा स्वावलंबी, निर्भय, सृजनशील, हुनरमंद, कौशलशाली तथा अभिव्यक्तिशाली बनाने पर जोर देते हैं। उनके अनुसार शिक्षण व्याख्यान पर आधारित न होकर वार्तालाप पर आधारित होना चाहिए।

पाठ्यक्रम : गिजुभाई का मानना है कि विद्यालय का पाठ्यक्रम बालक की व्यक्तिगत भिन्नता, प्रेरणा, मूल्यों एवं सीखने के सिद्धांतों के मनोवैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित होना चाहिए। उनका कहना है कि पाठ्यक्रम अधिक से अधिक क्रियात्मक हो। उनके द्वारा स्थापित बाल मंदिर के पाठ्यक्रम में रचनात्मकता एवं स्वानुभवों को प्रधानता दी गई थी। 6 वर्ष के आयु के सामान्य बच्चों के लिए स्थापित विद्यालय बाल मंदिर में निम्नलिखित विषयों एवं पाठ्य वस्तु को स्थान दिया गया।

भाषा : अक्षर ज्ञान पढ़ना-लिखना। गणित-अंकों का ज्ञान एवं पहचान, दैनिक प्रयोग की गणितीय संगणना जैसे जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग, गिनती करना आदि।

संगीत एवं कला : प्रारम्भिक स्तर का संगीत, चित्र बनाना तथा उनमें रंग भरना आदि।

प्रकृति अध्ययन : भ्रमण, सामान्य भौगोलिक जानकारी, वृक्ष वनस्पति, नदी तालाब आदि का निरीक्षण।

स्वास्थ्य : स्वास्थ्य एवं शारीरिक सफाई संबंधी नियमों की जानकारी व उनका अनुपालन।

बागवानी : क्यारी बनाना, पौधा लगाना, सिंचाई करना आदि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गिजुभाई छोटे बच्चों को व्यावहारिक जानकारी दिए जाने पर अधिक जोर देते हैं। वे अध्यापक के सहयोग से स्वानुभवों द्वारा सीखते जाएँगे। वे बच्चों को किसी भी प्रकार रटा दिए जाने के पक्ष में नहीं हैं। यहाँ वे बालक के इंद्रिय विकास को बहुत महत्त्व देते हैं और विद्यालयों में उन्हें स्थान दिए जाने की वकालत करते हैं। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि आरंभ में इंद्रिय-शिक्षण न लेने के कारण आगे की सारी पढ़ाई बेकार हो जाती है। यही कारण है कि प्रारम्भिक शिक्षा में वे बालकों के शारीरिक

विकास व इंद्रिय प्रशिक्षण के प्रति अधिक सजग हैं। इंद्रियों का शिक्षण मन व आत्मा के शिक्षण के लिए नींव रूप है। बाल मंदिर की शिक्षण व्यवस्था का उदाहरण देते हुए उन्होंने लिखा भी है-'बालक बाल मंदिर के मुक्त वातावरण में वहाँ के विशाल मैदान में रहकर अपने शरीर को खूब कसता रहता है। जो बालक शुरू में फुर्ती के साथ चल फिर नहीं सकते। कुछ ही दिनों में भी सारे मैदान में सरपट दौड़ने लगते हैं। गिजुभाई विद्यालय पाठ्यक्रम में क्रियात्मक एवं रचनात्मक इन दोनों प्रकार के प्रशिक्षण को पर्याप्त महत्त्व देने की वकालत करते हैं।

शिक्षण-पद्धति : गिजुभाई के शिक्षा चिंतन का मेरुदंड उनके द्वारा स्वीकृत शिक्षण पद्धतियाँ है। वे शिक्षक द्वारा पारंपरिक पठन-पाठन को छोटे-छोटे बच्चों के लिए अनुपयुक्त, अमनोवैज्ञानिक मानते हैं। उनका कहना कि हम एक ही शिक्षण पद्धति द्वारा विविध विषयों की जानकारी बच्चों को न दे सकेंगे। हमें अवश्य ही विषय की प्रकृति बच्चों की रुचि के अनुरूप शिक्षण विधियाँ प्रयुक्त करनी होगी। बच्चों को किसी प्रकार का शारीरिक दंड दिए बिना प्यार दुलार के साथ पढ़ने-लिखने के लिए उन्होंने बाल शिक्षण के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किए। अपनी प्रसिद्ध कृति दिवास्वप्न में वे लिखते हैं कि 'मैंने पढ़ा और सोचा तो बहुत कुछ था। परंतु मुझे अनुभव नहीं था। मैंने सोचा मुझे स्वयं अनुभव भी करना चाहिए। तभी मेरे विचार पक्के बनेंगे। तभी यह मालूम हो सकेगा कि मेरी आज की कल्पना में कितनी सच्चाई और खोखलापन है।

गिजुभाई ने अनेक रोचक शिक्षण पद्धतियों का सूत्रपात किया है जिसे अपनाकर वर्तमान शैक्षणिक प्रक्रिया के दोषों का निवारण किया जा सकता है। वर्तमान भारतीय प्राथमिक शिक्षा के असफल होने के कारणों में एक कारण भारतीय शिक्षण प्रक्रिया है और इस शिक्षण प्रक्रिया में विशेषकर शिक्षण विधियाँ है। वर्तमान में शिक्षकों में जागरूकता पैदा की जाए कि वे विद्यार्थियों को रुचि के अनुसार शिक्षा प्रदान करके उनको व्यावहारिक प्रयोग में भी लाने का प्रयास करें। विषयवस्तु तथा कक्षा स्तर को ध्यान में रखकर शिक्षण विधि का चयन किया जाए। प्राथमिक शाला में प्रश्नोत्तर विधि तथा खेल पद्धति अधिक प्रभावी मानी जाती है। गिजुभाई बालकों को खेल पद्धति द्वारा पढ़ाते हुए, गाना गाते हुए, कार्य करना, वाद्य यंत्र बजाकर नृत्य कराते हुए, कहानी लिखवा कर, नाटक करके, बागवानी द्वारा प्रकृति के निरीक्षण द्वारा स्वतंत्र भ्रमण कराते हुए ज्ञान प्रदान करने के पक्षधर है। गणित शिक्षण में मांटेसरी पद्धति से शिक्षण पर जोर दिया।

विद्यालय : गिजुभाई के बाल मंदिर की अवधारणा में मोंटेसरी के बालघर (Children House) की झलक देखने को मिलती है। हाँ, यहाँ के वातावरण तथा शिक्षा के विचारों में भारतीय दर्शन में निहित अध्यात्म की छाप सर्वोपरि दिखाई देती है। उन्होंने विद्यालयों को मंदिर की संज्ञा दी और कहा कि बालक देवता है और शिक्षक को बाल देवोमय की भावना के साथ बालक के साथ कार्य करना है। उनका मानना है कि प्रेम भाव से परिपूर्ण वातावरण में अध्ययन-अध्यापन अधिक सहज है। अतः इस बात पर बड़ा जोर दिया है कि विद्यालयों में आपसी सहयोग एक-दूसरे के प्रति प्रेम, आस्था, सामूहिक क्रियाओं को प्रमुखता दी जाए।

गिजुभाई बच्चों में अपने इष्ट देव के दर्शन कर स्वयं को धन्य मानते हैं। वह बच्चों के सुख में सुखी व दुख में दुखी हो जाया करते थे। प्रत्येक शिक्षक में इस प्रकार के भाव को उन्होंने बहुत महत्त्वपूर्ण व आवश्यक माना है। दक्षिणामूर्ति बाल मंदिर में विभिन्न विषयों के शिक्षण के साथ-साथ शैक्षणिक प्रवृत्तियाँ तथा चरित्र निर्माण पर बहुत जोर दिया था। इससे सत्य, अहिंसा, करुणा, स्नेह, आदर, दया, त्याग, परोपकार, भाईचारा, ईमानदारी, परिश्रम तथा सहयोग जैसे उत्तम मानवीय गुण बच्चों में स्वतः विकसित हो जाते हैं।

गिजुभाई की दृष्टि में शिक्षक : गिजुभाई ने शिक्षकों को बच्चों का सहयोगी और मित्र के रूप में देखा। उन्होंने शिक्षक में निम्न गुणों का होना आवश्यक माना है-

- शिक्षक में गहन अवलोकन करने की क्षमता हो।
- शिक्षक धैर्यवान हो, बालकों को सीख देने के बजाय उनसे सीखने की प्रवृत्ति हो। वह बालकों की उतनी ही सहायता करे जितनी अपेक्षित है। गैर जरूरी सहायता उनके निवास में बाधक बनती है।
- वाणी का संयम शिक्षक का गुण जहाँ तक संभव हो वह मौन कठोरव्रत को धारण करें। जहाँ आवश्यक हो वहीं वाणी का प्रयोग करें।
- शिक्षकों को निरुभिमानी होना चाहिए। उनमें इतनी विनम्रता होनी चाहिए कि उनसे कहीं कोई त्रुटि न हो, बालकों के साथ कहीं कोई अन्याय न हो, इसके लिए हमेशा सावधान रहें।
- शिक्षक में बालमनोवैज्ञानिक वाले गुण होने चाहिए। निरीक्षण की शक्ति, सावधानी, धैर्य, तत्काल निर्णय की शक्ति आदि गुण तो होने जरूरी हैं। शिक्षक की दृष्टि व बालक की दृष्टि का मेल एक नाजुक यंत्र है- यह ख्याल उनके मन में निरंतर बना रहना चाहिए।
- शिक्षक का एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण गुण यह है कि बालक के व्यक्तित्व के प्रति उसमें अगाध विश्वास हो। गहरी सहानुभूति हो। खासतौर पर बालक में उसका श्रद्धा भाव जरूरी है।

गिजुभाई का कहना है कि शिक्षक की दृष्टि वैज्ञानिक की भाँति पैनी हो, पूर्वाग्रह से मुक्त हो। विज्ञान की प्रामाणिकता और संत की पावनता-शिक्षक निर्मित यह दो आधार स्तंभ है। शिक्षक प्रेम, स्नेह, त्याग, परोपकार कर्त्तव्य परायणता की भावना से परिपूर्ण हो। तभी वह बच्चों की सेवा कर सकेगा। वे चाहते थे कि शिक्षक समर्पण की भावना से बिना किसी लोभ-लालच के अपने को, बच्चों का भविष्य निर्माता समझे।

गिजुभाई की दृष्टि में शिक्षार्थी : गिजुभाई ना केवल बच्चों की क्षमताओं, बौद्धिकता में विश्वास करते हैं, अपितु वे उनकी सृजनात्मकता में भी अगाध श्रद्धा रखते हैं। ईश्वर ने मनुष्य का सृजन किया और उसे अपनी सृजन शक्ति प्रदान की। मनुष्य के सृजन भी मनुष्य की अनंत शक्ति के समान ही अगणित है।

घर और विद्यालय दो ऐसे स्थल हैं, जहाँ बालकों की सृजनशीलता का सहज स्वाभाविक रीति से विकास होता है और यहीं वह स्थान है, जहाँ उनके सृजन को रोकने, विकृत करने अथवा निर्मूल करने का काम होता है। जो लोग अपनी आँखों को खुला रखकर देखते हैं। उन्होंने देखा होगा कि बालक धूल में लकीरें खींच रहा है, वर्षा ऋतु में गीली मिट्टी के लड्डू बना रहा है।

मिट्‌टी से पकौड़े अथवा चकला बेलन बना रहा हैं या गीली मिट्‌टी की ढेरी में पैर डालकर मकान बना रहा है। मिट्‌टी की दीवार बनाकर वर्षा के पानी को रोक रहा है। तो कहीं बेली हुई रोटी पर कटोरी गिलास रखकर उसकी मदद से नई-नई ज्यामितीय आकृतियाँ बना रहा है। बालक की तमाम कृतियाँ बाल सृजन के व्यक्त-अव्यक्त, स्पष्ट-अस्पष्ट, छोटे लेकिन सादे और सुंदर नमूने हैं। इनमें कहीं संगीत हैं तो कहीं साहित्य, तो कहीं कला है, स्थापत्य, शिल्प के बीज भी इनमें है। वहीं शिक्षक बालकों के इस वैविध्यपूर्ण सृजन को देख समझ सकता है।

गिजुभाई का यह भी मानना है कि दंड, पुरस्कार, परीक्षा और प्रदर्शन सृजन के घोर शत्रु हैं। दंड के भय से या तो बालक छिपकर सृजन करता है या फिर सर्जन उसकी प्रेरणा, उसका प्राण, भय के मारे विलुप्त हो जाता है। अतः इनसे बचना चाहिए।

अनुशासन : गिजुभाई का मानना है कि यह ठीक है कि शिक्षार्थी को अनुशासित होना है। शिक्षक को उन्हें अनुशासित बनाने का कार्य करना है किंतु यह कार्य रोज-रोज की डाँट-डपट, दंड से कम ही संभव है। यहाँ शिक्षक का व्यवहार, उसकी बोली, भाषा, गुण सभी कुछ काम आएगा किंतु दंड नहीं। वह दंडात्मक अनुशासन के प्रबल विरोधी थे। यही कारण है कि उन्होंने अपने बाल मंदिर में स्वानुशासन पर अधिक जोर दिया। शिक्षक को बच्चों की उतनी ही मदद करनी चाहिए जितने वे व्यक्तिगत जरूरतें पूरी कर सकें तथा वे इच्छाओं को पूरा होते हुए देखकर संतुष्ट हो सके।

हम देखते हैं कि आदर्श शिक्षक के सान्निध्य में पलने-बढ़ने वाला बालक स्वतः अनुशासित होगा। इसके लिए किसी अन्य प्रयासों की आवश्यकता नहीं होगी। आप बालक के आसपास का वातावरण स्वाभाविक, प्राकृतिक व स्वतंत्र रखें। वह स्वाभाविक रूप से विकसित होगा। उन्होंने कहा कि वही काम सच्चा मानें, व्यस्त रखें, प्रसन्न रखें, एकाग्र रखें जिसको करते-करते बालक हँसे, गाए और दूसरों को भी उसमें सम्मिलित करना चाहे।

परीक्षा की आवश्यकता : गिजुभाई का कहना है कि हम बच्चों को पढ़ाने का उद्देश्य परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना ही न रखें। हम शिक्षा के द्वारा प्राप्त की गई जानकारी को व्यावहारिक उपयोगिता से भी बच्चे को अवगत कराएँ और इस क्रमिक प्रक्रिया द्वारा बालक को उत्तम व्यक्तित्व का स्वामी बनाएँ। दिवास्वपन के नायक (शिक्षक) के माध्यम से परीक्षा की आवश्यकता के विषय में वे कहते हैं कि 'जब तक चाहे जो विद्यार्थी पढ़ता है और चाहे जो शिक्षक पढ़ाता है तब तक परीक्षा की आवश्यकता भी रहेगी। परीक्षा हटाई तो तभी जा सकती है जब विद्यार्थी दिल की उमंग के बस होकर पढ़ने और पढ़ाने में कुशल, कलाकार, शिक्षक पढ़ाने की उमंग से पढ़ाने बैठे। लेकिन आजकल की इस स्थिति में तो परीक्षा के प्रवेश की पूरी गुंजाइश है।'

वर्तमान व्यवस्था में हम देखते हैं कि परीक्षा विद्यार्थियों के लिए एक ऐसा हौवा है। एक ऐसा भय हैं जो उन पर गहरा मानसिक दबाव बनाता है। गिजुभाई परीक्षा के द्वारा बालकों पर पड़ने वाले इस मनोवैज्ञानिक दबाव को उचित नहीं मानते। उनका मानना है कि परीक्षा का स्वरूप व उसका व्यवस्थापन कुछ इस प्रकार हो कि जिससे वह बालक को रोजमर्रा के शैक्षिक कार्यक्रम का एक हिस्सा प्रतीत हो। इसके लिए उन्होंने आंशिक परीक्षाओं के चलन पर जोर दिए जाने का प्रस्ताव रखा और कहा आप केवल छमाही और सालाना परीक्षा लेते हैं इसके बदले मासिक परीक्षा लेना शुरू कीजिए। गिजुभाई की दृष्टि में प्रत्येक माह परीक्षा की प्रक्रिया को गुजरते हुए बालक इन परीक्षाओं को सामान्य रूप में लेने लगेगा और किसी प्रकार के मानसिक दबाव को भी अनुभव नहीं करेगा।

यहाँ वे परीक्षा के उद्देश्य की भी समीक्षा करते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि परीक्षा होशियार विद्यार्थियों की प्रगति को मापने के लिए नहीं बल्कि कच्चे और कमजोर विद्यार्थियों को जगाने के लिए, उनकी कमजोरी का ठीक पता लगाने के लिए ली जाए। निःसंदेह परीक्षा प्रक्रिया में निहित यह भाव, असफल विद्यार्थियों को हीन भावना से बचाएगा वहीं होशियार बच्चों को गुरुर की भावना से। दूसरों को हीनता से देखने के भाव से भी बचा जा सकेगा।

गिजुभाई का मानना है कि परीक्षा में प्रतिस्पर्धा का भाव समाहित कर देना छोटे बच्चों के कोमल मन के लिए ठीक नहीं है। उन्होंने कहा है कि अपने बच्चे को स्पर्धा के विषय से जरूर बचा लीजिए। दो बालकों के बीच होड़ या स्पर्धा खड़ी करके उनसे काम करवा लेने का तरीका एक हल्का तरीका है। हम बच्चों से रोज ही कहते हैं आओ देखें पहले कौन दौड़ता है? पहले कौन घूमता है? कौन पहले पानी लाता है? इस तरीके से हमारा काम तो हो जाता है, लेकिन बालक की आदत बिगड़ जाती है। जब-जब उसको होड़ में उतरने का मौका मिलता है, तब-तब वह दूसरों को हराकर, मारकर, दूसरों की कब्र पर चलकर, खुद जीत का सुख लूटने की कोशिश करता है।

सही रूप में देखा जाए तो यह भावनाएँ बच्चों के लिए उचित नहीं है। बेहतर तो यही होगा कि बच्चा अपनी रोजमर्रा की शैक्षिक गतिविधियों से जो सीखे उसे प्रसन्नतापूर्वक बगैर किसी मानसिक दबाव के शिक्षक के सम्मुख प्रस्तुत करें और शिक्षक उनमें पाई गई कमियों की जाँच पड़ताल कर उन तथ्यों को पुनः सिखाने का प्रयास करें जो बालक ना सीख सका है, उत्तम प्रदर्शन पर उसे नवीन सामग्री सीखने को तत्पर करें। इस पूरी प्रक्रिया में पाठ के सार को आत्मसात करना प्रमुख है, न कि तथ्यों को याद कर लिख देना। रटन्त पद्धति पर आधारित हमारी परीक्षा व्यवस्था को गिजुभाई ने बच्चों के लिए उचित नहीं माना।

उनका सुझाव था कि 'परीक्षा उन्हीं विषयों की ली जाए जो परीक्षा द्वारा जाँचे जा सकते हैं। बाकी विषयों को परीक्षा से मुक्त रखा जाए। परीक्षा के समय विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकें देखकर उत्तर देने की स्वतंत्रता भी दे दी जाए। हम उनसे कह दे कि जो चीज याद न हो उसको पुस्तक में देख लो और फिर जवाब दो। जो जबानी कह न सके किताब में देखकर समझाएँ। जवाब देते समय विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों का कैसा प्रयोग करता है इसी में तो उसकी परीक्षा है।

संक्षेप में सार रूप में कह सकते हैं कि जो गिजूभाई के शैक्षिक प्रणाली में जो विशेषताएँ पाई जाती है। वह इस प्रकार है- बालकों में वैयक्तिक विकास सृजनात्मकता का विकास, स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास, स्व-अनुशासन का विकास, सामाजिक व्यवहारिकता का विकास तथा शिक्षक की भूमिका, मित्र, सहायक एवं मार्गदर्शक के रूप में होती है।

गिजुभाई ने बाल शिक्षा के विकास में क्रांति ला दी है। उनके द्वारा बालकों के शिक्षण

हेतु जो नए-नए प्रयोग किए गए हैं। वे आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में नवीनीकरण के आधार स्तंभ हैं। गिजुभाई ने प्राथमिक शिक्षा में अनेक समस्याओं को देखा तथा उनको दूर करने हेतु पर्याप्त सुझाव भी दिए। प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम बोझिल तथा मनोवैज्ञानिक होना, बालक की मनोवृत्तियों, सर्जनशीलता पर ध्यान नहीं देना, शिक्षण प्रक्रिया का शिक्षक तथा विषय वस्तु केन्द्रित होना, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अभाव होना तथा शिक्षा का उद्देश्य अधिक अंक प्राप्त करना होना। इन समस्याओं के निवारण हेतु गिजुभाई ने बाल केन्द्रित शिक्षा पद्धति का विकास किया। जिसमें शैक्षिक वातावरण आनंददायी होता है, बालक की क्षमताओं का पूर्ण विकास होता है। प्रत्येक बालक के रुचि के अनुसार शिक्षा मिले। बालकों में तर्क, चिंतन, वर्गीकरण, विश्लेषण, संश्लेषण तथा सृजनात्मकता का विकास हो। अतः इस प्रकार के शिक्षा दर्शन से बालकों में स्व-अनुशासन एवं आनंद शिक्षा की ओर प्रेरित किया जा सकेगा।

गिजुभाई ने अपने विचारों को सफल शिक्षक के रूप में जिया। सिद्धांतों का बखान करना अलग बात है और उनके अनुरूप आचरण करना अलग। बाल शिक्षा की एक विशाल लहर खड़ी करने का अथक प्रयास किया। उन्होंने जिन सिद्धांतों की नींव रखी। आज सम्पूर्ण शिक्षा जगत उनके समकक्ष नतमस्तक हैं। गिजुभाई महान शिक्षाविद थे। वे बाल प्रेमी थे। बालकों को स्वतंत्रता और सुख मिले, इसके लिए कोई भी बाधा उन्हें रोक नहीं सकती। उन्होंने कहा कि अपनी ओर से बालकों के लिए प्रयत्न करने वाले सभी लोगों का मैं प्रशंसक हूँ। उन्होंने अपनी **निजी स्वार्थ को त्यागकर अपने प्राणों को न्यौछावर करने का जो प्रयत्न किया है,** वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा। उनके कार्यों में सूझ और दूरदृष्टि के दर्शन होते हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उनके सिद्धांतों के अनुगूँज को भी सुना जा सकता है। शिक्षा को नई दिशा और दशा देने वाली गिजुभाई का योगदान अविस्मरणीय व भावी बालकों एवं शिक्षकों को गौरवान्वित करने वाला है।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जावाल, सिरोही
मो: 8005733193

पर्यावरण संरक्षण

पारिवारिक उत्सवों का हिस्सा बनें वृक्षारोपण

❐ कुलदीप सिंह

पर्यावरण संरक्षण पुरातन समय से ही हमारी संस्कृति में रहा है। शास्त्रों और धार्मिक ग्रंथों में वन संरक्षण व जल संरक्षण पर विस्तार पूर्वक वर्णन मिलता है। भारतीय व्रत त्योहारों में ऋतु अनुसार वृक्षों व फलों के महत्त्व का वर्णन मिलता है। धार्मिक अनुष्ठानों में विभिन्न प्रकार के वृक्षों के पत्ते, पुष्प, लकड़ी, जड़ व छाल की जरूरत हमें पड़ती है। धार्मिक कार्यों में वृक्ष व उसके हिस्सों की आवश्यकता वैज्ञानिक तथ्यों से परिपूर्ण है। हर एक वृक्ष अंश अलग-अलग प्रकार से आरोग्य और समृद्धि देने वाला है। धार्मिक कार्यों में वृक्षों और जल स्रोतों का पूजन यह दर्शाता है कि हजारों वर्ष पूर्व भी हमारे पूर्वजों का ज्ञान कितना विकसित था। हजारों वर्ष पूर्व पर्यावरण संरक्षण को धर्म का हिस्सा बनाने में शायद यही सोच रही होगी कि आने वाली संततियाँ पर्यावरण संरक्षण का काम धर्म का हिस्सा मानकर तो कर ही सकें।

धर्म ग्रंथों में वृक्षारोपण के पुण्यों को विभिन्न प्रकार से वर्णित किया गया है। जैसे एक उदाहरण के तौर पर शिव महापुराण में बताया गया है कि यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में एक बेलपत्र का पौधा लगा देता है तो उसे एक लाख कन्याओं के कन्यादान का फल प्राप्त होता। ग्रंथों में यह भी बताया गया है कि एक वृक्ष लगाना सौ पुत्रों के पालन पोषण के बराबर है।

उपर्युक्त भूमिका में हमारी पर्यावरण संरक्षण की समृद्ध संस्कृति के साथ-साथ हम अपने दैनिक जीवन में भी हर छोटे-बड़े पारिवारिक उत्सव में वृक्षारोपण को शामिल कर पर्यावरण संरक्षण में अपना बड़ा योगदान दे सकते हैं। हम निम्न प्रकार से पारिवारिक उत्सवों में वृक्षारोपण शामिल कर सकते हैं:

1. जन्मदिन पर वृक्षारोपण- हमारे समाज में सामान्यतया हर परिवार में अपने-अपने अनुसार बच्चों के जन्मदिन मनाए जाते हैं। हम जन्मदिन पर बच्चे के हाथों से पौधारोपण करवाकर जन्मदिन की खुशियों को बढ़ा सकते हैं। जब-जब हमें वह पौधा दिखाई देगा, जन्मदिन की खुशी ताजा होती रहेगी। हम परिवार के किसी भी सदस्य के जन्मदिन को यादगार बनाने के लिए वृक्षारोपण कर सकते हैं।

2. वैवाहिक वर्षगांठ/पूर्वजों की पुण्यतिथि/अन्य कोई यादगार दिनः हमारे जीवन में बहुत यादगार दिन होते हैं, इन अवसरों पर हम अलग-अलग तरीकों से उत्सव मनाते हैं। ये अवसर हमारे जीवन में वैवाहिक वर्षगांठ, पूर्वजों की पुण्यतिथि, नौकरी लगने का दिन आदि के रूप में हो सकते हैं। इन अवसरों को और अधिक यादगार बनाने के लिए इन उत्सवों की खुशी हम वृक्षारोपण के साथ मना सकते हैं।

3. परिवार में कोई सुखद कार्य होने की खुशी में: नए घर में गृह प्रवेश की खुशी, नौकरी लगने की खुशी, शादी होने की खुशी, किसी परीक्षा में सफल होने की खुशी, कोई पुरस्कार प्राप्त होने की खुशी या अन्य कोई खुशी के मौके पर वृक्षारोपण कर हम खुशी के पलों को चिरस्थाई जी सकते हैं। इस प्रकार हमारे परिवार के यादगार लम्हों पर रोपे गए पौधों से हमारा भावनात्मक लगाव रहता है, जिससे नियमित रूप से हम उनकी देखभाल भी कर पाते हैं।

अब बात आती है स्थान की, कुछ लोग कहेंगे कि वृक्षारोपण कर तो दें पर हमारे पास जगह नहीं है। जिनके पास जगह का अभाव है वे किसी सार्वजनिक पार्क, अस्पताल, विद्यालय आदि जगह पर वृक्षारोपण कर सकते हैं। जहाँ हम नौकरी आदि करते हैं उस स्थान पर हम वृक्षारोपण कर सकते हैं। जिस विद्यालय में हमारे बच्चे पढ़ते हैं उस विद्यालय में वृक्षारोपण कर सकते हैं। जिस विद्यालय में हम पढ़ाई करके आए हैं उस विद्यालय में वृक्षारोपण कर सकते हैं। किसी मंदिर किसी आश्रम आदि पर वृक्षारोपण कर हम अपनी खुशियों को बढ़ा सकते हैं। सज्जनों जरा सोच कर देखो कि आपके बच्चे के जन्मदिन पर रोपा गया पौधा जब वृक्ष का रूप लेगा और उसकी छाँव में किसी जीव को बैठा देखोगे तो वह खुशी कैसी होगी, शायद उसका वर्णन करना कठिन हैं।

उपर्युक्त चर्चा कोई उपदेश नहीं अपितु यह तरीका मैंने अपने निजी जीवन में अपनाया हुआ है। मेरे परिवार में प्रत्येक के जन्मदिन पर हम कहीं ना कहीं वृक्षारोपण जरूर करते हैं। तो आइए हम सबसे निवेदन हैं कि इस पुण्य कार्य की कड़ी में हम सब जुड़े और पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दें।

राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय
कबई, नदबई, भरतपुर **मो: 9983288679**

पुस्तक समीक्षा

नर्मदे हर

लेखक : **डॉ. राजेश कुमार व्यास,** प्रकाशक : **नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, नई दिल्ली,** पृष्ठ संख्या : **144,** मूल्य : **₹ 190,** संस्करण : **2018**

कोई यात्रा अगर ठीक से की जाए, तो वह परिक्रमा में बदल जाती है। ठीक से यात्रा वृत्तांत लिखा जाए, तो वह पाठकों को भी अपने साथ यात्रा पर लिए चलता है। कुछ आँखें केवल लम्बाई, चौड़ाई देखती हैं, तो कुछ सक्षम आँखें गहराई भी नाप लेती हैं। यात्राओं का भी अपना 'डीमेंशन' या आयाम होता है। आम तौर पर वैज्ञानिक तकनीक 3डी यानी त्रि-आयाम तक पहुँचने में कामयाब हुई है। 3 डी तक आँखों के जरिए पहुँचा जा सकता है, किन्तु डॉ. राजेश कुमार व्यास की जो मल्टी-डीमेंशन या बहु-आयामी पहुँच है, वह उनकी व्यापक दृष्टि से ही संभव होती है। यहाँ निगाहें तो केवल भौतिक रूप से इधर-उधर जाती हैं, वस्तुत: आप दृष्टि के सहयोग से चीजों को अंदर और बाहर से निहारते चलते हैं। यहाँ यात्रा-दृष्टि में बहुमुखी विद्वता भी है और प्रवाहमान भावपूर्ण कवि की कोमलता भी। राजेश व्यास यात्राओं को अपनी ऐसी ही सात्विक विशिष्ट दृष्टि से समृद्ध और सुग्राह्य बना देते हैं। यात्राओं को परिक्रमाओं में बदल देते हैं।

यहाँ अच्छे यात्रा वृत्तांत ऐसी कहानी की तरह हो जाते हैं, जिनका फिल्मांकन संभव है। आप केवल संवाद नहीं कर रहे हैं, पटकथा भी देख रहे हैं। रंग से लेकर ध्वनियों तक और आस्था से तर्क तक राजेश व्यास आपको सहजता से ले जाते हैं। इस संग्रह में कुल 36 यात्रा अंश या यात्रा लेख हैं और इसमें सबसे बड़ा आकर्षण 'नर्मदे हर' खंड वाली 11 यात्राएँ हैं। नर्मदा यात्रा वास्तव में नर्मदा परिक्रमा ही है। संसार की एकमात्र नदी, जिसकी परिक्रमा का समृद्ध विधान है। राजेश व्यास नर्मदा के उद्‌गम कुंड के पास नर्मदा दर्शन में डूब जाते हैं और लिखते हैं, 'मैं वहीं बैठ जाता हूँ। कुंड के पानी के छींटे डाल मन ही मन गुनगुनाता हूँ, छाँटा लागे नीर का, पाप गया शरीर का। लो हो गया नर्मदा स्नान।...श्रद्धानत हो, नर्मदा के पानी का आचमन करता हूँ। वहीं स्नान कुंड के पास बने मंदिरों में विचरते मन में नर्मदा परिक्रमा का विचार आता है। पर सोचता हूँ उस पथ पर तो 3 साल 3 माह 13 दिन लग जाएँ! सरकारी नौकरी से अवकाश कैसे मिलेगा? संसारी बंधनों से बंधे काम से मुक्ति कैसे होगी?'

यहाँ यात्रा वृत्तांत में एक बड़ा अंतर पैदा हो जाता है, समझ में आ जाता है कि राजेश व्यास सामान्य यात्री या पर्यटक नहीं हैं, वे अवसर खोजकर निकले तीर्थयात्री हैं। भारतीय परंपरा में तीर्थयात्रा का अपना विधान है। राजेश व्यास तीर्थ यात्रा के नियमों का यथासंभव पालन करते चलते हैं। इनके यहाँ कहीं जाकर केवल देखना पर्याप्त नहीं है, यहाँ आकर अपने आपको सराबोर कर लेना है। जहाँ गए, वहाँ स्वयं को यदि सराबोर नहीं किया, तो फिर वहाँ जाने का क्या लाभ? जल है, तो स्पर्श-स्नान भी होगा और मंदिर है, तो दर्शन-पूजन भी, अर्पण भी और तर्पण भी। इस यात्रा वृत्तांत संग्रह की सबसे बड़ी सात्विक विशेषता यह है कि यात्रा में जहाँ कहीं भी महादेव शिव मिलते हैं, राजेश व्यास उन पर जल अवश्य अर्पित करते हैं और अभिभूत होते हैं। उनका प्रेम न केवल शिव के प्रति, बल्कि पूरी यात्रा और यात्रा स्थल के प्रति उमड़ पड़ता है। यह सारी भाव भंगिमा और उसकी व्यंजना राजेश व्यास के यात्रा वृत्तांत में मुखर होकर निखर आती है। वे शिव से शिव तक की यात्रा को आकुल लगते हैं। यह आकुलता यात्रा वृत्तांतों के समकालीन लेखन में दुर्लभ है।

हमारी संस्कृति कहती है कि हर चीज या हर बात का एक देवता होता है। वाकई 'नर्मदे हर' यात्रा वृत्तांत नाम की जो यह पुस्तक है, उसके भी देवता हैं – महादेव शिव। कई बार तो ऐसा लगता है कि शिव को खोजते हुए ही यह पुस्तक लिखी गई है। सदैव शिव सूचना को आकुल राजेश व्यास को कोई भी बता देता है, तो अल्पज्ञात स्थान पर वे शिव को खोजते पहुँच जाते हैं। उनका यह पहुँचना कहीं भी निरर्थक नहीं जाता। यात्रा सार्थक हो जाती है, क्योंकि वे न केवल स्वयं धन्य हो जाते हैं, अपितु अपने पाठकों को भी धन्य कर देते हैं। भारतीय परंपरा में थोड़ी-थोड़ी दूर पर शिव की उपस्थिति है, वे संस्कृति के सबसे सहज देवता हैं, आध्यात्मिक हैं, तो बहुत कलात्मक भी, बहुत शक्तिशाली हैं, तो बहुत भोले और दयावान भी हैं। राजेश व्यास कहीं भी शिव चर्चा या शिव प्रशंसा से वंचित नहीं रहते। जहाँ कहीं भी वे शिव को खोज निकालते हैं, तो उनकी खुशी दोहरी हो जाती है और जो उनके यात्रा वृत्तांत में झलक आती है। इस अर्थ में उनकी यात्राएँ श्रद्धा का सृजन करती हैं। आस्था का विस्तार करती हैं। इन यात्रा वृत्तांतों को पढ़ते हुए कई बार अनायास ऐसा लगता है कि राजेश व्यास कोई सामान्य सांसारिक यात्री नहीं हैं, वे साधु-यात्री हैं। वे जहाँ जाते हैं, प्रेम से रम जाते हैं, लेकिन जल्द ही उनका सांसारिक कर्त्तव्य उन्हें खींच लाता है। उनकी यात्राओं में जहाँ जाऊँ, वहीं रह जाऊँ का भाव बार-बार उभरता है। उनके यहाँ अवसर या समय निकालकर यात्रा का हठ या प्रयास भी बहुत प्रेरित करता है। वह यह अहसास भी करा देते हैं कि वे निठल्ले नहीं हैं, उनके पास कई दूसरे काम हैं, लेकिन इस बीच ही यात्राओं को भी संपन्न होना है।

सुबह से उनका प्रेम भी प्रशंसनीय है। अपने हर शानदार पड़ाव पर वे सुबह को निहारना सुनिश्चित करते हैं, जैसे दार्जिलिंग के टाइगर हिल से सुबह को निहारना और उसके पहले की पूरी बेचैनी को वह पूरे सिनेमा की तरह रच डालते हैं। वहाँ सुबह से पहले ही लिफ्ट माँगकर टाइगर हिल पहुँचती चाय-कॉफी वाली लड़कियाँ भी हैं और देर रात से ही वहाँ शानदार सुबह देखने के लिए बैठे लोग भी हैं और ऐसे में जब भोर होती है, तो राजेश व्यास मशहूर चित्रकार राजा रवि वर्मा के चित्रों की रंग संपन्नता को याद करते हुए लिखते हैं, 'अंधकार जा रहा है, प्रकाश आ रहा है।... शिव हो रहा है मन। समग्रता को पाने का भाव ही तो है शिव! अंधकार का वस्त्र हटा पहाड़ की चोटियां प्रकृति का मधुर छंद बन गई हैं।' बेशक, सुबह जब आपकी होती है, तो आगे का पूरा दिन कोई आपसे छीन नहीं सकता। वो ऐसे लगनशील सजग यात्री हैं, जो सुबह ही यात्रा पर निकल पड़ते हैं।

उनकी यात्राओं में केवल सुबह ही नहीं, सुबह की प्रतीक्षा के वृत्तांत भी अद्‌भुत हैं। बाहर अंधेरा है और राजेश व्यास आपको अपने मन की

यात्रा करा रहे हैं, जिसमें कभी उनके साथ शंकराचार्य हैं, तो कभी गुलजार। वे अमरकंटक में सुबह की प्रतीक्षा कर रहे हैं और रात का वर्णन करते गुलजार की पंक्तियों का उद्धरण दे रहे हैं, 'रोज अकेली आए, रोज अकेली जाए। चाँद कटोरा लिए भिखारन रात।'...लगता है रात ही भिखारन नहीं है। मैं भी हूँ। शिव के दर्शन, नर्मदा से भेंट की तलाश में ही तो पहुँचा हूँ यहाँ अमरकंटक। नर्मदा के उद्‌गम स्थल।... सोचते ही सोचते नर्मदा तट पर पहुँच जाता हूँ। आदि शंकराचार्य के लिखे नर्मदाष्टक की पंक्तियाँ याद कर प्रणाम करता हूँ, त्वदीय पादपंकजम् नमामि देवि नर्मदे।'

वे अपने पड़ावों का भूगोल, इतिहास, वर्तमान सबकुछ खंगालते चलते हैं, किन्तु इसमें सबसे विशेष है उस स्थान से जुड़े भारतीय शास्त्र व उसके चिंतन को खंगालना, जैसे सोने पर सुहागा। शास्त्र को खंगालते हुए अपनी यात्राओं को वे अति विशिष्ट बना देते हैं। महर्षि कपिल का स्मरण कराते कपिलधारा जलप्रपात के निकट का एक उदाहरण देखिए, 'सांख्य दर्शन में जगत की उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारणों पर गहराई से मंथन किया गया है। सोचता हूँ, प्रकृति प्रत्यक्षगम्य कहाँ है! चराचर सृष्टि को गढ़ने वाले पंचभूत तत्वों क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर में सबका अपना विशिष्ट गुण है। आकाश का गुण है शब्द। वायु का गुण शब्द और स्पर्श दोनों हैं। रूप, स्पर्श और शब्द से अग्नि और रस, रूप, स्पर्श से होता है जल का आविर्भाव। जल में चारों ही गुण होते हैं - रस, रूप, स्पर्श और शब्द। पंचभूत तत्वों से बनी है पृथ्वी।'

राजेश व्यास का पिछला चर्चित यात्रा वृत्तांत 'कश्मीर से कन्याकुमारी', जो नेशनल बुक ट्रस्ट से ही प्रकाशित हुआ था, उस पुस्तक से कई पैमानों पर बहुत समृद्ध और रोचक है वर्तमान पुस्तक 'नर्मदे हर। यहाँ यात्रा और देखने का अनुभव इतना समृद्ध रूप से सामने आता है कि लगता है ऐसी यात्राओं को सतत रहते हुए सतत परिक्रमाओं में परिवर्तित हो जाना चाहिए। वाकई राजेश व्यास की यात्राएँ वस्तुत: परिक्रमा ही हैं। शिव परिक्रमा, आस्था परिक्रमा, प्रकृति-प्रेम परिक्रमा। वे लेखन में भी जपते चलते हैं - नर्मदा के कंकर, सब शिवशंकर। इस यात्रा वृत्तांत की एक और विशेषता यह है कि इसमें पग-पग पर कथाएँ हैं। खूब चर्चित कथाओं से लेकर अल्पज्ञात कथाओं तक। स्थानों के नामकरण की कथाएँ भी खूब हैं। यात्रा मार्ग पर जो भी महत्त्वपूर्ण कथाएँ प्रस्तुत होती हैं, उन सभी को राजेश व्यास बखूबी समेटते चलते हैं। ठीक ऐसी ही है सोन और नर्मदा की रोचक कथा। कभी दोनों का विवाह तय हो गया था, किन्तु सोन तो नर्मदा की दासी महिला के साथ ही प्रेमरत हो गया। यह देख नर्मदा क्रोधित हो गई, वह पश्चिम की ओर निकल पड़ी और सोन पूरब की ओर। दोनों नदियाँ निकली एक ही जगह से, किन्तु भिन्न-भिन्न दिशा में बढ़ चलीं, फिर कभी न मिलने के लिए। यह यात्रा वृत्तांत यादगार है। जो इन जगहों की यात्राओं पर न गया हो, वह भी असंतुष्ट नहीं होता, बल्कि उसे यात्रा वृत्तांत पढ़कर संतोष होता है। ये यात्राएँ संपूर्णता का अहसास कराती हैं। निहारना सिखाती हैं। तीर्थाटन सिखाती हैं। ज्ञान देती हैं। सूचनाओं से समृद्ध बनाती हैं। सुधरने का पाठ भी पढ़ाती हैं। ऐसे उदासीन, असभ्य लोगों को भी अपने वृत्तांत में दर्ज करती है, जो तीर्थस्थलों को गंदा भी करते हैं और गंदगी का रोना भी रोते हैं। इस अर्थ में यदि हम देखें, तो ये यात्राएँ हमें अच्छा नागरिक या अच्छा मनुष्य बनाने का प्रयास करती हैं। इस पुस्तक में राजेश व्यास ने कुछ भी छिपाया नहीं है। उन्होंने यात्रा वृत्तांत लेखन की अपनी कला पर भी प्रकाश डाला है। पुस्तक के पुरोवाक् में उन्होंने लिखा है, 'बरसों पहले कहीं पढ़ा था, जो देखना जानता है, वही प्यार कर सकता है। यात्राओं के दौरान यह पढ़ा निरंतर मन में कौंधता रहता है। हम जितना देखते हैं, जानने का प्रयास करते हैं स्थानों से, लोगों से प्यार और बढ़ता चला जाता है।'

अमरकंटक, नर्मदा, खजुराहो, केन, जटाशंकर, उज्जैन, ग्वालियर, अयोध्या, त्रिपुरा, काशी, हरिद्वार, भरतपुर, दादू धाम, भानगढ़, भोरमदेव, कुशीनारा, गोरखनाथ, जैसलमेर, अमोल, दार्जिलिंग इत्यादि स्थानों की ये यात्राएँ अविस्मरणीय हैं। वृत्तांत कहीं भी बोझिल नहीं हैं। छोटे-छोटे वाक्यों के साथ सुलझी हुई शैली में सु-संपादित यात्रा वृत्तांतों में एक और विशेषता यह है कि राजेश व्यास जहाँ जाते हैं, वहीं के हो जाते हैं अर्थात वे हर स्थान की सार्थकता को शास्त्र, तर्क, तथ्य से सिद्ध करने लगते हैं। उनकी पवित्र प्रेम दृष्टि खजुराहो की मूर्तियों के महत्त्व को स्थापित करने लगती है। वे सिद्ध कर देते हैं कि खजुराहो में पूर्वज कलाकारों ने जो मूर्तियाँ उकेरी हैं, वह कोई इकहरा काम नहीं है। ये मूर्तियाँ विभिन्न कलाओं का मिलाजुला रूप हैं। मूर्तियाँ नहीं, रूपबंध। बहिर्मुखी नहीं, अंतर्मुखी। कौन-सी वस्तु या कौन-सा स्थान किसलिए किस देवता या किस मनुष्य ने बनाया, इसकी पड़ताल राजेश व्यास सफलतापूर्वक ऐसे करते हैं कि उनका यह यात्रा वृत्तांत यात्रा की सात्विक आवश्यकता को जाग्रत कर देता है। खजुराहो को देखने और समझने की सही सकारात्मक सुविधा का लेखक ने बखूबी विस्तार किया है। खजुराहो सदा एक ऐसी जगह रहेगा, जो विभिन्न विचारधाराओं और विचारकों को निष्कर्ष निकालने का अवसर देगा, लेकिन खजुराहो की पृष्ठभूमि में जो समृद्ध कला संसार या कला दृष्टि है, उसे बचाने और सही संदर्भों में समझने के लिए राजेश व्यास जैसे यात्री की बहुत जरूरत पड़ेगी। ऐसी यात्राएँ अब दुर्लभ होने लगी हैं, जो पाठकों को केवल पर्यटन-ज्ञान तक नहीं समेटतीं, बल्कि पर्यटन के पार व्यापक यात्रा उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। इन यात्राओं का अपना प्रसाद है, जो राजेश व्यास बहुत प्यार से वितरित करते हैं। इस पुस्तक में राजेश व्यास के ही कैमरे से निकले 40 नयनाभिराम फोटोचित्र भी हैं, जो इस पुस्तक की उपलब्धि हैं। ये फोटो चित्र भी लेखक की दृष्टि का एक आयाम प्रस्तुत करते हैं और यात्राओं को ज्यादा मजबूती से दर्ज करने में सहायक सिद्ध होते हैं। यह हाल के वर्षों में लिखी गई यात्रा पुस्तकों में एक श्रेष्ठतम पुस्तक है। इस पुस्तक ने राजेश व्यास को यात्राओं का एक ऐसा विशिष्ट लेखक बना दिया है कि उनकी आगामी यात्राओं की पाठक प्रतीक्षा करेंगे।

समीक्षकः **ज्ञानेश उपाध्याय**
149, रेल विहार, सेक्टर-33, नोएडा,
(उत्तरप्रदेश)- 201301

रेत से हेत

लेखक : **सूर्य प्रकाश जीनगर**, प्रकाशक : **अंतिका प्रकाशन प्रा. लि. गाजियाबाद**, मूल्य : **₹ 275**, पृष्ठ संख्या : **112**, **संस्करण : 2019**

रेत से हेत सूर्य प्रकाश जीनगर का पहला कविता संग्रह है। इस संग्रह में कुछ कच्ची तो कुछ पक्की परन्तु विविध और बहुरंगी कुल 70

कविताएँ संकलित है। कवि अपने अनुभवों की आँच में तपाकर शब्दों को रखने में कामयाब रहा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह संग्रह कवि का प्रारम्भिक प्रस्थान हैं इसलिए इन कविताओं को पढ़ते हुए यह ध्यान रखना जरूरी है। बहरहाल जो भी हो कवि अपने संग्रह की कविताओं में जीवन की विविधता और दुनियावी रंगों को लगातार समझने की हूंस प्रकट करता नजर आता है।

किसी भी कविता संग्रह से गुजरते हुए आज का काव्य परिदृश्य मस्तिष्क में आना स्वाभाविक ही है। आज की कविता परम्परागत काव्य के छंद के बंध से मुक्त है। यानी कविता भाव संप्रेषण है तो इसमें बंध क्यो? एक हद तक बात सही भी है लेकिन छंदों से इस मुक्ति के मामले में कविता लय से समझौता नहीं करती है। छंद मुक्त कविता में लय का होना उतना ही अनिवार्य है जितना छंदबद्ध कविता में है। कविता में लय को साधना इतना आसान नहीं है जितना समझ लिया जाता है। इसलिए आज की कविता में लय और भावों से समृद्ध और समर्थ कविता, बहुत कम देखने को मिलती हैं। अकसर गद्य को पंक्तियाँ तोड़कर लिखना कविता समझ लिया जाता है। लेकिन इन पंक्तियों के तोड़ने के पीछे एक गहरे बोध की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से इस संग्रह की कुछ कविताएँ आशान्वित करती हैं। जैसे सींचना कविता में कवि की कविताई कविता को कुछ यूं सींचती नजर आती है-उसने आत्मीयता की/ बूंदो से सींचा/रिश्तों के बिरवे को/ताकि खिल सके/हरेक मौसम में/महकने वाले फूल।

इस संग्रह की भूमिका में वरिष्ठ कवि विजयेन्द्र ने लिखा है कि ''मुझे सूर्य प्रकाश की वैचारिक निष्ठा, कर्मठता, अध्ययनशीलता और रचना के प्रति जुड़ाव बहुत ही प्रभावित करता है। वे एक अध्यापक है लेकिन कविता में अध्यापकीय नीरसता और उपदेशपरकता कहीं नहीं है। यह बहुत बड़ी बात है।'' इस संग्रह से गुजरते हुए इस बात की पुष्टि हो जाती है कि कवि अपने वैचारिक आईने में अपने आस-पास को संवेदनशील होकर देखता है। कवि अपनी कविताओं में पूंजीवाद और उससे पनपे तथाकथित विकास की चकाचौंध से व्यथित होता हुआ जीवन राग, अर्थ, सौदा, बोलते नहीं दो बोल, इस चीखते हुए समय में, संवेदना शून्य, किस ओर हो तुम, भू-माफिया, बाजार में और जगु के गीत जैसी कविताएँ रचता है। 'फलोदी का नमक' कविता में कह उठता है कि ''चिलचिलाती धूप/नमक की खाटियों पर गिरती/चमक दिखती चाँदी जैसी/रिण-मलार में/नमक के कुओं पर/दिन-रात/ हाड़ गलाते मजदूर/रसोई-घरों के व्यंजन/लजीज बनने की उम्मीद में/नमक पैक करते हुए/थैलियो में/पूरा शरीर सना हुया/जैसे अभी-अभी/स्नान करके आए हों/नमक से/ बेस्वाद हो रहा/मजदूरों के जीवन का नमक/बड़े ब्राण्ड के बाज़ार में/धुँधली- सी तस्वीर दिखती है/ज़माने में मशहूर/फलोदी का नमक।''

कविकर्म में यह निहायत जरूरी है कि वह अपने समय को देखे और व्यक्त करे ऐसा ही समीक्ष्य कृति के लेखक ने भी किया है। वह वर्तमान के सन्दर्भो को संवेदनशील होकर देखता हुआ चिठ्ठी, डायरी, जीवन के कुरूक्षेत्र, गिरगिट, किस ओर हो तुम जैसी कविताओं रचता हुआ आदमियत को जिलाए रखने के लिए 'सोच' कविता में रच देता है कि ''खेत से फसल/कटकर आती है/खलिहान में/ फिर/ बेचता है किसान/मंडी या बाजार मे/इसे कौन खरीदेगा/हिन्दु या मुस्लमां..?/सोचता नहीं वह/ बीज बोते समय../''

एक संवेदनशील व्यक्ति का प्रकृति से विमुख नहीं हो सकता। प्रकृति के साथ संवेदनशील मन अपने परिवेश के अनुभवों को अपनी कविता में समावेशित करता है। ऐसा करने से उस क्षेत्र का प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक परिचय पाठक को प्राप्त हो सकता है। समीक्ष्य संग्रह में सुर्ख धूप, सोन चिड़िया, हरियल सपनों के गीत, पेड़, थार की सोरम, पेड़ से बातें, रोहिड़ा खिला भाऊराम के खेत, कुरजां नगरी खींचन, खेजड़ी जैसी कविताएं ऐसा कुछ व्यक्त करती हैं। 'अंधेरे में' कविता के माध्यम से वह वर्षाधारित जीवन जीते रेगिस्तान में वर्षा नहीं होने पर उत्पन्न स्थिति को कुछ यूं व्यक्त कर जाता है-''अकाल की विकराल/छाया देखकर/बूढ़ा गड़रिया मुरझाया/कहाँ से आएगा/चारा...पानी।

समीक्ष्य संग्रह से गुजरते हुए यह महसूस की जा सकती है कि कवि वर्तमान स्थितियों को देखकर निराश होता हुआ प्यारी धरती पर, जीवन के कुरूक्षेत्र, दूसरी जिन्दगी जैसी कविताएँ रचता है। लेकिन आज के जीवन में पाया जाने वाला विरोधाभास इस संग्रह की कविताओं में भी देखा जा सकता है। एक पल जहाँ निराशा वहीं दूसरे पल आशा भी है। यह संग्रह भी इससे अछूता नहीं है। इसकी कुछ कविताओं जैसे- रिश्तों के धागे, उम्मीद का पाठ, नई राह, छुट्टी के समय और कड़वे नीम जैसी कविताओं आशा का दामन थाम लेता है। कवि केवल आशा का दामन ही नहीं थामता वरन् जीवन गीत गाता हुआ कशीदे करती हुई माँ को देखता हुआ जीवन दीप जलाता है।

कवि का आशावाद भूमंडलीकरण की आपाधापी, पूंजी की छद्म चमक, रिश्तों का व्यावसायीकरण और छीजते मानवीय मूल्यों के इस दौर में भी कम नहीं होता है। ऐसे दुलर्भ समय में वह आशा की परिपूर्ति के लिए प्रेम तलाश करता नजर आता है। 'चैत की टहनी' के बहाने 'मुस्कराने के अर्थ' ढूँढ़ता हुआ 'रेत से हेत' कर 'बीज', 'नए पत्ते', और 'गुलाब की कली' को देखता हुआ 'जीवन की कविता' में जीवन संगिनी के प्रति प्रेम की कोमल अभिव्यक्ति करते हुए कहता है कि ''तुम्हारा प्रेम/मेरी सांसे बनकर/गुनगुनाता है/प्रेम गीत रचकर.../तुम! जीवन की कविता हो...। इतना ही नहीं वह निराशा के घटाटोप से उबरने के लिए अन्तर्मन की सैर करता हुआ अपने आप से आलौकिक प्रेम को अभिव्यक्त करता हुआ 'सैर' कविता में कहता है कि-रोज-रोज होती है/बातें/ मुलाक़ाते/ख़ुद से/उभरते है कई-कई चित्र/भीतर का आशियाना/महक उठता है/लौटना/चाहता हूँ/बार-बार.../भीतर की सैर करने।

शिल्प की दृष्टि से आज की कविताओं में शब्दों का चयन, उनका स्थान निर्धारण करना बड़ा जोखिमपूर्ण होता है। छंदमुक्त कविता में आंतरिक लय को साधना और उसे अपने पाठकों तक संप्रेषित करना चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए शब्द साधना की आवश्यकता भी होती है। कभी-कभी सहज और आम बोलचाल के शब्द

बोधगम्य होने का अहसास कराते हैं। लेकिन इनका प्रयोग भी सावधानी से किए जाने की आवश्यकता होती है। इस संग्रह में कवि की सरल भाषा और अतिबौद्धिकता से परहेज ने कतिपय कविताओं को पठनीय बनाया है। संग्रह की कविताओं रेगिस्तानी जीवन के बिंब और रूपक ने कविता को अतिरिक्त सुन्दरता प्रदान की है। कविता में वैचारिकता होनी आवश्यक भले ही हो लेकिन यह ध्यान रखा जाना भी जरूरी है कि वैचारिकता की अधिकता कविता को नारा भी बना देती है। समीक्ष्य संग्रह की कुछ कविताओं के साथ ऐसा हुआ प्रतीत होता है। बावजूद इसके इस कविता संग्रह को उम्मीद से देखा जा सकता है। इस संग्रह की कविताओं में बीच जीने की जद्दोजेहद तो है ही साथ ही अपने अस्तित्व को पहचानने की कोशिश भी है। प्रमुख यह है कि कविताओं में समय का तीक्ष्ण बोध और उससे पार पाने रास्ता भी है। संग्रह की कविताओं को जूझते अर्द्धशहरी रेगिस्तानी जन-जीवन का लोकाख्यान कहना गलत नहीं होगा। इस सब के बावजूद श्री सूर्य प्रकाश जीनगर जिस वर्ग से आते हैं उस जीवन के कठोर अनुभव और सच्चाइयों को कविता में पिघलते हुए नहीं पाना चौंकाता जरूर है।

समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**
राधास्वामी सत्संग भवन के सामने
गली न.-2, अम्बेडकर कॉलोनी
पुरानी शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003
मो: 9414031050

सयानी मुनिया

लेखिकाः **सुधा रानी तैलंग**, प्रकाशकः **प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली-03**, संस्करणः **प्रथम**, वर्षः **2019**, पृष्ठ संख्या :**68**, मूल्यः **₹ 205**

जैसा कि पुस्तक के नाम से स्पष्ट है कहानियों की यह पुस्तक बच्चों के लिए है। बाल साहित्य में बच्चों की कविताओं की पुस्तकें तो बहुत आ रही हैं कहानियों की नहीं इसलिए यह पुस्तक अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। सुधा जी एक उत्कृष्ट लेखिका हैं, बाल मनोविज्ञान को समझती हैं उन्होंने बच्चों को शिक्षित करने के हिसाब से अच्छी कहानियाँ लिखी हैं। इस पुस्तक में कुल सोलह कहानियाँ है जिनमें से तीन कहानियाँ जानवरों को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। सभी कहानियाँ शिक्षाप्रद हैं, उनका एक ही उद्देश्य है बच्चों को अच्छी बातें बताना, अच्छे संस्कार बताना।

यह बात सत्य है कि बालमन ही वह भूमि होता है जहाँ संस्कारों के बीज बोए जा सकते है। संयुक्त परिवारों में अधिकतर दादा-दादी या नाना-नानी इस काम को भली भाँति करते आए हैं। रात को सोने से पहले बच्चे उनसे सट कर राजा-रानी और परियों की कहानियों के माध्यम से दुःख और सुख की परिभाषा, मेहनत का फल, कठोर, परिश्रम, संगती का असर आदि विषयों पर बहुत सारी बहुमूल्य बातें सीख जाते थे। इसी तरह कपटी साधु, बदमाश जादूगर और भूत प्रेतों की कहानियों के माध्यम से घर के बुजुर्ग बच्चों को बुरे लोगों से दूर रहना और अच्छे-बुरे की पहचान करना सिखा देते थे। जानवरों से प्यार करो, पंछियों और फूल-पत्तियों में भी जीवन होता है उनके भी दर्द होता है आदि अनेक बातें जब कहानियों से ही निकल कर आती हैं तो बच्चों को जल्दी में समझ आ जाती हैं। सुधा रानी जी ने भी इन कहानियों के माध्यम से बच्चों को बहुत सारी बातें बताने की कोशिश की है।

कहानियों की भाषा सरल है, छपाई बहुत ही बढ़िया है। सभी चित्र सुंदर हैं और संपूर्ण पुस्तक संग्रहणीय है। आपकी हर कहानी एक सीख देती है। पहली कहानी 'नई दिशा' में सीख मिलती है कि लड़का-लड़की का भेदभाव नहीं होना चाहिए। लड़कियाँ किसी भी क्षेत्र में लड़कों से कम नहीं होतीं, फिर उन्हें हर बात पर टोका क्यूं जाता है। यह बात कहानी के माध्यम से आपने बहुत बढ़िया तरीके से समझाई गई है। दूसरी कहानी 'सच्चा मित्र' मेहनत के फल को बतलाती है। इंसान का शरीर ही उसकी सबसे बड़ी दौलत होती है, रुपये-पैसे से भी बढ़कर।

हर व्यक्ति का स्वाभिमान, उसकी खुद्दारी सबसे ऊपर है। अमीरी न तो कोई तमगा दिला सकती है और एक साधनहीन प्रतिभाशाली व्यक्ति से कोई उसकी प्रतिभा छीन नहीं सकता। शीर्षक कहानी 'सयानी मुनिया' प्रेरणादायी है। इस कहानी के जरिए लेखिका ने एक बिगड़े हुए बच्चे को एक नन्हीं लड़की कैसे सुधार देती है यह बताया है। रामू काका जो कभी किसी स्कूल में नहीं गए लेकिन अनुभवों की पाठशाला में पढ़े हैं, बच्चों को अच्छी सीख देते है।

एक कहानी है 'सबक।' बाल मन लालच में जल्दी आ जाता है, यह लालच उसे चोरी करना सिखा देता है, एक कहानी में बच्चों के मन में पैदा होने वाले लालच और लालच के कारण बुरी आदतों को सीख जाना तथा उन्हें कैसे छोड़ना बताया गया है। सभी कहानियाँ बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। इनकी विशेषता यह भी है कि बच्चों को सिर्फ सीख ही नहीं दी गई है बल्कि प्रकृति और पर्यावरण का कैसे ध्यान रखा जाए, यह भी बताया गया है। बातों-बातों में पेड़ों के नाम, फलों के नाम, साग-सब्जी के नाम भी बच्चों को बताए गए हैं। पढ़ाई करने के बारे यदि सचेत किया गया है तो संगीत का जिन्दगी में कितना महत्त्व है यह भी बताया गया है। बच्चों को बाँसुरी बजाना सीखना या ढपली बजाना, भजन और गीत गाना इसका कितना असर मन पर पड़ता है यह भी समझाया गया है। आदमी का तन बीमार हो तो दवाई ली जा सकती है लेकिन मन बीमार हो तो संगीत कितना मददगार साबित होता है, यह कहानी के द्वारा बताया गया है।

कहानियाँ बच्चों को एक-दूसरे की मदद करना भी सिखाती हैं। जो बच्चे पढ़ाई में कमजोर हैं उनकी सहायता करना, जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं उनकी सहायता कैसे करना सब बताया है। आपकी कहानियों के बच्चे मन के सच्चे हैं कोई भी बच्चा चीटिंग नहीं करता, चालबाजियाँ नहीं दिखाता, मारता नहीं, न ही पीटता है! उसकी हरकतें बाल सुलभ हैं। यह इन कहानियों की एक बड़ी विशेषता है। किडनैपिंग वाली कहानी में बताया है कि कैसे एक बच्चा एक दूसरे बच्चे की मदद करने के लिए खुद किडनैपिंग का नाटक कर बैठता है, जल्दी ही उसकी पोल भी खुल जाती है। यह बाल मन है जो खुराफातियाँ नहीं जानता सिर्फ दोस्ती जानता है। अन्तिम तीन कहानियाँ पक्षियों और जानवरों की है जिनके माध्यम से भी सीख दी गई है और कुछ-कुछ पंचतंत्र की कहानियों की याद दिलाती है।

समीक्षकः **अनीता सक्सेना**
बी-143, न्यू मीनाल रेजीडेन्सी, भोपाल-23
मो: 9424402456

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

बेटियाँ

इस जीवन का अमृत है बेटियाँ
इस युग की शान है बेटियाँ
विकास व तरक्की का
दूसरा नाम है बेटियाँ
कम न समझो तुम उन्हें किसी से
ऐसी ताकत है उनमें जो युग बदल दें।
हीरा अगर बेटा हो तो
सच्चा मोती है बेटियाँ
बेटा एक कुल को रोशन करेगा तो
दो-दो कुल की लाज है बेटियाँ
कमजोर ना समझो तुम उन्हें किसी से
पढ़-लिखकर बेटों से ऊँचा
नाम कमा ले वो।
फूलों सी कोमल होती हैं बेटियाँ
काँटों सा व्यवहार मिले फिर भी
फूलों सा व्यवहार करती हैं बेटियाँ
स्वयं काँटों की राह पर चलकर औरों
की राह में फूल बिखेरती हैं बेटियाँ।

अर्पिता चौधरी
कक्षा-10th, D/o श्री गोविन्दराम मूण्ड
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नगवाड़ा,
नागौर-341519, **मो: 9462660630**

मेरा गाँव जग से प्यारा

मेरा गाँव जग से प्यारा
देश-दुनिया से ये न्यारा।
मेरा गाँव जग से प्यारा।।
खेत-खलिहानों की पावन धरा,
यहाँ के मीठे काकड़-बेर-मतीरा।
मेरा गाँव जग से प्यारा।।
उगते सूरज सा चमके जैसे
सोना हो खरा,
चाँदनी में लागे जैसे अमृत हो झरा।
मेरा गाँव जग से प्यारा।।
ऊँचा नीचा रेत का धोरा,
सुंदर-सुंदर गोरा-गोरा।
मेरा गाँव जग से प्यारा।।
सुनाते कहानियाँ दादी-दादा
मिलता यहाँ सब सपने से ज्यादा।
मेरा गाँव जग से प्यारा।।
जीवन यहाँ सबका सीधा-साधा,
नहीं झगड़ता कोई
निभाते सब वादा।
मेरा गाँव जग से प्यारा।।

पुनीत, कक्षा-3, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, भारू (झुंझुनूं)

देश गीत

सीमा पर उत्पात मचा है
आहत मानव चिल्लाता है
वर्षों से चल रही गोलियाँ
व्याकुल मन घबराता है
उठो जवानों भारत के
तुमको सरहद बुलाता है
अन्यायी का दमन चल रहा
अपने स्वार्थ में फँस कर
समर अघोषित चल रहा है
निर्दोषों को लील रहा है
घर शीशे का हो जिस का
वह पत्थर चलवाता है।
उठो जवानों......
चलो नया इतिहास रचें हम
मिलकर रहना साथ सीख लें हम
भारत दुनिया में नहीं किसी से कम
राणा प्रताप शौर्यशाली शिवा का देश
भगतसिंह, चन्द्रशेखर, राजगुरु का देश
देश की आजादी हेतु
महिलाओं का बलिदान
झांसीवाली रानी, सुभद्राकुमारी चौहान
अगणित बच्चे बूढ़े कूद पड़े संग्राम में
देख भारत की राष्ट्रभक्ति और
स्वाभिमान गूँज उठा भारत का कण-कण
भारत देश महान

राहुल नामा पराड़िया
कक्षा-12, रा.उ.मा.वि. भीनमाल,
जालोर-343029

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकता है। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-वरिष्ठ संपादक

जी करता है चिड़िया बन जाऊँ

जी करता है चिड़िया बन जाऊँ।
फुदक-फुदक कर सबका मन बहलाऊँ।
जी करता है चिड़िया बन जाऊँ।।
सुबह-सवेरे जल्दी उठ जाऊँ।
चीं-चीं करके, सबको जगाऊँ।
जी करता है चिड़िया बन जाऊँ।।
घूम-घूम कर खाना लाऊँ।
बच्चों को खिलाकर खुद खाऊँ।
जी करता है चिड़िया बन जाऊँ।।
सूरज ढले घोसलें में बैठ जाऊँ।
रात ढले समय से सो जाऊँ।
जी करता है चिड़िया बन जाऊँ।।
सीमाओं के पार जाऊँ।
मनों के बैर-भाव मिटाऊँ।
जी करता है चिड़िया बन जाऊँ।।
एक तमन्ना बस यही रखूं।
सब ओर खुशहाली फैलाऊँ।
जी करता है चिड़िया बन जाऊँ।।

अर्पित चौधरी
कक्षा-3, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, भारु, (झुंझुनूं)

1857 की क्रांति की मुख्य छावनियों के नाम

ए ब्या न खैर नी देव

सूत्र	छावनियों के नाम
ए	एरिनपुरा (पाली)
ब्या	ब्यावर (अजमेर)
न	नसीराबाद (अजमेर)
खैर	खैरवाड़ा (उदयपुर)
नी	नीमच (मध्यप्रदेश)
देव	देवली (टोंक)

सुभाष गर्ग
कक्षा-9, राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
डेडवा, (जालोर)

गुरु की महिमा

गुरु की महिमा वर्णी नहीं जा सकती।
यह वो किताब है जो किसी से पढ़ी नहीं जा सकती।।

गुरु वो सम्मान है जो हर किसी को नहीं मिलता।
इस कलयुग में हर किसी को सच्चा गुरु नहीं मिलता।।

गुरु की महिमा वर्णी नहीं जा सकती।
यह वो किताब है जो हर किसी से पढ़ी नहीं जा सकती।।

गुरु की महिमा का बखान जितना करूँ उतना ही कम समझो।
यह वो सम्मान है जो भगवान से बढ़कर समझो।।

गुरु की महिमा वर्णी नहीं जा सकती।
यह वो किताब है जो हर किसी से पढ़ी नहीं जा सकती।।

गुरु वो फरिश्ता है जो हारे हुए को जिता देता है।
लहरों में भी नौका पार लगा देता है।।

गुरु की महिमा वर्णी नहीं जा सकती।
यह वो किताब है जो हर किसी से पढ़ी नहीं जा सकती।।

जिसके पास गुरु नहीं वो धनवान नहीं।
गुरु के बिना ज्ञान नहीं, गुरु के बिना कोई महात नहीं।।

गुरु की महिमा वर्णी नहीं जा सकती।
यह वो किताब है जो हर किसी से पढ़ी नहीं जा सकती।।

गुरु वो है जो जीना सिखा दे।
गुरु वो है जो आगे बढ़ना सीखा दे।।

गुरु की महिमा वर्णी नहीं जा सकती।
यह वो किताब है जो किसी से पढ़ी नहीं जा सकती।।

गुरु के बिना घोर अंधेरा जग में।
गुरु ही है प्रकाशमय रत्न जग है।।

गुरु की महिमा वर्णी नहीं जा सकती।
यह वो किताब है जो किसी से पढ़ी नहीं जा सकती।।

मोनिका खोखर D/o ब्रज लाल खोखर
कक्षा-10 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नगवाड़ा, (नागौर)
मो: 8740091212

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

वार्षिकोत्सव में पर्यावरण संरक्षण व देशभक्ति पर प्रस्तुतियाँ

भीलवाड़ा–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जोरावरपुरा में वार्षिकोत्सव, पुरस्कार वितरण एवं पूर्व छात्र तथा भामाशाह सम्मेलन का समारोहपूर्वक आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य श्री रमेश अगनानी ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री राधेश्याम शर्मा, अध्यक्ष एडीपीसी. समसा श्री प्रहलाद चंद्र पारीक, विशिष्ट अतिथि एपीसी. श्री योगेश पारीक एवं सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर श्री लोकेश हाड़ा थे। समारोह में छात्र–छात्राओं ने ईश वंदना, स्वागत गीत, देशभक्ति तथा भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण से ओतप्रोत विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समारोह में दानदाता श्री राधेश्याम शर्मा ने 26,500/–रुपए राशि का वाटर कूलर, चूरया–मूरया सेवा संस्थान ने 5,100/–रुपए तथा ग्रामवासियों ने मिलकर 4,500/–रुपए विद्यालय विकास हेतु भेंट किए। अतिथियों तथा छात्रों ने विद्यालय परिसर में पर्यावरण सुरक्षा के उद्देश्य से फलदार पौधे भी लगाए। अतिथियों ने विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल करने वाले 28 छात्र छात्राओं तथा दानदाताओं को भी पुरस्कार व प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया। विज्ञान शिक्षक श्री राकेश पोरवाल ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया व कार्यक्रम का संचालन किया। शाला प्रभारी श्री सुनील कुमार खटीक ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में एसडीएमसी. अध्यक्ष श्री भंवर लाल जाट, एसएमसी. अध्यक्ष श्री सोहनलाल जाट सहित ग्रामीण, पूर्व छात्र–छात्राएँ एवं दानदाता उपस्थित थे। कक्षा 12 वीं बोर्ड के विद्यार्थियों को तिलक एवं श्री फल देकर आशीर्वाद दिया गया।

स्काउट्स को निःशुल्क गणवेश वितरित

सिरोही–राजकीय माध्यमिक विद्यालय दादावाड़ी शिवगंज में सेवानिवृत्त अध्यापिका श्रीमती निशा मंगल ने स्काउट्स को निःशुल्क गणवेश वितरित किए तथा कक्षा 10 वीं के विदाई समारोह हर्षोल्लास से मनाया गया जिसमें श्रीमती मंगल द्वारा मिष्ठान्न वितरण भी किया। श्री अशोक कुमार परिहार श्री गोपाल देवड़ा द्वारा प्रतिभावान विद्यार्थियों व सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किए। इस अवसर पर स्काउट–विद्यालय परिवार द्वारा मंगल दम्पति श्रीमती का सम्मान किया गया। भामाशाह श्री अशोक कुमार परिहार द्वारा 10 वीं में 85 प्रतिशत अंक आने वाले विद्यार्थियों को 1,001 रुपए व इससे अधिक अंक लाने पर 1,501 रुपए की नकद राशि प्रदान करने तथा अध्यापिका मंजू मीणा द्वारा 10 में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्तकर्त्ता विद्यार्थियों को सिल्वर मैडल देने का प्रस्ताव रखा। स्काउट यूनिट लीडर श्री रमेशचन्द्र आगलेचा के निर्देशन में स्काउट्स ने शाला में सेवाकार्य किए। संस्थाप्रधान श्री नरेश कुमार चौहान ने भामाशाहों का आभार व्यक्त किया।

वार्षिकोत्सव पर भामाशाह सम्मान व पूर्व विद्यार्थी समारोह सम्पन्न

जोधपुर–राजकीय माध्यमिक विद्यालय धर्मादिया बेरा, देवनगर, बालेसर जिला जोधपुर में भामाशाहों का सम्मान समारोह, विद्यालय उत्सव, पूर्व छात्र मिलन समारोह का आयोजित किया गया इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आईदान राम पंवार, तहसीलदार बालेसर, विशिष्ट अतिथि मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी बालेसर श्री गायड़ सिंह गोगादेव, अतिथि एसीबीओ. श्री अगरसिंह गोगादेव, पंचायत समिति बालेसर के पूर्व प्रधान श्री भंवर सिंह इंदा, देवनगर ग्राम पंचायत के सरपंच श्री भंवरलाल प्रजापत उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विद्यालय के प्रधानाध्यापक चंद्रपाल सिंह राठौड़ ने बताया की पिछले वर्ष उच्च प्राथमिक से माध्यमिक में क्रमोन्नत विद्यालय में संसाधनों की कमी को देखते हुए विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक व प्रेरक के रूप में कार्य करते हुए केशवकुमार कवाड़िया ने जुलाई 2019 से अब तक कई ग्रामीणों को प्रोत्साहित कर 25 से अधिक भामाशाहों को तैयार किया जिसकी ग्रामीणों ने अध्यापक कवाड़िया के प्रोत्साहन की प्रशंसा की। जिससे विद्यालय के लिए 21 टेबल–स्टूल सेट श्री भंवराराम प्रजापत सरपंच की तरफ से, 11 टेबल–स्टूल सेट श्री अचलाराम वार्ड पंच की तरफ से, 5 टेबले– स्टूल श्री घनश्याम सेन से, 5 टेबल–स्टूल श्री प्रताप सिंह इंदा की तरफ से, 2 गोदरेज अलमारी 7 फीट की श्री फुसाराम माली उपसरपंच की तरफ से, एक प्रधानाचार्य कुर्सी श्री पेमाराम प्रजापत की तरफ से, एक फोटोकॉपी प्रिंटर मय स्केनर श्री मूलाराम बोरावट की तरफ से, 2 दरी श्री भंवर लाल सेन की तरफ से एक विद्यालय के मेन गेट बोर्ड श्री ओमाराम कुमावत की तरफ से, विद्यालय में लाइट फिटिंग व नेट, बालीबाल श्री मंगलाराम पाबूराम कुमावत की तरफ से, वॉलीबॉल व हैंड बाल पोल श्री करणसिंह ईन्दा की तरफ से, प्याऊ निर्माण व ठंडा पानी मशीन श्री अपाराम बोरावट की तरफ से, 10 प्लास्टिक पानी कैंपर श्री भगाराम सांखला की तरफ से, 5 कुर्सियाँ व 1 पंखा श्री राजूराम सेन की तरफ से, पानी की मोटर श्री गोपाल सिंह इंदा की तरफ से, 10 कुर्सियाँ श्री जस्सा राम प्रजापत की तरफ से, 1 पंखा

श्री जबराराम, एक पंखा श्री राजूराम, एक पंखा केसाराम प्रजापत की तरफ से व 2 विद्यालय बोर्ड सहित कई भामाशाहों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक गुलाब दान चारण, इमरान खान, मनीष सोलंकी, शा.शिक्षक दयाराम चौधरी, अध्यापक कुंदन सिंह, स्वरूप सिंह गोदारा, उमेद सिंह, संतोष राठौड़, उषा सांगा, मीना जोशी सहित अध्यापक व बड़ी संख्या में ग्रामीणों की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वार्षिकोत्सव पर भामाशाह व पूर्व विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन

सिरोही–संघवी हंसराज कानाजी मालगांव वाला राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जीरावल, ब्लॉक-रेवदर जिला सिरोही का वार्षिकोत्सव, पुरस्कार वितरण, भामाशाह सम्मान व पूर्व विद्यार्थी स्नेह मिलन का आयोजन दिनांक 28.2.2020 को किया गया। कार्यक्रम में समग्र शिक्षा के अधिकारी श्री कांतिलाल खत्री, दुर्गेश गर्ग, अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री पूनम सिंह सोलंकी, भामाशाह सर्वश्री सुरेश रावल, प्रकाश राज रावल, दिनेश रावल, सरपंच श्री कान्तिलाल कोली, उपसरपंच श्री मगसिंह व भामाशाह श्री मांगीलाल जोशी का आतिथ्य रहा। इस अवसर पर श्री रमेश सुथार व रिजवाना बानु के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ छात्र-छात्राओं ने दी। शा. शि. श्री भादरनाथ के निर्देशन में शारीरिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। भामाशाह श्री सुरेश कुमार रावल पुत्रश्री लादुराम रावल ने सरस्वती माता मंदिर के लिए 71,000 रुपये तथा पीईईओ. क्षेत्र में बैग वितरण हेतु 2 लाख रुपए दिए. स्व. श्रीमती रम्बादेवी पत्नी श्री आदित्यराम जोशी की स्मृति में उनके पुत्र सर्वश्री माँगीलाल, प्रकाश कुमार व मुकेश कुमार जोशी ने विद्यालय में फर्नीचर निर्माण (90 सैट स्टूल व टेबल) हेतु एक लाख रुपये तथा भामाशाह श्री दिनेश कुमार पुत्र श्री उकाजी रावल ने छात्रों के टाई-बैल्ट हेतु 25,000 रुपये का सहयोग किया। गत वर्ष सर्वाधिक अंक, सर्वाधिक उपस्थिति, स्काउटिंग, खेलकूद व गार्गी पुरस्कार व अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं का सम्मान किया एवं पीईईओ.

जीरावल के विद्यालयों में गुणवत्ता युक्त परिणाम व विद्यालय हेतु समर्पण भाव वाले शिक्षकों का भी बहुमान किया गया। विद्यालय को निरंतर सहयोग प्रदान करने वाले भामाशाहों का भी माला, साफा, शॉल, श्रीफल आदि प्रदान कर सम्मानित किया गया। मंच संचालन श्री मीठालाल ने शकील अली के सहयोग से किया। विज्ञान मॉडल व स्काउट प्रदर्शनी अवलोकनार्थ आकर्षण का केन्द्र रही। कार्यक्रम के आरम्भ से पूर्व विद्यालय में सरस्वती माता मंदिर की स्थापना व मुख्य दरवाजे का भूमि पूजन किया गया जिसके लाभार्थी श्री सुरेश कुमार पुत्र श्री लादुराम रावल रहे। संस्थाप्रधान ने भामाशाहों का सम्मान करते हुए आभार व्यक्त किया।

अध्यापिका सुश्री माया सिहाग द्वारा विद्यालय को एक प्रिंटर भेंट

बीकानेर–राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय प्रहलाद की ढाणी रोड़ा में कार्यरत अध्यापिका सुश्री माया सिहाग ने स्वप्रेरणा से विद्यालय को एक प्रिंटर भेंट किया। प्रधानाध्यापक श्री नदीम अहमद ने सुश्री माया सिहाग का आभार व सम्मान करते हुए कहा कि प्रिंटर होने से विद्यालय का कार्यालय कार्य बहुत आसान हो जाएगा और समय की बचत होगी तथा ये प्रेरणादायी कार्य है। भामाशाह सुश्री माया सिहाग ने कहा कि हमारा कर्मस्थली के प्रति भी कुछ उत्तरदायित्व होते हैं, मैंने वहीं पूरा करने का प्रयास मात्र किया है। अध्यापक श्री प्रहलाद राम सीगड़, श्री करणी सिंह राठौर एवं हेमलता गोदारा ने भी विचार व्यक्त किए।

रघुनाथपुरा विद्यालय में वार्षिकोत्सव सम्पन्न

श्रीगंगानगर–राजकीय उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालय, रघुनाथपुरा, सूरतगढ़ के संस्थाप्रधान श्री रामकुमार सहू व विद्यालय स्टाफ द्वारा राज्य सरकार की मंशानुसार गाँव के सभी समाजों के प्रबुद्ध जनों को बेहतर मंच प्रदान किया जिसके परिणामस्वरूप सभी समाज बन्धु एक मंच पर एकत्र होकर विद्यालय विकास में 11 कमरें मय बरामदा (अनुमानित लागत 80 लाख) बनाने का निश्चिय किया तथा विद्यालय वार्षिकोत्सव के शानदार समारोह में विद्यालय के प्रथम बैच 1956 के विद्यार्थियों का भी विद्यालय की ओर से सम्मानित किया गया।

कोटकासिम विद्यालय में वार्षिकोत्सव सम्पन्न

अलवर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटकासिम में सेवानिवृत्त शिक्षक श्री धर्मसिंह फलसवाल ने एक कक्षा-कक्ष (20 गुणा 25 फीट) व बरामदा (25 गुणा 10 फीट) का निर्माण दस लाख पाँच हजार रुपए की लागत से अपने पुत्र श्री राजेश कुमार की स्मृति में करवाया कर विद्यालय को भेंट किया। जिसके उद्घाटन (22 फरवरी 2020) अवसर पर मुख्य अतिथि श्री दीपचन्द खैरिया, विधायक किशनगढ़ बास (अलवर) के द्वारा

किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि एसीबीइओ. कोटकासिम श्री सतीश शेखावत, श्री नवीन चौधरी आरपीएससी.प्रा.लि.टपूकड़ा, श्री निहाल चौधरी कजारिया सिरेमिक गैलपुर तिजारा रहे। इस अवसर पर भामाशाहों को प्रेरित करने वाले प्रेरक पूर्व व्याख्याता श्री हेमेन्द्र सिंह व श्री कृष्ण कुमार भाटिया को भी विद्यालय द्वारा भामाशाह के साथ ही सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य श्री सुरेशचन्द्र शर्मा ने भामाशाह श्री धर्मसिंह फलसवाल व उपस्थित अतिथियों का सम्मान करते हुए आभार व्यक्त किया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया।

सिरोही–राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड के तत्वावधान में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सिरोही में आठ मार्च 2020 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। प्रधानाचार्य श्रीमती हीरा खत्री ने दीप प्रज्वलित करके सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पहार पहनाया। गाइडर श्रीमती इन्दा खत्री के अनुसार मुख्य वार्ताकार राव गोपालसिंह पोसालिया ने महिला शक्ति को सृष्टि की जननी और आधार बताया। वैदिक काल, सतयुग से कलयुग तक महिलाओं की परिवर्तनशील स्थिति को बताया। राव ने अपने उद्बोधन में भारतीय संस्कृति को विश्व की श्रेष्ठ संस्कृति बताया। हिन्दुस्तान मे नारी को सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी व सर्व शक्तिशाली महाकाली के रूप में सदैव पूजा हैं। महिलाओं से चेतना, सक्रियता के साथ सजगता को बरतने की अपील की। प्रथम सहायक शीतल मारु, श्रीमती अनिता चव्हाण, गाइडर श्रीमती इन्द्रा खत्री, ललिता देवन्दा ने महिलाओं के अधिकार, शक्ति व महिला सशक्तिकरण पर विचार व्यक्त किए। श्रीमती खत्री के निर्देशन में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई। महिला शक्ति की महिमा की काव्य प्रतियोगिता में ममता कंवर अव्वल, वैदिका शर्मा द्वितीय व भारती कंसारा तृतीय रही। निबंध प्रतियोगिता में ममता कंवर प्रथम, पदमा माली द्वितीय व स्नेहा राव तृतीय रही। कार्यक्रम में श्रीमती शर्मिला डाबी, वर्षा त्रिवेदी, देवीलाल कस्वां, विपिन गहलोत, विजय लक्ष्मी, विपिन गहलोत, कल्पना चौहान व समस्त विद्यालय परिवार ने सहयोग किया। प्रधानाचार्य श्रीमती हीराखत्री व प्रभारी इन्द्रा खत्री ने सबका आभार जताया। मंच संचालन खत्री व गोपालसिंह राव ने किया।

महाराणा कुम्भा स्कूल में 'गुंजन-2020' का आयोजन

कुम्भगढ़–केलवाड़ा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर स्थित महाराणा कुम्भा राउमावि में 28.2.2020 को विदाई समारोह एवं वार्षिकोत्सव 'गुंजन-2020' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व सरपंच श्री राधेश्याम असावा, प्रधानाचार्य विनोद कुमारी, विकास अधिकारी श्री नवलाराम चौधरी थे। कार्यक्रम की शुरूआत संस्था प्रधान श्री मोहनलाल बलाई के अध्यक्षीय उद्बोधन से हुई। इस अवसर पर विद्यालय एवं अन्य छात्र-छात्राओं ने रंगारंग प्रस्तुतियाँ देकर समबांध दिया। सांस्कृतिक प्रभारी श्री सत्यनारायण नागौरी ने बताया कि समारोह में पूर्व विद्यार्थी तथा भामाशाहों का सम्मान किया गया। विद्यालय विकास के तहत श्री प्रेमसुख शर्मा के प्रयास से ग्राम पंचायत द्वारा बाथरूम शौचालय के लिए ढाई लाख के बजट के जारी होने की घोषणा की गई। मेवाड़ युवा मण्डल के भामाशाह श्री मंयक जोशी, श्री किशन पालीवाल सहित श्री मनोज देवपुरा ने विद्यालय के रंग-रोगन के लिए आर्थिक सहयोग दिया। कार्यक्रम में विद्यालय की प्रतिभाओं व गुरुजनों एवं कार्मिकों को सम्मानित भी किया गया। वार्षिकोत्सव में व्यवस्था के तहत सर्वश्री सुरेश धोबी, गोपाल आमेटा, गोविन्द सिंह, कस्तू टांक सहित स्टाफ का सराहनीय योगदान रहा। संचालन श्री ललित आमेटा ने किया।

बड़िंगा विद्यालय में वार्षिकोत्सव मनाया गया

श्रीगंगानगर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़िंगा, श्री करणपुर में 13 फरवरी 2020 को शाला का वार्षिकोत्सव मनाया गया। जिसमें 95 पूर्व विद्यार्थियों को 'शाला रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान ही 40 भामाशाहों को भी सम्मानित किया गया जिन्होंने कार्यक्रम में विद्यालय को 1 लाख 97 हजार रुपये के विभिन्न भौतिक संसाधन, सम्मान प्रतीक, समारोह खर्च प्राप्त हुए जिसमें 1 लाख 31 हजार रुपए का फर्नीचर (101 टेबल व 101 स्टूल) भी प्राप्त हुए। प्रधानाचार्य श्री पलविन्द्र सिंह ने सभी पूर्व विद्यार्थियों एवं भामाशाहों को आभार व्यक्त करते हुए कहा कि विद्यालय विकास हेतु नियमित रंग-रोगन के अलावा बैडमिंटन हॉल, भव्य मुख्य द्वार, पार्क, स्मार्ट क्लासेज व सीसीटीवी. कैमरे इत्यादि हेतु शाला परिवार भामाशाहों एवं विभिन्न स्रोतों से पूर्ण करने हेतु प्रयासरत हैं।

भामाशाहों ने 197 बालिकाओं को ट्रेकसूट किए भेंट

धौलपुर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय विसनोदा, धौलपुर के संस्थाप्रधान श्री राजेन्द्र सिंह बघेल की प्रेरणा से वर्तमान सरपंच विसनौदा, समस्त विद्यालय स्टाफ एवं अन्य भामाशाहों द्वारा आत्म रक्षा वाहिनी की 197 छात्राओं को ट्रेक सूट उपलब्ध कराए गए। जिससे बालिकाओं में जोरदार उत्साह दिखा जो आत्मरक्षा के गुरों में शानदार प्रदर्शन के रूप में प्रदर्शित हुआ। संस्थाप्रधान ने भामाशाहों का आभार व्यक्त किया।

लाडपुरा में मनाया गया वार्षिकोत्सव

बूंदी–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लाडपुरा, बूंदी में विद्यालय का वार्षिकोत्सव 20 फरवरी 2020 को मनाया गया। प्रधानाचार्य श्रीमती सीमा मीणा ने बताया कि वार्षिकोत्सव में सभी भामाशाहों को सम्मानित किया। 420 विद्यार्थियों वाले इस विद्यालय में समस्याओं के निस्तारण हेतु मई 2019 में शाला स्टॉफ, ग्रामवासी भामाशाहों से सहयोग लेने का प्रयास

किया जाता रहा। जिसके परिणामस्वरूप विद्यालय स्टाफ द्वारा 2,62,111 रुपए विद्यालय को प्राप्त हुए तथा 3,38,000 रुपए ग्रामवासियों से प्राप्त हुए। इस प्रकार 6 लाख रुपए भामाशाहों व स्टाफ द्वारा एकत्र कर मुख्यमंत्री जनसहभागिता के तहत जमा करवाकर विद्यालय के लिए खेल-मैदान में दो कमरें बनाने का प्रस्ताव लिया गया। वार्षिकोत्सव में विद्यार्थियों ने शानदार प्रस्तुतियाँ दी ।

सरगांव में वार्षिकोत्सव पर भामाशाहों का किया सम्मान

अजमेर–राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सरगांव, जावाजा, अजमेर में 26 फरवरी 2020 को वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर भामाशाहों द्वारा छात्रों हेतु 65 बेंचें भेंट की गई। जिसमें 30 लॉयन्स क्लब, ब्यावर यूनिट, 11 श्री दिगम्बर जैन युवा मण्डल ब्यावर, 5-5 नग श्री कमल भारती, श्री श्रवण सिंह रावत, श्री हंसराज जैन, श्री भागूराम सालवी तथा 2 श्री जीतराम चौधरी (शालाध्यापक) तथा 1-1 बैंच श्रीमती परवीनखान व श्री गिरवर सिंह द्वारा प्रदान की गई। कार्यक्रम में सरपंच प्रतिनिधी एवं भामाशाह सर्वश्री गोरधनसिंह रावत, मनोहरलाल आबासरा, कार्यवाहक पीईओ श्री रविन्द्र शुक्ला, संस्थाप्रधान श्री नन्दकिशोर कुमावत, एसएमसी. अध्यक्ष श्री प्रहलाद गुर्जर, उपाध्यक्ष श्री नरसिंह चौहान, श्री भैरूलाल सोलंकी व सदस्यों सहित भामाशाह सर्व श्री शैलेन्द्र पीपाड़ा, राजेश हेड़ा, राकेश मूथा, भंवरसिंह राजपुरोहित, सुरेश चन्द्र वैष्णव, राकेश अग्रवाल एवं अभिभावकगण उपस्थित रहे। संचालन श्री प्रशांत भारिल्ल ने किया।

अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, अजमेर में पूर्व विद्यार्थियों के साथ 'फ्यूजन-2020' का आयोजन

अजमेर–महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) वैशाली नगर, अजमेर में भव्य वार्षिकोत्सव एवं पूर्व छात्र सम्मेलन 'फ्यूजन-2020' का आयोजन 29 फरवरी, 2020 को किया गया। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के राजीव गाँधी सभागार में आयोजित इस समारोह की शुरूआत पीसीसी सचिव श्री महेन्द्र सिंह रलावता के मुख्य आतिथ्य एवं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अजमेर श्रीमती पद्मा सक्सेना एवं जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक अजमेर श्री देवीसिंह कच्छावा की अध्यक्षता में सरस्वती वंदना के साथ हुई। अतिथियों के स्वागत के बाद विद्यार्थियों ने गणेश वंदना, बंगाली नृत्य, लोक धुनों पर मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा ट्यूशन की प्रासंगिकता पर प्रस्तुत अंग्रेजी नाटक 'द रिफण्ड' एवं वर्तमान में मोबाइल के बढ़ते प्रभाव से हो रहे दुष्परिणाम पर आधारित 'मिमे' रहा। कार्यक्रम में पधारे पूर्व छात्रों को अतिथियों द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव ने शाला प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए विद्यालय की उपलब्धियों के बारे में बताया तथा सभी अतिथियों व शाला परिवार का आभार व्यक्त किया।

भामाशाह ने मृत्युभोज न कर विद्यालय को फर्नीचर किया भेंट

राजसमन्द–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ओलादर, पं.सं. कुम्भलगढ़ के स्थानीय विद्यालय में ग्राम ओलादर के निवासी भारतीय वायु सेना के गरुड कमांडो श्री पहाड़सिंह द्वारा अपने पिता की मृत्यु पर सामाजिक कुरीति मृत्यभोज न करते हुए कक्षा 10 से 12 के लिए 75 सेट टेबल स्टूल जिसकी अनुमानित लागत 1.50 लाख रूपए के बनवाकर विद्यालय को भेंट किए जिससे पूर्व विद्यार्थियों को दरी पर बैठकर ही पढ़ना पड़ता था। विद्यालय में आयोजित समारोह में भामाशाह श्री पहाड़सिंह का शाला परिवार द्वारा सम्मान किया गया। प्रेरक व संस्थाप्रधान श्री मदनलाल, श्री दिनेश चन्द्र अध्यापक, वार्ड पंच श्री तेजपाल टॉक और विद्यालय स्टॉफ ने भामाशाह का अभिनन्दन किया। संस्थाप्रधान ने इसी प्रकार आगे भी भामाशाहों के सहयोग से शाला मे भौतिक संसाधन जुटाकर सुविधायुक्त बनाने के लिए सभी को आह्वान किया।

शिवनगर में भामाशाहों का किया गया सम्मान

बीकानेर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिव नगर में वार्षिकोत्सव व प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्री चन्दन सिंह एसएमसी. अध्यक्ष एवं प्रधानाचार्य श्री रूपेंद्र सिंह शेखावत रहे। सरस्वती वंदना के बाद विद्यार्थियों ने रंगारंग प्रस्तुतियाँ दी। अध्यापक श्री मोहर सिंह सलावद ने बताया कक्षा 2 से 12 तक 3-3 विद्यार्थियों, विद्यालय के 15 पूर्व विद्यार्थियों को जो राजकीय सेवा में है, खेलकूद में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 15 विद्यार्थियों सहित 61 प्रतिभाओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में समस्त शाला परिवार एवं एसएमसी. सदस्य एवं अभिभावकों ने भाग लिया। संचालन श्री सलावद ने किया।

वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र पर्यावरण प्रहरी सम्मान से सम्मानित

बाड़मेर–मेरामचन्द हूडिया राबाउमावि मोकलसर में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक गणित श्री कुमार जितेन्द्र 'जीत' पर्यावरण प्रहरी सम्मान से सम्मानित हुए। जोगेश्वरी मुम्बई द्वारा आनलाइन आयोजित साहित्यिक प्रतियोगिता में वृक्ष लगाओ आन्दोलन के तहत जिसमें देशभर के साहित्कारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण जागरूता को लेकर भाग लिया। इसी संदर्भ में साहित्यिक रचना के माध्यम से वृक्षारोपण के प्रति ध्यान आकर्षित करने व अपने जीवन काल में वृक्षारोपण करने हेतु संकल्प के लिए 'पर्यावरण प्रहरी सम्मान' से सम्मानित किया गया। शााला परिवार ने इस पर अपनी खुशी प्रकट की।

ऊपनी विद्यालय में हुआ वार्षिकोत्सव का आयोजन

बीकानेर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ऊपनी, श्री डूंगरगढ़, बीकानेर में वार्षिकोत्सव एवं भामाशाह सम्मान समारोह तथा पूर्व छात्र परिषद (एल्यूमिनी मीट) का अयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री मंगलाराम गौदारा पूर्व विधायक श्री डूंगरगढ़, विशिष्ट अतिथि श्री कैसराराम उप प्रधान श्री डूंगरगढ़, श्री रामेश्वरलाल जी सरपंच प्रतिनिधी ऊपनी, लाली देवी पत्नी श्री ताजूराम राम सरपंच कल्याणसर पुराना, पुरखाराम गोदारा भूतपूर्व सरपंच ऊपनी व डॉ. जगदीश पचार थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री धर्मपाल सिंह मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री डूंगरगढ़ ने की। कार्यक्रम में पीईईओ ऊपनी के समस्त शिक्षण संस्थाओं ने भाग लिया तथा रंगारंग प्रस्तुतियाँ दी साथ ही इस अवसर पर विद्यालय के भामाशाहों का सम्मान किया गया तथा विशिष्ट क्षेत्र से जुड़े छात्रों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। विद्यालय प्राचार्य श्री अनुराग सक्सेना एवं स्टाफ द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय को श्री रामनारायण गोदारा अध्यापक द्वारा 31,000 रुपए, श्री रामेश्वरलाल गोदारा सरपंच ऊपनी द्वारा 21,000 रुपए, नौरंगनाथ सिद्ध द्वारा 11,000 रूपए एवं अन्य भामाशाहों द्वारा भी विभिन्न कार्यो के लिए लगभग 50,000 रुपए का सहयोग प्राप्त हुआ। विद्यालय को आदूनाथ एवं खेतनाथ द्वारा भेंट किए गए वाटर–कूलर का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन व्याख्याता श्री विकासचन्द्र द्वारा किया गया। सर्व श्री रामनारायण गोदारा, विद्याधर सीगड़, ओमप्रकाश गोदारा, अभिषेक खत्री, महेश कुमार, हरिओम मीणा, सुनिल मीणा, गोपाल मीणा, सुप्यार कुलरिया, मोनिका स्वामी एवं समस्त विद्यालय एवं पीईईओ स्टाफ ने कार्यक्रम में सहयोग किया।

दौसा-वार्षिकोत्सव व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

दौसा– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चांदराना का वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह 2020 का अयोजन 22.2.20 को विद्यालय परिसर में किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि श्री कालूराम शर्मा, विशिष्ट अतिथि श्री शंभुदययाल सैन, प्रधानाचार्य बापी श्रीमती रानी गोठवाल, प्रधानाचार्य बोरादा श्री कमलेश मीना, प्रधानायापक मालपुरिया श्री प्रवीण शर्मा, श्री जगदीश नारायण गुर्जर (प्रधान) श्री सुशील जैन, श्री रमेशचन्द्र सैनी, श्री रामदेव बैरवा, श्री ज्ञानचन्द जैन, श्री अमरसिंह शेखावत, श्री बनवारी लाल पटेल, श्री जगदीश नारायण गौतम रहे। अध्यक्षता श्री कैलाशचन्द्र मीना ने की। समारोह कें आरम्भ में सरस्वती प्रतीमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर अतिथियों के स्वागत सत्कार शाल परिवार द्वारा माल्यार्पण व स्मृति चिह्न भेंट कर किया गया। अधीनस्थ विद्यालयों के विद्यार्थियों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर भारतीय संविधान एवं संस्कृति की जानकारी दी गई। बोर्ड परिक्षाओं में श्रेष्ठ रहे प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थियों, खेलकूद के श्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर सचिन कुमार खटाणा को तथा वार्षिकोत्सव के प्रतिभागियों को अतिथियों द्वारा स्मृति चिह्न देकर पुरस्कृत किया गया।

विद्यालय में सर्वोदय-2020 का हुआ आयोजन

बीकानेर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सर्वोदय बस्ती, बीकानेर में दिनांक 29.2.20 को वार्षिकोत्सव : सर्वोदय–2020 व भामाशाह सम्मान समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि डॉ. बुलाकीदास कल्ला, केबिनेट मंत्री राजस्थान सरकार जयपुर, विशिष्ट

अतिथि श्री जावेद पडिहार पार्षद वार्ड नं. 55 उपस्थित रहे। इस अवसर पर समस्त शाला स्टॉफ द्वारा 50,000/–रुपए, नौशाल अली कादरी वरिष्ठ अध्यापक उर्दू द्वारा 30,000/–रुपए इस प्रकार कुल 80 हजार रुपये की लागत से निर्मित विद्यालय में भण्डार कक्ष का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। विद्यालय के वरिष्ठ लिपिक श्री सत्येन्द्र विश्नोई द्वारा 2,500/–रुपए की कम्प्यूटर टेबल विद्यालय को भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन श्री अशोक कुमार व्यास, व. शा. शिक्षक द्वारा किया गया। वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि श्री बी.डी. कल्ला द्वारा श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने वाले शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं भामाशाहों को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर मंच से सम्मानित किया गया।

शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा सम्मान समारोह आयोजित

बाड़मेर–पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सुनीता मीणा अध्यापिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय वार्ड सं 14 जोगी बस्ती, बालोतरा के अंग्रेजी विषय में द्वितीय श्रेणी में चयन होने पर पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने गुलदस्ता भेंट कर तथा इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर हिना ने माला पहनाकर बहूमान किया। अध्यापिका ने अपने विद्यालय में नामांकन वृद्धि, विद्यालय में भौतिक सुविधाएँ बढ़ाने, लाइट, पानी आदि की सुविधा भामाशाह को प्रेरित करके पूर्ण की तथा बालक बालिकाओं को पूर्ण मनोयोग से अध्ययन करवाने में अहम भूमिका अदा की है। इस अवसर पर परिहार ने कहा कि अध्यापिका सुनीता मीणा ने अपने कार्यकाल के दौरान अभिभावकों एवं भामाशाह से संपर्क कर विद्यालय में समय–समय पर विभिन्न शैक्षिक एवं सह शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन कर उत्कृष्ट कार्य किया है। ऐसी प्रतिभाशाली अध्यापिका का चयन द्वितीय श्रेणी अंग्रेजी विषय के पद पर होने पर बालक बालिकाओं एवं अभिभावकों में खुशी की लहर है। इस अवसर पर गंगा परिहार, समाजसेवी चाँदनी देवी सहित गणमान्य लोगों ने भी मालाओं से सम्मान किया।

संकलन–प्रकाशन सहायक

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

स्पेसएक्स के यात्री अंतरिक्ष स्टेशन के साथ जुड़े

फ्लोरिडा– एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स ने शनिवार देर रात नासा के दो अंतरिक्ष यात्रियों को सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में भेज दिया था। इसके बाद रॉकेट यान का ड्रेगन कैप्सूल रविवार को सही सलामत अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से जुड़ गया। स्पेसएक्स कंपनी ने एक वीडियो ट्वीट करके यह जानकारी दी। इस सफलता को सस्ती अंतरिक्ष यात्रा के क्षेत्र में नए अध्याय की शुरूआत माना जा रहा है। क्योंकि स्पेसएक्स ने उड़ान का खर्च पिछले के मुकाबले 85 फीसदी कम किया। इस प्रक्षेपण के साथ ही स्पेसएक्स पहली निजी कम्पनी बन गई है, जिसने मनुष्य को अंतरिक्ष में भेजने की क्षमता हासिल की है। इससे पहले केवल तीन सरकारों-अमेरिका, रूस और चीन को यह उपलब्धि हासिल है। नासा अब केवल स्पेसएक्स के रॉकेट का इस्तेमाल ही अपने सभी अंतरिक्ष अभियान के लिए करेगा।

समुद्र बचाने को 26 अरब रुपये की लैब

वाशिंगटन– नॉर्वे के अरबपति केजल ईग ने 28 करोड पाउंड की लागत से एक आलीशान सुपरवाट का निर्माण किया है। यह दुनिया की सबसे बड़ी याट है और इसका नाम रेव ओशन है। इसका उपयोग वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए किया जाएगा। इसमें अत्याधुनिक उपकरण लगे हैं, जिनका इस्तेमाल समुद्री जीवों के अनुसंधान में किया जाएगा। इसका उद्देश्य समुद्री जीवन को बचाना है। नमूने इकट्ठा करके उनका सर्वेक्षण करने के लिए याट में एक रोबोट भी है। रेव ओशन नाम का यह जहाज एक मील रास्ता तय करने में 25 लीटर डीजल की खपत करता है। बिना डीजल यह 120 दिन आराम से समुद्र में रह सकता है और दूर-दूराज हिस्सों पर आसानी से पहुँच सकता है, जो निश्चित रूप से इसे आदर्श बनाता है।

एटीएम को बिना छुए रकम निकासी की हो रही तैयारी

नई दिल्ली– पैसा निकालने के लिए लोग बैंक की बजाय एटीएम को तरजीह देते हैं। लेकिन कोरोना संकट के दौर में लोग एटीएम जाने से डर रहे हैं। वहीं दुकानदार नकद लेने या कार्ड को स्वाइप करने में डर रहे हैं। इसे देखते हुए बैंक कॉन्टैक्टलेस एटीएम लाने की तैयारी कर रहे हैं। एसबीआई और आईसीआईसीआई बैंक ने परीक्षण स्तर पर इसकी शुरूआत कर दी है। सूत्रों का कहना है कि करीब आधा दर्जन बैंक इस तकनीक वाले एटीएम लाने की तैयारी कर रहे हैं। कॉन्टैक्टलेस एटीएम में ग्राहक को स्क्रीन पर क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए बैंक के स्मार्टफोन एप का इस्तेमाल करना होगा। इसके बाद वह अपने मोबाइल पर निकाली जाने वाली राशि और एटीएम पिन डालेगा। फिर मशीन को छुए बगैर नकदी निकाल सकेगा। इससे पहले बैंक ऑफ इंडिया ने इस तकनीक का परीक्षण किया था। उल्लेखनीय है कि इस साल जनवरी के मुकाबले एटीएम से लेनदेन की संख्या 67 करोड़ से घटकर 56 करोड़ रह गई।

दुनिया की सबसे बड़ी दूरबीन एलियन को खोजेगी

गुडझोऊ– चीन में निर्मित दुनिया का सबसे बड़ा सिंगल अपर्चर रेडियो टेलीस्कोप ब्रह्मांड में मौजूद जीवन योग्य ग्रहों को तलाशेगा। यह सितंबर से एलियनों के संकेत स्कैन करना शुरू कर देगा। इस दूरबीन का इस्तेमाल रिसर्च कार्यों के लिए होगा। इसकी संवेदनशीलता दुनिया के दूसरे सबसे बड़े दूरबीन एरीसिबो ऑब्जेवेटरी के मुकाबले तीन से पाँच गुना तक है। एलियन जीवन को खोजने के साथ-साथ दूरबीन ब्रह्मांड सम्बन्धी घटनाओं का अध्ययन करेगी और इससे संबंधित आँकड़ों को इकट्ठा करेगी। इसके जरिए पल्सर, ब्लैक होल, गैस के बादल और अन्य आकाश गंगाओं की जानकारी जुटाई जा सकेगी।

कोरोना संकट से वैश्विक अर्थव्यवस्था में दिखेंगे ये छह बड़े बदलाव

नई दिल्ली– कोरोना संकट का स्पष्ट प्रभाव समूची दुनिया में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक उथल-पुथल के रूप में नजर आ रहा है। इससे भारत भी अछूता नहीं है। भारतीय अर्थव्यवस्था में भी आने वाले समय में इस महामारी के चलते बड़े बदलाव आपको दिखाई देंगे। आइए एक नजर डालते हैं। उन छह बड़े बदलाव पर जो कोरोना महामारी के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ भारत में दिखाई देंगे।

1. जीडीपी की नकारात्मक वृद्धि : दुनिया समेत भारत की वृद्धि चालू वित्त वर्ष में नकारात्मक रहने की आशंका है। ब्लूमबर्ग के अनुसार, 2020 में दुनिया की अर्थव्यवस्था में 4 फीसदी का संकुचन आ सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार भारत की जीडीपी वृद्धि भी नकारात्मक रहेगी।

2. बेरोजगारी तेजी से बढ़ेगी : पूरी दुनिया में तेजी से बेरोजगारी बढ़ेगी। आईएमएफ के अनुसार अमेरिका में बेरोजगारी की दर 10% से अधिक होगी। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के मुताबिक 31 मई को खत्म हुए सप्ताह में भारत की बेरोजगारी दर 23.48% हो गई थी।

3. इंसानों की जगह रोबोट लेंगे : दुनिया में तेजी से रोबोट का उदय होगा। विश्लेषकों का मानना है कि कई तरह की नौकरियों में अब रोबोट इंसानों की जगह लेने जा रहे हैं। सभी कम्पनियां सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने के लिए रोबोट्स का इस्तेमाल करेगी।

4. महिला कर्मियों पर बहुत बुरा असर होने की आशंका : कोरोना का महिला आबादी पर बुरा असर होने जा रहा है। असंगठित क्षेत्र में करीब 53 फीसदी महिला कर्मी काम करती है। इस सेक्टर में सबसे अधिक लोग बेरोजगार हुए हैं। विकासशील देशों में करीब 61 फीसदी महिला कर्मी इस महामारी के चलते प्रभावित होगी।

5. माँग में आएगी गिरावटः कोरोना महामारी से आम इंसान की सोच में बड़ा बदलाव आया है। इसका असर कोरोना खत्म होने के बाद भी उसके खर्च पैटर्न पर देखने को मिल सकता है। इसका असर कोरोना के बाद माँग बढ़ने पर होगा। कोरोना संकट से डरे आम लोग में बचत की प्रवृत्ति बढ़ेगी। इससे दुनिया की अर्थव्यवस्था में मांग आने वाले समय में बढ़ना बड़ी चुनौती होगा।

6. विकासशील देश महाशक्ति होंगेः सेवा फर्म प्राइस वाटरहाउस कूपर्स की रिपोर्ट 'दि वर्ल्ड इन 2050' के मुताबिक 30 वर्ष बाद विश्व की सात बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में छह आज की उभरती अर्थव्यवस्थाएँ होगी। वियतनाम, फिलीपींस और नाइजीरिया जैसे विकासशील देश अगले तीन दशकों में लंबी छलांग लगाएँगे। भारत को इसका बड़ा फायदा मिलेगा। विदेशी कम्पनियाँ चीन से निकलकर भारत आएगी।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

नागौर

रा.उ.मा.वि. चून्दियाँ, रियांबड़ी में श्री श्याम सुन्दर कमेड़िया द्वारा मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना के तहत 3,75,000 रुपये की लागत से एक हॉल का निर्माण करवाया गया, इसी योजना के तहत श्रीमती सुगन कँवर पत्नी श्री प्रेमसिंह हाड़ा द्वारा 3,75,000 रुपये की लागत से एक हॉल का निर्माण करवाया गया। श्री हम्मीर राम बड़ियासर द्वारा एक प्याऊ का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 2,01,000 रुपये, श्री छोटूराम खन्दौलिया द्वारा माँ सरस्वती के मन्दिर का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,01,000 रुपये, श्री कचरूराम फगौड़िया द्वारा 1,11,000 रुपये की लागत से एक कमरे का निर्माण करवाया गया।

श्री गंगानगर

रा.मा.वि. भुट्टीवाला, तह. श्रीकरणपुर में श्री सुरजीत सिंह द्वारा 2,50,000 रुपये की लागत से एक कमरा मय बरामदा का निर्माण करवाया गया, श्रीमती परमजीत कौर (अ. L-II) ने अपनी सेवानिवृत्ति पर एक लोहे की अलमारी विद्यालय को सप्रेम भेंट की जिसकी लागत 9,000 रुपये, श्री राजकुमार (अ-L-I)द्वारा एक LED 40", Smart T.V., 10 सैट बैंच, पर्दे, मैट ग्रीन विद्यालय को सप्रेम भेंट की जिनकी लागत 51,100 रुपये, विद्यालय के समस्त स्टाफ द्वारा एक मोटर+फिटिंग विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 7,000 रुपये।

बीकानेर

रा.उ.मा.वि. सर्वोदय बस्ती में समस्त शाला स्टाफ द्वारा 50,000 रुपये व श्री नौशाद अली कादरी (व.अ.) द्वारा 30,000 रुपये अर्थात 80,000 रुपये की लागत से विद्यालय में भण्डार कक्ष का निर्माण करवाया गया, विद्यालय के वरिष्ठ लिपिक श्री सत्येन्द्र विश्नोई से एक कम्प्यूटर टेबल प्राप्त जिसकी लागत 2,500 रुपये। **रा.उ.मा.वि. बिरमसर (नोखा)** को श्री आसूराम दर्जी (अध्यापक) से एक लोहे की अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री सीताराम तंवर (पुस्तकालयाध्यक्ष) से एक लोहे की अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 13,000 रुपये, श्री धन्नाराम गोदारा (अध्यापक) से 5,100 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से प्राप्त हुए।

कोटा

रा.उ.मा.वि. अरनिया कलां को श्री धनराज गुर्जर (प्रधानाचार्य) स्थानीय विद्यालय को 5,100 रुपये का अनुदान दिया, श्री भैरू लाल नागर द्वारा 13,000 रुपये की राशि से जर्सी व कोटा स्टोन का पत्थर स्थानीय विद्यालय को दान स्वरूप भेंट। **रा.मा.वि. खजूरी (ओदपुर) ब्लॉक सांगोद** में श्री रमेश चन्द्र नागर (प्रधानाध्यापक) व SDMC ने विद्यालय क्रमोन्नत होने की खुशी में 10,00,000 रुपये अनुदान दिए। इस अनुदान राशि से कम्प्यूटर कक्ष का निर्माण जिसकी लागत 3 लाख रुपये, पुस्तकालय एवं वाचनालय निर्माण के लिए 2 लाख रुपये, विद्यालय भवन का पूर्ण प्लास्टर हेतु 2 लाख रुपये, कक्षा-कक्ष एवं बरामदा फर्श इत्यादि पर 2 लाख रुपये, बिजली फिटिंग एवं पंखे कम्प्यूटर कक्ष फर्नीचर एवं पुताई के कार्य में 01 लाख रुपये खर्च किए गए।

हनुमानगढ़

रा.मा.वि. नुवां तह. भादरा को श्री दाताराम सहू (व.अ.) से एक म्यूजिक सिस्टम Mp3, USB, BT, कार्ड लैस माइक तथा स्पीकर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 6,100 रुपये।

पाली

रा.उ.मा.वि. कोट किराना (रायपुर) में अजय पाल सिंह द्वारा 3,50,000 रुपये की लागत से विद्यालय प्रांगण में विशाल टीन शेड का निर्माण करवाया गया।

सिरोही

शाह गोमाजी दीपाजी रा.उ.मा.वि. मेर माण्डवाड़ा को श्री गुमान सिंह देवड़ा (सरपंच) ने विद्यालय में R.O. का प्लांट लगवाया जिसकी लागत 1,00,000 रुपये।

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि कांखी, पं.स. सिवाना को श्री गणेश सिंह परिहार से एक माइक सेट प्राप्त जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री पीराराम देवासी से एक माइक सेट प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, सर्वश्री मोहन लाल राजपुरोहित, पुरखाराम, राजूसिंह राजपुरोहित, देवासी, राजूराम माली प्रत्येक से 10 सेट टेबल-स्टूल प्राप्त तथा प्रत्येक की लागत 11,000-11,000 रुपये, सर्वश्री पेमाराम देवासी, सांवल सिंह, भंवरराम माली, रामाराम प्रजापत, मुकेश कुमार मिस्त्री, डूंगरा राम मेघवाल, मोहनराम मेघवाल, चम्पालाल मेघवाल, चम्पाराम सेन, हस्तीमल सुथार, नारायण सिंह, माल सिंह प्रत्येक से 5 सेट टेबल-स्टूल प्राप्त तथा प्रत्येक की लागत 5,500-5,500 रुपये, श्री मंगलाराम से 01 सेट टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 1,100 रुपये, श्री हवाराम माली से ऑफिस के लिए सोफा सेट प्राप्त जिसकी लागत 21,000 रुपये।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि. बारां खुर्द, पं.स. औसियाँ में हरिराम सुथार द्वारा चार दिवारी के तारबंदी एवं रैलिंग का कार्य करवाया गया जिसकी लागत 45,000 रुपये, श्री भवानी सिंह भाटी (उद्यमी एवं समाजसेवी) द्वारा 30 लोहे के सेट टेबल-स्टूल विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 45,000 रुपये, 12वीं के समस्त छात्रों द्वारा 25 लोहे के स्टूल विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्री नाथाराम (अध्यापक) से 5 सेट लोहे के टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 7,500 रुपये, श्री मूलाराम तरड़ से 5 सेट लोहे के टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 7,500 रुपये, वार्षिकोत्सव में साफे, मालाएँ, साज-सज्जा टेन्ट आदि में विभिन्न व्यवस्थाओं में निम्नानुसार सहयोग रहा- श्री मोहनराम तरड़ से 11,000 रुपये, श्री भवानी सिंह भाटी (समाज सेवी) से 5,100 रुपये, श्री पनाराम से 2,100 रुपये, सर्वश्री आसूराम गोरचिया, सूबेदार गिरधारी राम गोरचिया, पेमाराम बैरड़, गोरधन सिंह (शा.शि.) प्रत्येक से 1,100-1,100 रुपये प्राप्त सर्वश्री भागीरथ राम गोरचिया, रामूराम अध्यापक, थानाराम बाना, पुखराज, अणद सिंह, चन्द्र सिंह, भूराराम मेघवाल, मूलाराम तरड़, धन्नाराम तरड़, घमण्डाराम तरड़, भरत सिंह भाटी प्रत्येक से 500-500 रुपये प्राप्त हुए।

चूरू

रा.उ.मा.वि. पिचकराई ताल को गणतंत्र दिवस 2020 वार्षिकोत्सव व पूर्व विद्यार्थी सम्मान समारोह के दौरान प्राप्त राशि व सहयोग का विवरण निम्नानुसार है- सर्वश्री शिव भगवान भाकर, डॉ. कन्हैयालाल सिंवर, इन्द्राज प्रत्येक से 21,000-21,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री गोपीराम (अध्यापक) से 37,500 रुपये नकद प्राप्त, विद्यालय स्टाफ से 51,600 रुपये नकद प्राप्त हुए।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि. ओझियाणा तह. आसीन्द को श्री लक्ष्मण सिंह सोनी से एक वाटर कूलर जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री बलदेव गुर्जर से 86 ऊनी स्वेटर, जिसकी लागत 17,200 रुपये तथा 21,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री औंकार सिंह रावत व श्री नेपाल सिंह रावत प्रत्येक से 11,000-11,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री पप्पू सिंह रावत (उस्ताद) द्वारा सात छात्रों को प्रोत्साहन राशि 7,700 रुपये नकद (अर्थात प्रत्येक छात्र को 1,100 रुपये) श्री फूलचन्द भाँबी (व.अ.) द्वारा छात्रों को प्रोत्साहन राशि 5,000 रुपये नकद, श्री नारायण सिंह रावत द्वारा मुख्य द्वार का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 51,000 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जुलाई, 2020 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : जुलाई, 2020

शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा को मुख्यमंत्री सहायता कोष में 2.5 लाख रुपए का चैक भेंट करते हुए श्री मांगेलाल बुडानिया (सेनि.जिशिअ.) श्री सुमेरसिंह और डॉ. रणवीर सिंह विशेषाधिकारी शिक्षा।

श्री सौरभ स्वामी IAS निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान को राष्ट्रीय सेवा योजना के बीकानेर जिला समन्वयक श्री सुनील कुमार बोड़ा एवं साथी मास्क भेंट करते हुए।

राउमावि कुंचोली, स्थानीय संघ कुम्भलगढ़ के स्काउट्स ने लॉकडाउन में तैयार किए 500 मास्क सरपंच श्रीमती निर्मला देवी भील को सुपुर्द किए।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय दादावाड़ी शिवगंज (सिरोही) में सेवानिवृत्त अध्यापिका श्रीमती निशा मंगल द्वारा स्काउट्स को नि:शुल्क गणवेश वितरित की गई।

कोविड-19 गाइडलाइन की जानकारी पोस्टर के माध्यम से देते हुए राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, लक्ष्मण मैदान, डूंगरपुर के स्काउट गाइड ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पलाना, बीकानेर में विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों ने शाला परिसर में पौधारोपण किया।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22

शिविरा पत्रिका (मासिक) • जुलाई, 2020
प्रकाशन तिथि : 2 जुलाई, 2020 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5–6 तारीख

समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

CORONAVIRUS
(COVID-19)

अपने और दूसरों के बचाव के लिए
क्या करें क्या ना करें

करें ✔

बार–बार अपने हाथों को साबुन और पानी से धोएं।

डिस्पोजेबल टिश्यू या रुमाल के साथ अपनी नाक और मुँह को कवर करें।

इस्तेमाल के तुरंत बाद नैपकिन या टिशु पेपर को कवर कचरे के डिब्बे में फेंके।

भीड़–भाड़ या सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचें, इन जगहों के स्पर्श में आने पर अपने हाथों को सेनिटाइज करें।

अगर आपको सर्दी, खाँसी, बुखार या इन्फ्लुएंजा जैसे लक्षण हैं तो जल्द से जल्द डाक्टर से परामर्श लें। डाक्टर से बात करते समय मास्क या कपड़े से मुँह को कवर करें।

ना करें ⓧ

अगर आपको खाँसी और बुखार का अनुभव हो रहा है तो किसी अन्य व्यक्ति के साथ निकट संपर्क न रखें।

अपने आँख, नाक और मुँह को हाथों से न छुएं।

सार्वजनिक स्थानों पर न थूकें।

Protect Yourself And Your Family

Wash Your Hands Regularly

हम सब साथ मिलकर कोनोनावायरस से लड़ सकते हैं

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : **वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर–334011**